भूमिका ।



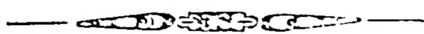
पाठक महाशयो ! इस विषयके अधिक विवेचनाकी आवश्यकता नहीं कि, इस समय संसारकी क्या अवस्था है जो है वह किसीसे भूलीहुई नहीं प्रायः आँख उठाकर देखतेही अपने कुकर्मसे दूषित शरीरवाले नवयुवकोंके झुंडही दिखाई पडतेहैं इन झुंडोंमें कुछ ऐसेभी होते हैं जो अपनी ऐसी रद्दी अवस्था होनेसे घरमें जाना मानो कालके मुखमें पड़ना समझतेहैं । कुछ ऐसे भी हैं जिनको स्वयं नपुंसक होनेके सबबसे अपने घरके दुश्चरित्र देखने पडतेहैं ऐसी दुःखव्यंजक अवस्थामें न जाने यह विचारे क्या २ सोचतेहोंगे सो भगवान् जाने परंतु कोई कोई मूर्ख महान् अनर्थभी कर बैठतेहैं जिसके फलसे इनका तो यह लोक और परलोक दूषित होताही है परंतु यह दुष्ट अपने मातापिता आदि कुटुंबियोंका जीवनभी कलंकित करजातेहैं इस दुःखसे बढकर इस समय भारतको क्या दुःख होसक्ताहै ऐसा विचारकर मुझे महान् खेद हुवाकरताथा दैवयोगसे सं० १९६५ के आरंभमेंही मैं अखिल भारतीय आयुर्वेदिक यूनीवर्सिटीके महोत्सवमें बंबईके निकट पनवेल गयाथा वहांपर परमोदारचरित शास्त्रोद्धारक वैश्यकुलभूषण श्रीयुत-सेठ खेमराजजीसे भेट हुई और कुछ इस विषयकी चर्चा चली और लोगोंकी व्यवस्था तथा उनका झूठे सच्चे इश्तिहारोंसे लूटना आदि विशेष विवेचन होनेके अनंतर श्रीयुक्त सेठजीने इस विषयका कोई उत्तम ग्रंथ बनाकर भेजिये" ऐसी इच्छा प्रगटकी मैं पहलेहीसे ऐसा ग्रंथ लिखना चाहाताभी था सो श्रीयुक्त सेठजीके कहनेसे मानो सोतीहुई इच्छा इस पुस्तकके बनानेको एकदम उठखडी हुई मैंने घर आनेपर अवकाश पाकर यह **नपुंसकामृतार्णव** नामक ग्रंथ नव तरंगोंमें लिखकर आधुनिकलोगोंके कल्याणके लिये श्रीमान् शास्त्रोद्धारक सेठजीके प्रति समर्पण किया और सेठजीनेभी निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें छापकर सबके कल्याणके लिये प्रसिद्ध किया । आशा है सद्गुणग्राही इसग्रंथसे स्वयं लाभ उठाकर औरोंकोभी शिक्षा देंगे

आपका शुभचिंतक-

रामप्रसाद उपाध्याय

मु०-टकसाल, रियासत पटियाला.

अथ नपुंसकामृतार्णवग्रंथस्थविषयानुक्रमणिका।



अथ तृतीयस्तरंगः।

अथ चतुर्थस्तरंगः।

अथ पञ्चमस्तरंगः।

इति नपुंसकामृतार्णवस्थितविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरवे नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

नपुंसकामृतार्णवः ।

भाषाटीकासमेतः ।

प्रारभ्यते ।

(मंगलाचरणम्-)

विलोलद्वीचिसंयुक्ता दुःखत्रयविनाशिनी ॥
राजते ह्यापगा यस्य शशिशोभितमस्तके ॥ १ ॥
गिरिजा यस्य वामांगे सपुत्रा च विराजते ॥
भस्मोद्धूलितदेहाय नमस्तस्मै पिनाकिने ॥ २ ॥

दोहा ।

चपल वीचि युत आपगा, करहि दुःखत्रयनाश ॥
शशि शोभित मस्तक विषे, रही निरंतर भास ॥ १ ॥
गणनायकको अंक ले, गिरिजा वामाधार ॥
भस्म लिप्त तनु देवको, नमः है वारंवार ॥ २ ॥

ग्रंथारंभः ।

पुंस्त्ववृद्धिकरं चैव पंडादिदोषनाशनम् ॥
संतत्यादिसुखकरमायुरारोग्यदं तथा ॥ १ ॥
तरंगैरष्टभिः शुद्धैर्नपुंसकामृतार्णवम् ॥
अनुभवकृतैर्योगैस्तथैव शास्त्रसंमतैः ॥ २ ॥

निबध्नामि नियोगाच्च सतां लोकहितैषिणाम् ॥
वैद्यो रामप्रसादोहं दृष्ट्वा लोकस्य संस्थितिम् ॥ ३ ॥

संसारके हित चाहनेवाले श्रेष्ठ पुरुषोंकी आज्ञासे तथा इस समय लोककी अवस्था देखकर रामप्रसादनामक वैद्य मैं इस "नपुंसकामृतार्णव" ग्रंथको शास्त्र संमत अनुभव किये हुवे योगोंसे निबंधन करताहूं अर्थात् ग्रंथरूपसे लिखताहूं । सो यह नपुंसकामृतार्णव (नपुंसकोंके लिये अमृतका समुद्र) सुंदर शुद्ध आठ तरंगोंसे युक्त होगा । और पुरुषार्थका बढ़ानेवाला तथा षंड (नपुंसक) आदि दोषोंका हरने वाला, और संतानआदिसुखका करनेवाला, आयु तथा आरोग्यताका देनेवाला होगा ॥ १-३ ॥

शरीरे सर्वधातूनां सारं वीर्यं प्रकीर्तितम् ॥
तदेव चौजस्तेजश्च बलं कांतिः पराक्रमः ॥ ४ ॥
यस्मिञ्छुद्धे शरीरस्य गतिः शुद्धा भवेत्सदा ॥
ब्रह्मचर्यदशायां हि क्षीणे क्षीणपराक्रमः ॥ ५ ॥
धैर्यतेजोविरहितः रोगग्रस्तकलेवरः ॥
सारहीनं यथा वस्तु तथैव स नरः स्मृतः ॥ ६ ॥

शरीरमें सब धातुवोंका सारभूत वीर्यही कहाजाताहै, वही वीर्य "ओज, तेज, बल, कांति और पराक्रम रूपसे शरीरमें है जिसके शुद्ध होनेसे शरीरकी गति सर्वदा सबतरहसे शुद्ध रहती है, ब्रह्मचर्य अवस्थामें वीर्यके क्षीण होनेसे मनुष्य पराक्रम तथा धैर्य और तेजसे हीन होकर अनेक रोगोंसे युक्त शरीरवाला होता है । जैसे सारहीन पदार्थ व्यर्थ होता है वैसेही वीर्यसे विना पुरुषार्थ है ॥ ४-६ ॥

अन्यैरपिमहारोगैर्नरः क्लीबत्वमाप्नुयात् ॥
मातृपितृजदोषाच्च तथा दैवप्रभावतः ॥ ७ ॥

परं च बहवो लोके दुःखिता निजदोषतः ॥
ब्रह्मचर्यविहीनास्ते स्वयं क्लीबत्वमागताः ॥ ८ ॥

औरभी बहुतसी महाव्याधियों से मनुष्य नपुंसकताको प्राप्त होताहै तथा मातापिताके रजवीर्य संबंधी विकारोसे मनुष्यको नपुंसकता होती है। और पूर्व जन्मके पापोके सबबसे भी असाध्य नपुंसक होतेहैं ॥ ७ ॥ परंतु इस समय अधिकतर मनुष्य ब्रह्मचर्यसे विहीन होकर अपनेही कुकर्मों के फलसे नपुंसकताको प्राप्त होकर दुःख भोग रहेहैं ॥ ८ ॥

शिष्य उवाच ।

आश्चर्यमिदमत्यंतं दृष्ट्वा लोकस्य संस्थितिम् ॥
निवृत्तिर्दृश्यते नित्यं धर्मात्कर्माद्दयात्तथा ॥ ९ ॥
सत्ययोगतपोभ्यश्च ब्रह्मचर्याद्विशेषतः ॥
शमो दमस्तु कुत्रास्ति विवेकोपि गतः स्वयम् ॥ १० ॥
प्रवृत्तिर्मैथुने कामे सदा सर्वत्र दृश्यते ॥
दुःखितापि भृशं नाथ परदाराभिमर्षणात् ॥ ११ ॥
उपदंशप्रमेहादीन्प्राप्य वेश्याप्रभावतः ॥
नपुंसकत्वं संप्राप्य अयोनिमैथुनात्तथा ॥ १२ ॥
हतदृष्टिरुजातांश्च पश्यन्तोपि हि तत्फलम् ॥
न ते पापान्निवर्तंते न तान्दृष्ट्वा जनाः स्वयम् ॥
कारणं चात्र किं नाथ कृपया वद मे प्रभो ॥ १३ ॥

हाथ जोडकर शिष्य कहने लगे। हे गुरो इस समय संसार की अवस्था देखकर अत्यंत आश्चर्य होता है, प्रायः मैं जिधर देखताहूं सब मनुष्योंकी प्रवृत्ति धर्मादिकोमे नहीं है। बल्कि धर्मसे दयासे कर्मकांण्डसे तथा सत्य से और योग तप आदिसे निवृत्ति ही दिखाई देतीहै। खासकर ब्रह्मचर्य तो नष्टप्रायसा प्रतीत होने लगा। मनमें शांतभाव और इंद्रियोंका दमन तो कहाँथा परंतु विवेक भी मानो भारतकोही छोडभागा। हे नाथ

इस समय जिधर देखाजाय प्रायः सबकी प्रवृत्ति संसारकी विषयवासनासे भरीहुई है । और ऐसा विचित्र समय आया कि अनुचित मैथुनेच्छाकोही मनुष्य शरीरधारणका मुख्य कर्तव्य समझने लगे । हे गुरो ! यद्यपि इन कुकर्मियोंको परस्त्रीगमनसे अनेक दुःसह दुःखोंसे सामना करना पडताहै, और वेश्यागमन आदिसे आतसक सोजाक आदि दारुण रोगोंकी करड़ी जेलकी सेवा सदाके लिये करनी पडतीहै । तथा अयोनिमैथुन (हस्तमैथुन व गुदमैथुन) से नपुंसकताको प्राप्त होकर अनेक दुःसह रोगोंकी जंजीरसे जकड़ेजातेहैं बल्कि इन विचारोंकी दृष्टि, बल, बुद्धि, शरीर इन विषयोंकी भेटही होलेतीहै । परंतु आश्चर्य यह है कि, अपने कुकर्मका फल देखकरभी न तो यह (रोगी) आपही इन महापापोंसे आगेको बचनेके लिये घृणा करतेहैं न इनको देखकर और मनुष्यभी बुरा समझतेहैं सो हे आयुर्वेदके ज्ञाता ! मुझपर कृपाकरके कहिये इस अनर्थका कारण क्याहै ॥ ९–१३ ॥

प्रश्नमेतादृशं श्रुत्वा सद्गुरुः शिष्यवत्सलः ॥
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना उवाच कृपया तदा ॥ १४ ॥

गुरुरुवाच ।

धन्य तात त्वया चाद्य प्रश्न एतादृशः कृतः ॥
विद्याबलं समासाद्य दीर्घायुं प्राप्स्यसि भृशम् ॥ १५ ॥
कारणं यत्त्वया पृष्टं लोकानुग्रहकांक्षया ॥
तदहं संप्रवक्ष्यामि श्रूयतां शिष्यसत्तम ॥ १६ ॥

इस प्रश्नको सुनकर शिष्यके प्यारे सद्गुरु बड़े प्रसन्न हुये मुखकी कांति उज्ज्वल हो उठी मनमें आनंद हुवा, फिर कृपाकरके शिष्यको कहने लगे हे पुत्र ! तुमको धन्य है तुमने बहुतही अच्छा प्रश्न कियाहै तुम विद्याबलसंपन्न होकर दीर्घायु होगे सांसारिक मनुष्योंपर कृपा करनेकी इच्छासे इस समयकी कुकर्मजनित अवस्थाका जो कारण पूछा है वह सुनाताहूं, सो हे श्रेष्ठ शिष्य ! सावधान होकर सुनो ॥ १४–१६ ॥

सर्वदेवमयो राजा नेता लोकस्य दर्शितम् ॥
तस्मिन्धर्मरते लोके प्रजा धर्मपरायणा ॥ १७ ॥
राज्ञि पापरते नित्यं प्रजा पापरता भवेत् ॥
यत्र राजा स्वार्थपरो प्रजापीडनतत्परः ॥ १८ ॥
तत्र प्रजा भवेत्सर्वा शिश्नोदरपरायणा ॥
जातिधर्मो न तत्रास्ति कुलधर्मो न विद्यते ॥ १९ ॥
पितरौ च तदा पुत्रानज्ञानात्पालयंति हि ॥
स्वधर्मोज्ञाध्यापयंति यतो मूर्खाः स्वयं हि ते ॥ २० ॥
द्विजाश्च नित्यं सस्तुता गच्छंति नर्तनादिषु ॥
बालोपि पितरं पश्यन् वेश्यया सह मोदते ॥ २१ ॥
अभ्यासं पितृजं प्राप्य तस्मिन्नेव रतः सदा ॥
मद्यादीन् विषयान् प्राप्य हृतधर्मपराक्रमः ॥ २२ ॥
स्वधर्मं नैव जानाति यतः शिक्षा न विद्यते ॥
नानादुःखान्यपि पश्यन् नेच्छंति ते निवर्तितुम् ॥ २३ ॥
एवं रुजार्दिता एते न लभंते प्रतिक्रियाम् ॥
राजा च जनकश्चैव कारणानि इमे स्वयम् ॥ २४ ॥

शास्त्रोंमें लिखा है कि परमात्माने सब देवताओंकी शक्तियोंसे राजा बनाया है । इसीलिये राजा संसारका नेता होता है । यदि यह राजा धर्मात्मा हो तो सब प्रजाभी धर्म परायण होतीहै । यदि राजा पापमें लीन हो तो प्रजाभी वैसीही होजातीहै । जिसजगे राजा स्वार्थपर होकर प्रजाको पीडनकरनेवाला होताहै उस राजाकी प्रजा तमाम शिश्नोदर परायण होजातीहै । जातिका व कुलका धर्म तथा वर्णव्यवस्था नष्ट होजाती है । उस समय माता पिता अपनी संतानके उचित संस्कार न कराकर

अज्ञानसे पालन करतेहैं और अपनी जातीके अनुकूल धर्मकी शिक्षा नहीं देते क्योंकि वह विचारे स्वयंही धर्मके विषयमें मूर्ख होतेहैं ॥ फिर वर्णोचित शिक्षा न होनेसे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य भी अपने पुत्रोंको गोदमें लेकर वेश्याके नाचमें बैठकर वेश्याओंसे अनुचित हास्य करतेहैं । बालक भी अपने पिताको वेश्यासे हास्य करते देख कर स्वयं उसकाम में प्रवृत्त होते हैं । अपने पितासे प्राप्त हुए अभ्यास मे ही रत रहते हैं फिर जवान होनेपर मद्य पीकर वेश्यागमन आदि कुकर्मको अपना मुख्य कर्तव्य मानने लगते हैं अपने धर्म पराक्रम आदिको उसीमे नष्ट कर डालते हैं क्योंकि इन विचारोंको धर्मकी शिक्षाही नहीं दीगई । इस लिये यह अपने धर्मको जानते ही नहीं, अपने कुकर्मसे अनेक दुःख भोगते हुवे भी वह उनसे हटना नहीं जानते । सो हे शिष्यसत्तम ! संसारमें इस अनर्थका कारण एक तो राजा, दूसरा माता पिता, तीसरे यह विचारे स्वयं आपही हैं ॥ १७-२४ ॥

यज्ञो वै ब्रह्मचर्यं हि यतः पुरुषार्थसाधनः ॥
ब्रह्मचर्यप्रभावेण नरः प्राप्नोति गौरवम् ॥ २५ ॥
ब्रह्मचर्यं शरीरस्य साधनं परमं मतम् ॥
ब्रह्मचर्यविहीनानां जीवनं हि निरर्थकम् ॥ २६ ॥

हे तात, ब्रह्मचर्यही परम यज्ञ है क्यों कि ब्रह्मचर्यके विना मनुष्य [illegible] पुरुषार्थका साधन नहीं करसक्ता ॥ ब्रह्मचर्यके प्रभावसे मनुष्य [illegible]को प्राप्त हो सक्ताहै ॥ २५ ॥ ब्रह्मचर्यही शरीरका परम साधन । ब्रह्मचर्यके विना मनुष्यका जीवन ही निरर्थक है ॥ २५-२६ ॥

शिष्य उवाच ।

ब्रह्मचर्यविहीनानां स्वेच्छया च विहारिणाम् ॥
के रोगा विघ्नकर्तारः कां गतिं प्राप्नुवंति ते ॥ २७ ॥

शिष्य बोले हे गुरो ! जो मनुष्य अपनी इच्छानुसार विहार करके ब्रह्मचर्यको खो बैठे उनकी शरीरयात्रामें विघ्न डालनेवाले कौन २ से रोग होतेहैं और उन ब्रह्मचर्यविहीन पुरुषोकी क्या गति होतीहै ॥ २७ ॥

गुरुरुवाच ।

पंचविंशतिपर्यंतं विंशतिन्तु विशेषतः ॥
ब्रह्मचर्यं न चरति ज्ञात्वा वाऽज्ञानतः पुमान् ॥ २८ ॥
गतिं तस्य प्रवक्षामि लोकद्वयभयावहाम् ॥
ब्रह्मचर्यविहीनत्वाद्रोगग्रस्तकलेवरः ॥ २९ ॥
इहाऽऽमुष्मिककार्येषु ह्यसमर्थतनुर्भवेत् ॥
मेहक्लीबादिभी रोगैर्दुःखितो विमनाः सदा ॥ ३० ॥

गुरु कहने लगे हे तात ! पच्चीसवर्षतक ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहिये । और वीसवर्षतक तो अवश्य ही ब्रह्मचारी रहना चाहिये । यदि इस प्रथमावस्थामें मनुष्य ज्ञानसे अथवा अज्ञानसे ब्रह्मचर्यका पालन नही करते उनकी गति जो इसलोक और परलोकमें भयकारकहै उसका कथन करता हूं ब्रह्मचर्यके न होनेसे उन मनुष्योंका शरीर रोगोंसे ग्रसा हुवा होता है और इसलोक और परलोकके सव कामोंमे असमर्थ होतेहै प्रमेह और नपुंसक आदि रोगोंसे दुःखित होकर मनमें सदा दुःखितही रहते हैं ॥ २८-३० ॥

शिष्य उवाच ।

क्लीबत्वं कतिधा नृणां दुःसहं दुःखदायकम् ॥
कैः कारणैर्भवति तद्वद नो भिषजां वर ॥ ३१ ॥

शिष्य कहने लगे हे गुरो ! मनुष्योंको दुःसह दुःखके देनेवाली नपुंसकता कितने प्रकारकी है और किन २ कारणोंसे यह वीमारी होतीहै । हे वैद्योंमें श्रेष्ठ ! कृपा करके मेरे पास कथन करो ॥ ३१ ॥

नपुंसकाधिकारः ।

क्लीबः स्यात्सुरताशक्तस्तद्भावः क्लैब्यमुच्यते ॥
तच्च सप्तविधं प्रोक्तं निदानं तस्य कथ्यते ॥ ३२ ॥

जो मनुष्य स्त्रीसे मैथुन करनेमें इच्छा तो करे परंतु इन्द्रियकी कमजोरी से मैथुन न करसके उसको क्लैब्य कहते हैं । वह क्लैब्य (नपुंसकता) सातप्रकारकी होतीहै । उसका निदान कहते हैं ॥ ३२ ॥

निदान ।

तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तु रिरंसोर्मनसि क्षते ॥
ध्वजः पतत्यतो नृणां क्लैब्यं समुपजायते ॥ ३३ ॥

पुरुषके हृदयको अप्रिय (जिनसे नफरत हो) ऐसे भय शोक क्रोधादिकोंसे चित्त दुःखित होनेसे लिंगमें शिथिलता होवे और मैथुनकी इच्छा न हो उसको नपुंसक कहते हैं ॥ ३३ ॥

१ मानसक्लैब्य ।

द्वेष्यस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लैब्यं तन्मानसं स्मृतम् ॥ ३४ ॥

जिस पुरुषको मैथुनविषयक वार्ता बुरी लगे और स्त्रीरमणसे द्वेष हो उसको मानसक्लीब कहते हैं ॥ ३४ ॥

२ पित्तजक्लीबता ।

कटुकाम्लैः सलवणैरतिमात्रोपसेवितैः ॥
पित्ताच्छुक्रक्षयो दृष्टः क्लैब्यं तस्मात्प्रजायते ॥ ३५ ॥

मिरच खटाई निमक आदि पित्तकर्त्ता पदार्थोंका अत्यंत सेवन करनेसे बढकर वीर्यको बिगाड देताहै उससे वीर्य क्षीण होकर नपुंकता प्राप्त होतीहै (यह दूसरी न०) है ॥ ३५ ॥

३ शुक्रक्षयजनपुंसकता ।

अतिव्यवायशीलो यो न च वाजीक्रियारतः ॥
ध्वजभंगमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुतः ॥ ३६ ॥

जो मनुष्य मैथुन तो अधिक करे और वीर्यके बढानेवाली वाजीकरण औषधिका सेवन न करे उसके वीर्यके क्षीण होनेसे इन्द्रिय शिथिल होजाती है उसको शुक्रक्षयज नपुंसक कहतेहैं ॥ ३६ ॥

४ चतुर्थनपुंसकता।

लिंगवृद्धिकरान्योगान् सेवतेयः प्रमादतः ॥
सहता मेढ्रयोगेन चतुर्थीं क्लीबतां व्रजेत् ॥ ३७ ॥

जो मनुष्य प्रमादसे अज्ञानवश लिगके वढानेवाली औषधिका उपयोग करते हैं उससे लिग वडा होनेके कारण चौथी क्लीवता होतीहै ॥ ३७ ॥

पंचम न०

पंचमी क्लीबता ज्ञेया शिराच्छेदादिकारणात् ॥ ३८ ॥

पांचवी नपुंसकता वीर्यवाही नसके कटनेसे और दारुण प्रमेहादिकोंसे भी होती है ॥ ३८ ॥

षष्ठ न०

बलिनः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः ॥
षष्ठं क्लैब्यं स्मृतं तत्तु वीर्यस्तंभनिमित्तकम् ॥ ३९ ॥

यदि बलवान् मनुष्य खिन्नमन होकर ब्रह्मचर्यसे वीर्य रोक लेवे वह वीर्यस्तम्भ निमित्तक छठी क्लीवता है ॥ ३९ ॥

सप्तम न०

जन्मप्रभृति यत्क्लैब्यं सहजं तद्धि सप्तमम् ॥ ४० ॥

जो पुरुष जन्मसेही नपुंसक हो उसको सहज नपुंसक कहते हैं ॥ ४० ॥

(नपुंसकताके अन्य कारण)

बीजध्वजोपघाताभ्यां जरया शुक्रसंक्षयात् ॥
क्लैब्यसंभवस्तस्य सामान्यं शृणु लक्षणम् ॥ ४१ ॥

संकल्पप्रवणो नित्यं प्रियां वश्यामथापि वा ॥
न याति लिंगशैथिल्यात्कदाचिद्याति वा यदि ॥ ४२ ॥
श्वासार्तः खिन्नगात्रांशो मोघसंकल्पचेष्टितः ॥
म्लानशिश्नश्च निर्बीजः स्यादेतत्क्लैब्यलक्षणम् ॥
सामान्यत्वाच्च क्लैब्यानां लक्षणं समुदाहृतम् ॥ ४३ ॥

वीर्य तथा लिंगमें खराबी होनेसे और बुढापेके कारण शुक्रके क्षय होजाने से जो नपुंसकता होतीहै, हे शिष्यसत्तम ! उसके लक्षण सुनो ॥ ४१ ॥ नपुंसकताके सामान्यलक्षण यहहैं कि रमण करनेका विचार तो नित्य करै परंतु लिंगकी शिथिलताके सबबसे अपनी विवाहिता स्त्रीसे भी गमन न करसके । कदाचित् करे भी तो श्वास हो देह कंधों मे पसीना आवे और इस विचारेका सब संकल्प निष्फल होवे लिंग मुर्झाया हुवा और वीर्य रहितहो सामान्यतासे नपुंसकोंके यह लक्षण हैं ॥ ४२–४३ ॥

श्रूयतां तन्मना भूत्वा विस्तरेण प्रवक्ष्यते ॥
बीजोपघातध्वजभंगजराक्षयसमुद्भवान् ॥ ४४ ॥

हे शिष्य, सावधान होकर सुनो (बीजोपघात–ध्वजभंग, जरासंभव और क्षयज नपुंसकोंके विस्तारपूर्वक लक्षण कथन करताहूं ॥ ४४ ॥

बीजोपघातके लक्षण और निदान ।

शीतरूक्षाम्लसंक्लिष्टविरुद्धाजीर्णभोजनात् ॥
शोकचिंताभयत्रासात्स्त्रीणां चात्यर्थसेवनात् ॥ ४५ ॥
वातादीनामोजसश्च तथैवानशनाच्छ्रमात् ॥
नारीणामनभिज्ञत्वात्पंचकर्मापचारतः ॥ ४६ ॥
बीजोपघातो भवति पांडुवर्णः सुदुर्बलः ॥
अल्पप्रजोल्पहर्षश्च प्रमदासु भवेन्नरः ॥ ४७ ॥

शीतल, रूखा, खट्टा, कठोर तथा विरुद्ध भोजन करनेसे और अजीर्णमें भोजन करनेसे । शोक, चिंता, भय, अति मैथुनसे तथा अभिघात और अविश्वाससे रसादि धातुवोंकी क्षीणतासे भोजन न करनेसे निर्जलव्रत करनेसें अति परिश्रमसे स्त्रियोंपर प्यार न होनेसे वमन विरेचनादि पंच-कर्मके विगडनेसे मनुष्योंका वीर्य विगडता है । फिर उसमनुष्यके यह लक्षण होतेहैं । देहमें पीलापन । शरीर दुवला होना । संतानका अल्पायु होना और कम होना या न होना स्त्रियोंमे स्नेह न होना श्वासादि होना वीजोपघात नपुंसकके लक्षण हैं ॥ ४५–४७ ॥

ध्वजभंग न० ।

ध्वजभंगस्य चोत्पत्तिलक्षणं शृणु विस्तरात् ॥
अत्यम्ललवणक्षारविरुद्धाजीर्णभोजनात् ॥ ४८ ॥
अत्यंबुपानाद्विषमपिष्टान्नगुरुभोजनात् ॥
दधिक्षीरानूपमांससेवनादतिकर्षणात् ॥ ४९ ॥
कन्यायां चैव गमनादयोनिगमनादपि ॥
दीर्घरोम्णीं चिरोत्सृष्टां तथैव च रजस्वलाम् ॥ ५० ॥
दुर्गंधां दुष्टयोनिं च तथैव च परिश्रुताम् ॥
नरस्य प्रमदां मोहादतिहर्षात्प्रगच्छतः ॥ ५१ ॥
चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसश्चाभिघाततः ॥
अधावनाद्वा मेढ्रस्य शस्त्रदंतनखक्षतात् ॥ ५२ ॥
काष्ठप्रहारनिश्शोपशूकानां चातिसेवनात् ॥
रेतसश्च प्रतीघाताद्ध्वजभंगः प्रवर्त्तते ॥ ५३ ॥

अत्यंत खटाई अत्यंत निमक और तीक्ष्णखार विरुद्धभोजन (दूध मछ-ली आदि) कच्चा अन्न तथा विना भूख भोजन करनेसे वहुत जलपीनेसे विषम अन्न पिष्ट भारीपदार्थ खानेसे दधि दूध अनूप संचारी जीवोंके मांस

खानेसे अत्यंत कमजोरी से १२ वर्षसे कम उमरवाली स्त्रीगमनसे अयोनि (गुदमैथुन वा हस्तमैथुन) मैथुनसे । जिसकी वडे कडे वाल युक्त योनि हो जो देरमें स्खलित हो रजस्वला, दुर्गंधयुक्त योनिवाली और जिसको गरमी या सोमरोग हो अथवा प्रदर आदिसे दूषित गीली योनि हो ऐसी स्त्रियां-से मैथुन करनेसे मूर्खतासे मैथुन करनेसे, अथवा चौपाये जानवरसे मैथुन करनेसे, लिंगमें चोट लगने से लिंगको न धोनेसे अथवा छुरी आदि शस्त्रके घावसे लकडीके लगनेसे और कामशास्त्रोक्त शक प्रयोगसे वीर्यके नष्ट होनेसे ध्वजभंग (लिंगका सुस्त होकर गिरजाना) होताहै॥४८-५३॥

श्वयथुर्वेदना मेढ्रे रागश्चैवोपलक्ष्यते ॥
स्फोटास्तीव्राश्च जायंते लिंगपाको भवत्यपि ॥ ५४ ॥
मांसवृद्धिर्भवेच्चापि व्रणाः क्षिप्रं भवंत्यपि ॥
पुलकोदकसंकाशः स्रावः श्यावारुणप्रभः ॥ ५५ ॥
वलयीकुरुते वापि कठिनं च परिग्रहम् ॥
ज्वरस्तृष्णा भ्रमो मूर्छा छर्दिश्चास्योपजायते ॥ ५६ ॥
रक्तं कृष्णं स्रवेच्चापि नीलमाविललोहितम् ॥
अग्निनेव च दग्धस्य तीव्रो दाहः सवेदनः ॥ ५७ ॥
बस्तौ वृषणयोर्वापि सीवन्यां वंक्षणेषु च ॥
कदाचित्पिच्छिलो वापि पाण्डुस्रावश्च जायते ॥ ५८ ॥
श्वयथुश्च भवेन्मंदास्तिमितोल्पपरिस्रवः ॥
चिरात्स पाकं व्रजति शीघ्रं वाथ प्रपद्यते ॥ ५९ ॥
जायंते कृमयश्चापि क्लिद्यंते पूतिगंधि च ॥
प्रशीर्यंते मणिश्चास्य मेढ्रमुष्कावथापि च ॥
ध्वजभंगकृतं क्लैब्यं कथितं शिष्यसत्तम ॥ ६० ॥

लिंगका सूज जाना उसमें पीडा होना लाल होजाना, घोर फोडे होवें लिंग पकजावे । लिंगमे मांसका बढना तत्काल घाव होना उनमेंसे काले लाल या धोवन के रंगका स्राव होना तथा लिंगमें गोल चूडीसी आटेसे कठोर जड़वाले होना उस मनुष्यको इस रोगसे पीडित होनेके कारण ज्वर, तृषा, मूर्छा. वमन आदि विकार होवें लिगमेंसे लाल काला स्राव हो अग्निसे जलनेकीसी दाह हो, वस्ती, वृषण, सीवन, वंक्षण, इनमें दाहयुक्त दर्द होवे । कभी इनमेसे गाढा पीला स्राव हो, कभी इन्हीं स्थानोंमें मन्द सूजन और थोड़ा स्राव हो, कभी देरमें कभी जल्दी पक जावे उसमें कृमि पड़जावें सदैव गीला रहै और दुर्गन्ध आवे और सुपारी गलकर गिर जावे अथवा लिंग पोते दोनों गिर जावें । हे शिष्यसत्तम ! यह ध्वजभंगके महाउपद्रव हैं ॥ ५४-६० ॥

जरासंभवन०के कारण और लक्षण ।

जघन्यमध्यप्रवरं वयस्त्रिविधमुच्यते ॥
अथ च प्रवरे शुक्रं प्रायशः क्षीयते नृणाम् ॥ ६१ ॥
रसादीनां संक्षयाच्च तथैवावृष्यसेवनात् ॥
बलवर्णेंद्रियाणां च क्रमेणैव परिक्षयात् ॥ ६२ ॥
परिक्षयादायुषश्चाप्यनाहाराच्छ्रमात्क्रमात् ॥
जरासंभवजं क्लैब्यमित्येतैर्हेतुभिर्नृणाम् ॥ ६३ ॥
जायते तेन सोत्यर्थं क्षीणधातुः सुदुर्बलः ॥
विवर्णो विह्वलो दीनः क्षिप्रं व्याधिमथाश्नुते ॥ ६४ ॥

बुढापेसे हुवे नपुंसकके यह लक्षण हैं । अवस्था तीन प्रकारकी है । अधम मध्यम उत्तम, सो वृद्ध अवस्थामें मनुष्योंका वीर्य क्षीण होता है उसका कारण यह है कि रसादिकोंका क्षय होनेसे विना वृष्यपदार्थोंके सेवन किये मैथुन करनेसे क्रमसे बल वर्ण इंद्रियोंके क्षीण होनेसे भोजन न करनेसे परिश्रम करनेसे इन कारणोंसे बुढापेका नपुंसकत्व होता है ।

फिर उस बुढ़ापेमें मनुष्य अत्यंत क्षीण दुर्बल होजाता है देहका वर्ण पलट जाता है विह्वल और दीन होजाता है इसको रोग शीघ्रही घेरलेते हैं यह जरासंभव नपुंसकके लक्षण हैं ॥ ६१–६४ ॥

क्षयजन०के लक्षण ।

अतिप्रचिंतनाच्चैव शोकात्क्रोधाद्भयादपि ॥
ईर्ष्योत्कंठात्तथोद्वेगात्समाविंशतिको नरः ॥ ६५ ॥
कृशो वा सेवते रूक्षमन्नपानमथौषधम् ॥
दुर्बलप्रकृतिश्चैव निराहारो भवेद्यदि ॥ ६६ ॥
अथाल्पभोजनाच्चापि हृदये यो व्यवस्थितः ॥
रसः प्रधानधातुर्हि क्षीयेताशु नरस्ततः ॥ ६७ ॥
रक्तादयश्च शीर्यंते धातवस्तस्य देहिनः ॥
शुक्रावसानास्तेभ्यो हि शुक्रं धाम परं मतम् ॥ ६८ ॥
चेतसो वातिहर्षेण व्यवायं सेवते तु यः ॥
शुक्रं तु क्षीयते तस्य ततः प्राप्नोति संक्षयम् ॥ ६९ ॥
घोरां व्याधिमवाप्नोति मरणं वा समृच्छति ॥
शुक्रं तस्माद्विशेषेण रक्ष्यमारोग्यमिच्छता ॥ ७० ॥

अतिचिंता, शोक, क्रोध, भय, ईर्षा, उत्कंठा, उद्वेग, इनके अत्यंत करनेसे वीस वर्षका मनुष्य भी कृश होकर रूक्ष अन्न पान औषधिका सेवन करे और दुर्बल होकर निराहार रहे अथवा बहुत थोड़ा भोजन करे तो ऐसे करनेसे हृदयस्थ प्रधान धातु क्षीण होजाता है जिससे यह मनुष्य शीघ्र क्षीण होकर रुधिरसे वीर्य पर्यंत सब धातु क्षीण होजाते हैं । अथवा प्रसन्न चित्तसे जो अत्याक्षुलसे अधिक मैथुन करता है उसका शुक्र क्षीण होजाता

है ऐसा होनेसे मनुष्य महाभयंकर व्याधि अथवा मृत्युको भी प्राप्त होताहै । इसलिये आरोग्यताकी इच्छावाले पुरुषको शुक्रकी अवश्य रक्षा करनी चाहिये ॥ ६९-७० ॥

कुकर्मजआधुनिकनपुंसकता ।

एतन्निदानलिंगाभ्यामुक्तं क्लैब्यं चतुर्विधम् ॥
समयेस्मिन्प्रमादाच्च मद्यवेश्याप्रभावतः ॥ ७१ ॥
ब्रह्मचर्यविहीनत्वादयोनिमैथुनात्तथा ॥
हतशुक्रहतोत्साहाः हतबुद्धिपराक्रमाः ॥ ७२ ॥
अप्रजाल्पप्रजा वा च म्लानध्वजयुताथ वै ॥
समर्था मनने चैवासमर्थाः पतिरंजने ॥ ७३ ॥

हे पुत्र ! इस प्रकार निदान लक्षणसे चार प्रकारकी नपुंसकता यह कही है। परन्तु हे शिष्य ! इस समय अधिकतर प्रमादवश मद्य पीकर वेश्यागमन करनेसे, छोटी उमरमें ब्रह्मचर्यके नष्ट होनेसे हस्तमैथुन तथा गुदमैथुनसे मनुष्योंके वीर्य और बुद्धि तथा पराक्रम यह सब नष्ट होजाते हैं फिर यातो इनके संतान होतीही नहीं या हो भी तो गर्भपात या छोटी उमरमें ही मृत्युको प्राप्त हो । और यह मनुष्य इंद्रियकी शिथिलताके सबब मनमें तो स्त्रीविषयका विचार करे परन्तु स्त्रीके समीप जाकर लज्जित होकर कुछ न करसके ॥ ७१-७३ ॥

अन्यमतसे नपुंसकनिदान ।

रूक्षान्नशाकाद्यशनाच्चकिंचि-
त्प्रभूतरूक्षाम्लनिषेवणाच्च ॥
बीजास्त्रजोवैकृतिजन्यदोषा-
दोजक्षयः पुंस्त्वविनाशहेतुः ॥ ७४ ॥
रोहार्वाहदसाबीजः ओजस्तेजस्त्वसंकरः ॥
शुद्धशरीरिणां तात कांतिकामबलास्पदम् ॥ ७५ ॥

रूक्ष अन्न और रूक्ष शाक आदिके सेवनसे तथा अत्यंत खार (निमक) खटाई आदिके खानेसे दोष कुपित होकर मनुष्यके वीर्य व रुधिरको बिगाड देते हैं जिससे इसका ओज (शरीरकी सत्ता) क्षीण होजाता है जब ओज क्षय हुवा तो पुरुषार्थ भी नष्ट हो जाता है । सो हे तात! उस पुरुषार्थके प्रधान कारण अन्यमतसे चार माने हैं जैसे १ रीह अर्थात् कामोत्पादकवायु और २ अर्वा है अर्थात् चार प्रकारकी रूह, ३ दम अर्थात् रुधिर४ बीज अर्थात् वीर्य इन चारोंके ओजका शुद्ध तेज शुद्ध शरीरीयोके कांति बल और कामका प्रकाशक है ॥ ७४-७५ ॥

बलोत्साहौ मनस्थैर्यं वैशद्यं प्रतिभा धियः ॥
वर्णप्रसादक्षुद्वृद्धिदीपनं पुष्पधन्विनः ॥ ७६ ॥
ओजसः स्युश्चनैरुज्यादोजोनिर्दोषताबलात् ॥
गुणा भवेयुः प्रागुक्ता दोषास्तन्नाशजाः स्मृताः ॥ ७७ ॥
ओजःक्षीणाद्बलं क्षीणं स्मरः क्षीणः सुखापहः ॥
रिरंसोरपि पुंसः स्याद्ध्वजपातश्चिरं पुनः ॥ ७८ ॥
यावनीयमतं तात माथुरेण प्रकाशितम् ॥
वाग्भेदस्यहि भेदोस्ति कथितं विस्तरात्पुरा ॥ ७९ ॥

बल उत्साह मनकी स्थिरता विशदपना बुद्धिका (फैलना) देहके वर्णका उत्तम होना क्षुधाका वढना कामदेवकी चेतन्यता यह ओजके गुणहैं और वलवान् होनेसे वल वाले होते हैं उस ओजके नाश होनेसे वल उत्साह आदिका नाश होताहै तव वल घटता है और वल घटनेसे कामेच्छा क्षीण होताहै उस कामेच्छाके क्षीण होनेसे मैथुनमें आनंद नहीं आता इसी सववसे मैथुन करतेवक्त इंद्रिय ढीली पड जाती है। हे पुत्र मथुरानिवासी चौवाजीने युनानी ग्रंथोंसे निकालकर यह मत एक पुस्तकमें लिखा है परंतु मैं तुमको पहले विस्तार पूर्वक सुना चुका हूं आयुर्वेदमेंही

निकालकर किसीने कुछ किसीने कुछ लिखा परंतु इसमे तो केवल वाणी-काही भेदमात्र है यथार्थमें विस्तारसे आदि आयुर्वेदसे वढकर किसीने कुछ नहीं किया ॥ ७६-७९ ॥

सुश्रुतोक्त अन्य नपुंसक ।

मातृपितृजदोषैर्हि ये प्रोक्ता वै नपुंसकाः ॥
तानहं संप्रवक्ष्यामि शृणु विस्तरतस्तु तान् ॥ ८० ॥

माता पिताके दोषोंसे जो नपुंसक होते हैं अब मैं उनका विस्तारसे कथन करताहूं हे पुत्र ! सावधान होकर सुनो ॥ ८० ॥

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यपुरुषो भवेत् ॥
स शुक्रं प्राश्य लभते ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥ ८१ ॥
यः पूतियोनौ जायेत स सौगंधिकसंज्ञकः ॥
स योनिशेफसो गंधमाघ्राय लभते बलम् ॥ ८२ ॥
स्वे गुदेऽब्रह्मचर्याद्यः स्त्रीषु पुंवत्प्रवर्तते ॥
कुंभिकः स तु विज्ञेय ईर्ष्यकं शृणु चापरम् ॥ ८३ ॥
दृष्ट्वा व्यवायमन्येषां व्यवाये यः प्रवर्तते ॥
ईर्ष्यकः स तु विज्ञेयो दृग्योनिरयमीरितः ॥ ८४ ॥
यो भार्यायामृतौ मोहादंगनेव प्रवर्तते ॥
तत्र स्त्रीचेष्टिताकारो जायते खंडसंज्ञकः ॥ ८५ ॥
ऋतौ पुरुषवद्वापि प्रवर्तेतांगना यदि ॥
तत्र कन्या यदि भवेत्सा भवेन्नरचेष्टिता ॥ ८६ ॥

१ पिता के अत्यंत अल्पवीर्यसे जो गर्भ रहता है उससे आसेक्य नपुंसक पैदा होताहै वह जब अन्यपुरुषके वीर्यको पीवे तो उसका लिंगोत्थान होताहै इसको मुखयोनी भी कहते हैं ॥ ८१ ॥ २ जो वालक दुर्गंधित योनीसे प्रगट हुवा उसकी सौगंधिक संज्ञा है इसको लिंग व योनीके सूंघने

से चैतन्यता होती है इसको नासायोनि भी कहते हैं ॥ ८२ ॥ ३ जो मनुष्य स्वयं गुदभंजन करावे तब स्त्री गमनकी चैतन्यता हो इसको कुंभिक और गुदयोनि भी कहते हैं ॥ ८३ ॥ ४ दूसरेको मैथुन करते देखकर फिर स्वयं मैथुनमें प्रवृत्त हो इसको ईर्ष्यक और दृग्योनि भी कहतेहैं॥८४॥ ५ जो मनुष्य ऋतुसे शुद्ध स्त्रीसे स्त्रीवन्मैथुन करे अर्थात् आप नीचे हो और स्त्री ऊपर पुरुषवत् हो यदि उस समय गर्भ रहजावे तो पुत्र हो तो स्त्रीकीसी चेष्टावाला हो उसको खंड और कन्या हो तो पुरुषकी चेष्टावाली हो इनको नारीषंढ कहते हैं ॥ ८५ ॥ ८६ ॥

आसेक्यश्च सुगंधी च कुंभिकश्चेर्ष्यकस्तथा ॥
सरेतसस्त्वमी ज्ञेया अशुक्रः षंढसंज्ञकः ॥ ८७ ॥

१ असेक्य २ सुगंधी ३ कुंभिक ४ ईर्ष्यक यह चार तो वीर्ययुक्त होते हैं और षण्ढ नपुंसक वीर्यरहित होताहै ॥ ८७ ॥

अनया विप्रकृत्या तु तेषां शुक्रवहा शिरा ॥
हर्षात्स्फुटत्वमायाति ध्वजोच्छ्रायस्ततो भवेत् ॥ ८८ ॥

इस प्रकार इन आसेक्यादि नपुंसको की विरुद्ध चेष्टासे शुक्रवाही नस हर्षसे फूल जाती है इसीसे उनको चैतन्यता होती है ॥ ८८ ॥

नपुंसकोंमें साध्यासाध्यता ।

केचित्क्लैब्ये त्वसाध्ये द्वे ध्वजभंगक्षयोद्भवे ॥
वदंति शेफसच्छेदाद्वृषणोत्पाटनेन वा ॥ ८९ ॥

कोई आचार्य ध्वजभंग और क्षयजको असाध्य मानते हैं कोई कहतेहैं वीर्यवाही नसके कटनेसे तथा अंडकोशके न रहनेसे असाध्य होतेहैं ॥८९॥

मातापित्रोर्बीजदोषादशुभैश्च कृतात्मनः ॥
गर्भस्थस्य यदा दोषा प्राप्य रेतोवहाः शिराः ॥ ९० ॥

शोषयंत्याशु तन्नाशाद्रेतश्चाप्युपहन्यते ॥
ततः संपूर्णसर्वांगस्सभवत्यपुमान् पुमान् ॥ ९१ ॥
एतेत्वसाध्या व्याख्याता सन्निपातसमुच्छ्रयात् ॥

मातापिताके वीर्यदोषसे और अपने पूर्वजन्मके पापके प्रभावसे गर्भस्थ दोष वीर्यवाही नसोंमें प्राप्त होकर उन नसोंको सुखा देते हैं. तब उन नसोंके क्षीण होनेसे इसका वीर्य भी मारा जाता है फिर उसगर्भसे जे बालक होता है वह सर्वांग सुन्दर होते हुवे भी नपुंसक होता है यह सब नपुंसक तीनों दोषों की आधिक्यतासे होतेहैं इस लिये असाध्यहैं॥९०–९१॥

दूषित शुक्रके लक्षण ।

मिथ्याहारविहाराभ्यामयोनिमैथुनादिभिः ॥
वेगाघातात्क्षयाच्चापि धातूनां सप्तदूषणात् ॥ ९२ ॥
दोषाः पृथक् समस्ता वा प्राप्य रेतोवहाः शिराः॥
शुक्रं संदूषयंत्याशु तद्वक्ष्यामि विभागशः ॥ ९३ ॥

अनुचित आहार और अनुचित विहार करनेसे अयोनि मैथुनादि खरावियोंसे बड़े वेगसे भागनेसे चोटके लगनेसे धातुवोंकी क्षीणतासे तथा खरावीसे वात पित्त कफ कुपित होकर अलग २ अथवा मिलकर वीर्यवाहनसोंमें प्राप्त हो वीर्यको दूषित करते हैं सो उनका मैं अलग २ कथन करताहूं ॥ ९२–९३ ॥

दूषित शुक्रके भेद ।

फेनिलं तनु शुष्कं च विवर्णं पूति पिच्छिलम् ॥
अन्यधातूपसंसृष्टमवसादि तथाष्टमम् ॥ ९४ ॥

झागदार. थोडा शुष्क, विवर्ण, दुर्गंधित, पिच्छिल, रसरक्तादि अन्य धातुयुक्त. और वीर्यके गुणोंसे रहित यह दूषित शुक्रके आठ भेद हैं॥९४॥

वातदूषित ।

वातेन फेनिलं शुक्रं कृच्छ्रेणापिच्छिलं तनु ॥
भवत्युपहते शुक्रं न तद्गर्भाय कल्पते ॥ ९५ ॥

झागदार, सूखाहुवा कठिनतासे निकले, ल्हेसदार और थोडा ऐसा वीर्य वायुसे दूषित होता है इससे गर्भ नहीं होता ॥ ९५ ॥

पित्तदूषित ।

सनीलमथवा पीतमत्युष्णं पूतिगंधि च ॥
दाहलिंगं विनिर्याति शुक्रं पित्तेन दूषितम् ॥ ९६ ॥

नीला, पीला, अत्यन्त गरम, सड़ीहुई दुर्गंधियुक्त, निकलते वख्त लिंगमें दाह हो ऐसा शुक्र पित्तदूषित होता है ॥ ९६ ॥

कफदूषित ।

श्लेष्मणा बद्धमार्गं तु भवत्यत्यर्थपिच्छिलम् ॥ ९७ ॥

कफसे दूषित हो तो अत्यंत गाढा कतलेदार होता है ॥ ९७ ॥

रुधिरयुक्त वीर्य निकलनेके कारण ।

स्त्रियामत्यर्थगमनादभीघातात्क्षयादपि ॥
शुक्रं प्रवर्तते जंतोः प्रायेण रुधिरान्वितम् ॥ ९८ ॥

अत्यंत स्त्रीगमनसे, चोट लगनेसे, अत्यन्त क्षीणतासे, और वीर्यके क्षय होनेसे मनुष्यका वीर्य रुधिरयुक्त निकलता है ॥ ९८ ॥

वीर्य क्षय होनेके लक्षण ।

शुक्रक्षये मेढ्रवृषणवेदनाऽशक्तिर्मैथुने चिराद्वा प्रसेकः
प्रसेके चाल्परक्तशुक्रदर्शनं च ॥ ९९ ॥

शुक्र क्षीण होनेसे लिंग और वृषणोंमें वेदना, स्त्रीगमनमें अशक्ति, कभी देरसे वीर्यपात होना, पात होनेमें कुछ रक्तता लिये और थोडा होना॥९९॥

असाध्यासाध्य ।

तेषु कुणपग्रंथिपूतिपूयक्षीणरेतसः कृच्छ्रसाध्याः ॥
मूत्रपुरीषरेतसस्त्वसाध्याः शेषाः साध्या इति ॥ १०० ॥

इनमें मुर्देकी गन्धवाला, और ग्रंथियुक्त दुर्गन्ध और राधसदृश और क्षीणवीर्य कष्टसाध्य है । मूत्रपुरीषयुक्त असाध्य है बाकी सब साध्य है ॥ १०० ॥

शुद्धशुक्रके लक्षण ।

स्फटिकाभं द्रवं स्निग्धं मधुरं मधुगंधि च ॥
शुक्रमिच्छंति केचित्तु तैलक्षौद्रनिभं तथा ॥ १०१ ॥

जो वीर्य सफेद हो । पतला, चिकना, मीठा हो, तथा मधुकीसी गन्धयुक्त हो तो शुद्ध वीर्य जानना । कई आचार्य तैल अथवा सहदकी समान वीर्य शुद्ध होता है ऐसा मानते हैं ॥ १०१ ॥

तरंगकी समाप्तिः ।

अतोधिको यदस्ति चेद्वाक्यभेदं विजानीहि ॥
सामान्यतस्तरंगेऽस्मिन् यथावद्वर्णितं मया ॥ १०२ ॥

इससे अधिक नपुंसकोंके निदानके विषयमें यदि कहीं कुछ कहा है वह केवल वाक्यभेदही है और सूक्ष्म स्थूल रीतिसे जैसा होना चाहिये वैसा इस प्रथम तरंगमें वर्णन करदिया है इसको हे शिष्य ! तुम यथोचित समझ लेवो ॥ १०२ ॥

इति श्रीवैद्य प० रामप्रसादप्रणीतनपुंसकामृतार्णवे नपुंसकनिदानवर्णनो नाम प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयस्तरङ्गः ।

शिष्य उवाच ।

अथ क्लैब्य चिकित्सां च वाजीकरणमेव च ॥
शुक्रशुद्धकरं चैव विधानं कृपया वद ॥ १ ॥

इस प्रकार नपुंसकोंका निदान सुननेके अनंतर शिष्य बोले, हे नाथ ! अब कृपा करके वीर्यके शुद्ध करनेकी विधि और नपुंसकोंकी चिकित्सा तथा वाजीकरण विधिको कथन कीजिये ॥ १ ॥

गुरुरुवाच ।

श्रूयतां विधिना तात शुक्रशोधकरं विधिम् ॥
तेष्वाद्याञ्शुक्रदोषांस्त्रीन्स्नेहस्वेदादिभिर्जयेत् ॥ २ ॥
क्रियाविशेषैर्मतिमांस्तथा चोत्तरवस्तिभिः ॥

गुरुबोले हे तात! वीर्यके शुद्ध करनेकी विधि सुनो--पहले जो दुष्टवीर्योंका वर्णन कर आए हैं उनमें वायुसे दूषित वीर्यमें स्नेहपान और स्वेदन आदि करावे, ॥ २ ॥ पित्तदूपितमें विरेचन करावे और कफदूपितमें वमन और विरेचन दोनो करावे तथा उत्तर वस्ति आदि करावे ॥

पाययेत्तं नरं सर्पिर्भिषक् कुणपरेतसि ॥ ३ ॥
धातकीपुष्पखादिरदाडिमार्जुनसाधितम् ॥
पाययेदथवा सर्पिः सालसारादिसाधितम् ॥ ४ ॥
ग्रंथिभूते शठीसिद्धं पालाशे वापि भस्मनि ॥
परुपकवटादिभ्यां पूयप्रख्ये तु साधितम् ॥ ५ ॥
विट्प्रभे पाययेत्सिद्धं चित्रकोशीरहिंगुभिः ॥
वाजीकरणविधिं तात कर्तव्यं क्षीणरेतसि ॥ ६ ॥

जिसके वीर्यमे मुर्देकीसी गंध होवे उसको धावेके फूल, दाडिम, अर्जुन वृक्षकी छाल, इनसे सिद्ध किया घृत पिलावे अथवा सालसारादिगणसे सिद्ध घृत पिलावे ॥ ३ ॥ ४ ॥ जो ग्रंथियुक्त वीर्य हो तो कचूरसे सिद्ध किया घृत पिलावे अथवा पलासकी भसमसे सिद्ध किया घृत पिलावे जिसका वीर्य राध सदृश हो उसको फालसे और वटादिगणसे सिद्धकिया घृत पिलावे ॥ ५ ॥ जिसके वीर्यमें विष्ठाकी गंध हो उसको चित्रक खस और हींगसे सिद्ध किया घृत पिलावे और क्षीणवीर्यवालेको वाजीकरण औषधियोंका सेवन करावे ॥ ६ ॥

नपुंसकोंकी चिकित्सा।

अथ चिकित्सितं वक्ष्ये क्लीबानां हितकाम्यया ॥
क्लैब्यानामिह साध्यानां कार्यो हेतुविपर्ययः ॥ ७ ॥

इसके उपरांत गुरुबोले अब हम नपुंसकोंके कल्याणके लिये चिकित्सा का कथन करते हैं जो साध्य नपुंसक हैं उनकी नपुंसकताके कारणसे उलटा कर्म करे ॥ ७ ॥

सामान्यचिकित्सा।

मुख्यं चिकित्सितं यस्मान्निदानपरिवर्जनम् ॥
क्लैब्योपशांतये कुर्यात्क्षीणक्षतहितं च यत् ॥ ८ ॥
वस्तयः क्षीरसर्पींषि वृष्ययोगाश्च ये मताः ॥
रसायनप्रयोगाश्च सर्वानेतान्प्रयोजयेत् ॥ ९ ॥
समीक्ष्य देहदोषाग्निबलभेषजकालवित् ॥
व्यपैति हेतुजं क्लैब्यं यस्स्याद्धेतुविपर्ययात् ॥ १० ॥

मुख्य चिकित्सा यह है कि जिसकारणसे रोग हुवा हो उसको त्यागदेवे फिर जो नुकसान पंहुच चुका हो उसका यत्न करे नपुंसकताकी शांतिके वास्ते जो क्षीणक्षतमें हितकारी औषधि हो उसको उपयोग करे और वस्तिकर्म वा तथा दूध. घी. पुष्टिकारक पदार्थ,और रसायन इनका उपयोग करे।

और जो नपुंसकताके कारणको नष्ट करनेवाले उपयोग हों उनको औषधी और कालके जाननेवाला वैद्य देहदोष, और अग्निका बलाबल देखकर करे ॥ ८-१० ॥

विशेषचिकित्सा और बीजोपघातकी चिकित्सा ।

सुस्विन्नस्निग्धगात्रस्य स्नेहयुक्तं विरेचनम् ॥
प्रदद्यान्मतिमान् वैद्यस्ततस्तमनुवासयेत् ॥ ११ ॥
पलाशैरंडमुस्ताद्यैः पश्चादास्थापयेत्ततः ॥
वाजीकरणयोगाश्च योज्या बीजोपघातजे ॥ १२ ॥

प्रथम स्वेदनकराके स्नेहयुक्त विरेचन करावे फिर, पलास, एरंड, मोथा, इनके क्वाथोंसे अनुवासन अस्थापन, कराकर वाजीकरण योग सेवन करावे तो बीजोपघातज नपुंसक अच्छा हो जाता है ॥ ११-१२ ॥

ध्वजभंगका यत्न ।

ध्वजभंगकृतं क्लैब्यं ज्ञात्वा तस्याचरेत्क्रियाम् ॥
प्रदेहान्पारिषेकांश्च कुर्याद्वा रक्तमोक्षणम् ॥ १३ ॥
स्नेहपानं च कुर्वीत सस्नेहं वा विशोधनम् ॥
ततोनुवासनं कुर्यादथवा स्थापनं पुनः ॥ १४ ॥
व्रणवच्च क्रियाः सर्वास्तत्र कुर्याद्विचक्षणः ॥

ध्वजभंगका पहले निदान द्वारा निश्चय करके फिर चिकित्सा करे लेप सेचन अथवा नसवेधन करके रुधिर निकाले अथवा घृततैलादि ६' न करावे या स्नेह युक्त विरेचन करावे । फिर अनुवासनवस्ति आस्थापनवस्ति कर्म करे ॥ १३ ॥ १४ ॥ तथा इस ध्वजभंग पुंसककी व्रणके समान विम्लापन पाटन रोपणादि क्रिया क्रमपूर्वक करे ॥

जरासंभव और क्षयजकी चिकित्सा ।

जरासंभवजे क्लैब्ये क्षयजे चैव कारयेत् ॥ १५ ॥
स्नेहस्वेदोपपन्नस्य सस्नेहं शोधनं हितम् ॥
क्षीरसर्पिर्वृष्ययोगाः वस्तयश्चैव यापनाः ॥ १६ ॥

रसायनप्रयोगाश्च तयोर्भेषजमुच्यते ॥
इति विशेषतो ज्ञात्वा वाजीकरणमपिशृणु ॥ १७ ॥

वृद्धअवस्थाके कारण जो नपुंसक हो अथवा क्षयज नपुंसक हों उनको स्नेहन स्वेदन करके स्नेहयुक्त शोधन करे फिर दूध, घी, वाजीकरणयोग, और यापन वस्ती तथा रसायन पदार्थोंका सेवन करावे । इस प्रकार नपुंसकोंकी चिकित्सा क्रमको समझो और हे तात ! अब वाजीकरण-योगोंको सुनो ॥ १५-१७ ॥

अथ वाजीकरणम् ।

येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः ॥
व्रजेच्चाप्यधिकं येन वाजीकरणमेव तत् ॥ १८ ॥
यद्द्रव्यं पुरुषं कुर्याद्वाजीव सुरतक्षयम् ॥
तद्वाजीकरणं ख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैः ॥ १९ ॥

जिसप्रयोगसे मनुष्य घोडेकी सदृश और वारवार स्त्रियोंसे रमणकरसके उसको वाजीकरणकहते हैं ॥ १८ ॥ अथवा जो द्रव्य पुरुषको घोडेकी सदृश मैथुन शक्तीवाला बनादे उसको वाजीकरण कहते हैं ॥ १९ ॥

वाजीनामप्रकाशत्वात्तच्च मैथुनसंज्ञकम् ॥
वाजीकरणसंज्ञाभिः पुंस्त्वमेव प्रचक्षते ॥ २० ॥

वाजी अर्थात् घोडेका यहां प्रकाश न होनेसे वाजी शब्द मैथुन संज्ञक है वस जो पदार्थ मैथुनशक्तिको बढावे वह वाजीकरण है अथवा वाजी नाम प्रकाशक होनेसे मैथुनसंज्ञक है इस लिये कामशक्तिके वर्द्धक पदार्थ को वाजीकरण कहते है ॥ २० ॥

त्रिविध वाजीकरण ।

शुक्रस्रुतिकरं किंचित् किंचिच्छुक्रविवर्द्धनम् ॥
स्रुतिवृद्धिकरं किंचित् त्रिविधं वृष्यमुच्यते ॥ २१ ॥

वीर्यके निकालनेवाली, और वीर्यके वढानेवाली, तथा वीर्यक निकालने और वढानेवाली इस प्रकार वृष्य (वाजीकरण) तीन प्रकारका है ॥२१॥

नरो वाजीकरान्योगान्सम्यक्शुद्धो निरामयः ॥
सप्तत्यंतं प्रकुर्वीत वर्षादूर्ध्वं तु षोडशात् ॥ २२ ॥
नचैव षोडशादर्वाक् सप्तत्या परतो न च ॥
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥ २३ ॥
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या रोगाश्चातीवदुर्जयाः ॥
अकालमरणं च स्याद्भजतः स्त्रियमन्यथा ॥ २४ ॥

मनुष्यको चाहिये कि पहले भले प्रकार वमन विरेचनसे शुद्धदेह होकर सोलह १६ वर्षकी अवस्थासे ऊपर ७० सत्तर वर्षकी अवस्था पर्यन्त वाजीरण औषधियोंका सेवन करे । आयुकी कामनावाले मनुष्यको १६ वर्षकी अवस्थासे कम और ७० सत्तरसे ऊपर स्त्रीसंग न करना चाहिये जो इस कथनानुसार नही चलते उनको क्षय,अंडवृद्धि,उपदंश, प्रमेह आदि वडेदुर्जय घोररोग होजाते हैं वलिक अकालमृत्युको भी प्राप्त होतेंह ॥ २२–२४ ॥

विलासिनामर्थवतां रूपयौवनशालिनाम् ॥
नराणां बहुभार्याणां विधिर्वाजीकरो हितः ॥ २५ ॥
स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम् ॥
योषित्प्रसंगात्क्षीणानां क्लीवानामल्परेतसाम् ॥ २६ ॥
हिता वाजीकरा योगा प्रीत्यपत्यबलप्रदाः ॥
एतेऽपि पुष्टदेहानां सेव्याः कालाद्यपेक्षया ॥ २७ ॥

विलासी, धन रूप यौवनवाला, जिनके अनेक स्त्री हों, जो बुढा गये हों परंतु स्त्रीरमणकी इच्छा रखते हों, जो स्त्रियोंसे स्नेह रखते हों जो स्त्रीरमणसे क्षीण होगये हों,जो नपुंसक तथा अल्पवीर्य हों उनने पुरुषोंको

वाजीकरण योग हितकारी, और स्त्रियोंमें प्रीतिके देनेवाले तथा संतान और बलके देनेवाले होते हैं तथा स्वस्थ हृष्टपुष्ट मनुष्योंको भी अपने वीर्यकी रक्षाके लिये वाजीकरण पदार्थोंका समयानुसार सेवन करना चाहिये ॥ २५-२७ ॥

बुढापेके कारण।

पंथाः शीतं कदन्नं च वयोवृद्धाश्च योषितः ॥
मनसः प्रातिकूल्यं च जरायाः पंच हेतवः ॥ २८ ॥

बहुत रास्ता चलनेसे अत्यंत शीत सहनेसे, सडाबुसा अन्न खानेसे- वृद्धास्त्रीसे गमन करनेसे, मनमें सदैव शोक रहनेसे, इन पांच कारणोंसे मनुष्यको शीघ्र बुढापा आता है ॥ २८ ॥

वाजीकरण पदार्थ।

भोजनानि विचित्राणि पानानि विविधानि च ॥
वाक् श्रवणाभिरामा च त्वचः स्पर्शसुखावहाः ॥ २९ ॥
यामिनी सेन्दुतिलका कामिनी नवयौवना ॥
गीतं श्रोत्रमनोहारि ताम्बूलं मदिरा स्रजः ॥ ३० ॥
गंधा मनोज्ञा रूपाणि चित्राण्युपवनानि च ॥
मनसश्चाप्रतीघातो वाजीकुर्वन्ति मानवम् ॥ ३१ ॥

विचित्र भोजन अनेक उत्तम दूध शर्बत आसव आदि पीनेके पदार्थ, जो सुननेमें प्यारे प्रतीत हों ऐसे वचन, देहको सुख कारक सुंदर नरमवस्त्र आभूषण पूर्णचंद्रमासे शोभायमान रात्री, सर्वांगसुंदर नवयौवना स्त्री, कानों और मनको हरनेवाले सुंदर गीत, पानका बीडा, मद्य, फूलमाला, सुन्दर सुगन्ध मनको हरनेवाला सुंदर रूप सुंदर विचित्र बाग बगीचे, मनकी इच्छापूर्वक रहना अर्थात् जिससे मनको दुःख न हो, ये सब वाजी- (करण) कामको बढाने वाले) पदार्थ हैं ॥ २९-३१ ॥

शतावरीघृतम् ।

घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे दशगुणे पचेत् ॥
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तं तद्वृष्यमुच्यते ॥ ३२ ॥

१सेर गोघृत लेकर उसमे दश१० सेर सतावरका स्वरस,और दश१० सेर गौका दूध मिलाके पकावे फिर १० तोला पीपल,१०तोला शहद, २० तोला खांड, इन सबको मिलाकर इस घृतको दोतोला नित्य खाकर दूध पीवे तो वीर्यको वढावे और पुष्ट करे ॥ ३२ ॥

लघुवाजीसर्पिः ।

कल्केन वाजीगंधाया विपचेद् घृतमुत्तमम् ॥
चतुर्गुणमजाक्षीरं दत्त्वोद्धृत्याथ शीलिते ॥
सितां समां प्रदायाद्याद्बलपुष्टिविवृद्धये ॥ ३३ ॥

१ सेर उत्तम गोघृत, असगंधका कल्क १ सेर, वकरीका दूध ४ सेर इन सबको मिलाके घृत सिद्ध कर लेवे इसमे वरावरकी मिसरी मिलाकर नित्य सेवन करे तो वल और वीर्यको वढावे ॥ ३३ ॥

गोधूमादिघृतम ।

गोधूमांश्च पलशतं निःक्वाथ्य सलिलाढके ॥
पादावशेषे पूते च द्रव्याणीमानि दापयेत् ॥ ३४ ॥
गोधूमं मुंजातफलं माषद्राक्षापरूषकम् ॥
काकोली क्षीरकाकोली जीवंती सशतावरी ॥ ३५ ॥
अश्वगंधा सखर्जूरं मधुकं त्र्यूषणं सिता ॥
भल्लातकमात्मगुप्ता समभागानि कारयेत ॥ ३६ ॥
घृतप्रस्थं पचेदेकं क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम ॥
मृद्वग्निना च संसिद्धे द्रव्याण्येतानि निक्षिपेत् ॥ ३७ ॥

त्वगेला पिप्पली धान्यकर्पूरं नागकेशरम् ॥
यथालाभं विनिक्षिप्य सिताक्षौद्रपलाष्टकम् ॥ ३८ ॥
दुग्धेक्षुदंडेनालोड्य विधिवद्विनियोजयेत् ॥
शाल्योदनेन भुंजीत पिबन्मांसरसेन वा ॥ ३९ ॥
केवलस्य पिबेदस्य पलमात्रप्रमाणतः ॥
न तस्य लिंगशैथिल्यं न च शुक्रक्षयं व्रजेत् ॥ ४० ॥
बल्यं परं वातहरं शुक्रसंजननं परम् ॥
मूत्रकृच्छ्रप्रशमनं वृद्धानां चापि शस्यते ॥ ४१ ॥
पलद्वयं तदश्नीयाद्दशरात्रमतंद्रितः ॥ ४२ ॥
रमते दशरामाभिः पीत्वा चानुपिबेत्पयः ॥
अश्विभ्यां निर्मितं चैतद्गोधूमाद्यं रसायनम् ॥ ४३ ॥
जलद्रोणे तु गोधूमक्काथे तच्छेषमाढकम् ॥
मुंजातकस्य स्थाने तु तद्गुणं तालमुस्तकम् ॥ ४४ ॥
कल्कद्रव्यसमं मानं त्वगादेः साहचर्यतः ॥ ४५ ॥

सपेद गेहूका सत्त्व ५सेर लेकर वीससेर जलमें पकावे जव ५ सेर वाकी रहे तो इसको छान लेवे फिर आगे लिखी औषधियोंको कूटकर मिलावे। सपेद गेहूं मुंजातकफल, उड़द, दाख, फालसे, काकोली, क्षीरकाकोली जीवंती. शतावरी, असगंध, छुहारे, मुलठी, सोंठ, मिर्च, पीपल, मिसरी, मिलावे, कोचके वीज, प्रत्येक ६ मासे, गौका घी १ सेर, दूध चारसेर, इनको घृतपाकविधि मन्द आंचसे पकावे और दालचीनी, इलायची, पीपल धनियां, भीमसेनीकपूर प्रत्येक ६ मासे वारीक पीसकर पकते २ में डाल देवे।सिद्ध होनेपर छान लेवे और इसमें, ३२ तोला सहद, और ३२ तोला मिसरी मिलावे फिर इसको ईखके डंडेसे मथकर दूधमें मिलाके पीवे,

अथवा साली चावलोंके भातसे खाय, या मांसरससे पीवे, इसको दो तोला से ८ तोलातक बलके अनुसार खावे यदि यह अकेला पीना हो तो इसकी ४ तोलाकी मात्रा है । इसके सेवनसे लिंगमें शिथिलता नहीं होती, वीर्यक्षीणताको प्राप्त नहीं होता, यह बलको बढाताहै, वातरोगोंको शांत करता है, वीर्यको पैदाकर मूत्र कृच्छ्रको दूर करे, बूढे पुरुषोंके लिये परमोपयोगी है । दशरात्रि दूधके साथ सेवन करनेसे दश स्त्रियोंसे गमन करे, यह गोधूमादि रसायन अश्विनीकुमारने कहा है ॥ ३४-४२ ॥

वानरी गुटिका ।

बीजानि हि कपिकच्छोःकुडवमितानि तु स्वेदयेच्छनकैः
प्रस्थे गोभवदुग्धे दुग्धं यावद्भवेद्गाढम् ॥ ४६ ॥
त्वग्रहितानि च कृत्वा सूक्ष्मं संपेषयेत्तानि ॥
पिष्टिकायाश्च वटिकाः कृत्वा गव्ये पचेदाज्ये ॥ ४७ ॥
द्विगुणितशर्करया ता वटिकाः सपक्वया लेप्या ॥
वटिका माक्षिकमध्ये मज्जनयोगेऽखिलाःस्थाप्याः॥४८॥
पंचटंकमितास्तास्तु प्रातः सायं च भक्षयेत् ॥
अनेन शीघ्रद्रावीयो यश्च स्यात्पतितो ध्वजः ॥ ४९ ॥
सोपि प्राप्नोति सुरते सामर्थ्यमतिवाजिवत् ॥
नानेन सदृशं किंचिद्द्रव्यं वाजीकरं परम् ॥ ५० ॥

एक पाव कौंचके बीज लेकर १ सेर दूधमें पकावे, जब दूध गाढा होजावे तब उतारकर बीजोंका छिलका दूर करके इन बीजोंकी पीठी पीस लेवे फिर इस पीठीकी एक २ तोलाकी टिकिया बनाकर गोघृतमें पका लेवे फिर आधसेर खांडकी चासनी करके इन टिकियों पर बालूशाहीकी भांति चढादेवे, फिर इनको शहदमें डुबा देवे इनमेंसे नित्य १० मासे खाकर ऊपरसे गर्म दूध पीवे इसीतरह प्रातः और सायंकाल दोनों वख्त

खावे इसके प्रभावसे जिसका वीर्य शीघ्र निकल जाता और इंद्रिय शिथिल हो उसके सब विकार दूर होनेसे घोडेकी समान मैथुन करै इससे बढकर दूसरा वाजीकरण योग कोई नही है ॥ ४६–५० ॥

वाजीकरण शष्कुली ।

तिलाश्वगंधाकपिकच्छुमूलैर्विदारिका यष्टिकपिष्टयोगः ॥
आजेन पिष्टः पयसा घृतेन पक्वा भवेच्छष्कुलिकाऽतिवृष्या ।

काले तिल,असगंध,कौंचके बीज,विदारीकंद, मुलहठी,इन सबको समान भाग लेकर कपडछान करके, बकरी के दूधमें गूंधकर पूडी बनाकर बकरी के घीमें पका लेवे इनको मिसरी मिले दूधके संग खावे इनके खानेसे वीर्य पुष्ट हो शरीरमें बल आवे ॥ ५१ ॥

पायस ।

गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम् ॥
तथा गोधूमचूर्णं च सितामधुघृतान्वितम् ॥
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोऽपि किं पुनर्यदि यौवने ॥ ५२ ॥

जिसका बछडा बडाहो उस गौके दूधमें कनकका दलिया डालकर खीर बनावे फिर इस खीरमें घृत सहद मिसरी मिलाके खावे तो बूढा भी कामकी इच्छा करनेलगे और युवा अवस्थावाले करें तो आश्चर्य ही क्या है ॥ ५२ ॥

सितादिवृष्य योग ।

शर्करायास्तुलैका स्यादेका गव्यस्य सर्पिषः ॥
प्रस्थं विदार्याश्चूर्णस्य पिप्पल्याः प्रस्थ एव च ॥ ५३ ॥
अर्धाढकं तुगाक्षीर्याः क्षौद्रस्याभिनवस्य च ॥
तत्सर्वं मिश्रितं तिष्ठेन्मार्त्तिके घृतभाजने ॥ ५४ ॥

मात्रामग्निसमां तस्य प्रातःकाले प्रयोजयेत् ॥
एष वृष्यः परो योगः कंठ्यो बृंहण एव च ॥ ५५ ॥

मिसरी ४०० तोले, गौका शुद्ध घी, ६४ तोले, विदारी कंद ६४ तोले, पिप्पलीका चूर्ण १२८ तोले, उत्तम सहत १२८ तोले, इन सबको मिलाकर उत्तम चिकने मट्टीके वर्तनमे रक्खे, फिर जठराग्निका बलाबल विचारकर नित्य प्रातःकाल भक्षण करै । यह योग परमवृष्य (वीर्यवर्द्धक) कंठशोधक और सब रसादिधातुवोंको बढानेवाला है ॥ ५३--५५ ॥

योग्य दूध ।

गृष्टीनां वृद्धवत्सानां माषपर्णभृतां गवाम् ॥
यत्क्षीरं तत्प्रशंसंति बलकामेषु जंतुषु ॥ ५६ ॥

पहलौन व्याई गौ, जिसका बछडा बडा होगया हो और उडदोंके पत्ते चरती हो उस गौका दूध बल और वीर्यके बढानेमें परमोपयोगी होता है ॥ ५६ ॥

रसाला ।

अर्द्धाढकं च शुचिपर्युषितस्य दध्नः
खंडस्य षोडशपलानि शशिप्रभस्य ॥
सर्पिः पलं मधुपलं मरिचार्द्धकर्ष
सुंठ्यास्तथार्द्धपलमर्द्धपलं चतुर्णाम् ॥ ५७ ॥
शुक्ले पटे वरवधूमृदुपाणिघृष्टा
कर्पूरगंधसुरभिर्नवभांडसंस्था ॥
एषा वृकोदरकृता सुरसा रसाला
या स्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥ ५८ ॥

गाढा मीठा मलाईदार दही २ सेर, सफेद बूरा १ सेर, घी गौका १ छटांक, सहत १ छटांक, काली मिरच ६ मासे, इलायची, दालचीनी,

नागकेशर, छः छः मासे इनको बारीक करके दहीमे डालकर फिर स्वच्छ सफेद बारीकवस्त्रमें स्त्री नरमहाथसे छाने फिर इसको भीमसेनी कपूरकी गंधसे सुवासितकर मट्टीके नये पात्रमें रक्खे। यह भीमसेनका बनाया रसाला भगवान् मधूसूदनने भोग लगाया है। यह परम वृष्य है ॥ ५७-५८ ॥

अश्वगंधादिघृत ।

अश्वगंधा प्रस्थमेकं दुग्धं चैवाढकद्वयम् ॥
घृतप्रस्थमितं दद्याच्छनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ ५९ ॥
त्रिकटुकं चतुर्जातं विडंगं जातिपत्रकम् ॥
बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रावृद्धदारुकम् ॥ ६० ॥
पलैकञ्च प्रदातव्यं लोहं वंगं तथाभ्रकम् ॥
प्रस्थार्द्ध माक्षिकं दद्यात्प्रस्थार्धा शर्करा शुभा ॥ ६१ ॥
सर्वमेतद्विनिक्षिप्य स्निग्धे भांडे निधापयेत् ॥
द्वौ कालौ भक्षयेन्नित्यं समीक्ष्याग्निबलं यथा ॥ ६२ ॥
अर्द्यं वातं हनुस्तंभं संधिवातं कटिग्रहम् ॥
गर्भप्रसवजान्दोषाञ्छुक्रदोषांस्तथैव च ॥ ६३ ॥
सर्ववातान्निहन्त्येतद्यथोन्मत्तगजं हरिः ॥
अश्वगंधादिविख्यातं घृतं वाजीकरं परम् ॥ ६४ ॥

असगन्ध १ सेर दूध ८ सेर शुद्ध गोघृत १ सेर, इनको मन्द अग्निसे धीरे २ पकावे और जब घृत पाकपर आवे तब इसमें सोंठ, मिरच, पीपल, चतुर्जात बायविडंग, जवत्री, बला अतिबला, गोखरु, विधारा इन प्रत्येकका चूर्ण चार चार तोला, लोहभस्म, वंगभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येक ४ तोला, शहद ३२ तोला, उत्तम मिसरी ३२ तोला, इन सबको डालकर घृतको उतारलेवे फिर चिकने वर्तनमें भरकर रखदेवे और अग्निका बलाऽबल विचारकर दोनों समय इसमेंसे भक्षण करै इसके सेवनसे, अर्दित वात, हनुस्तम्भ,

संधिगतवायु, कटिग्रह (कमरका दर्द) यह सब दूर हों और गर्भसम्बन्धी रोग तथा प्रसवके रोग, वीर्यके सब विकार, सब किस्मके वातरोग, इन सबको ऐसे जीतलेता है जैसे सिंह मतवाले हाथीको भगादेता है यह अश्वगन्धादिघृत परमवाजीकरण है ॥ ५९-६४ ॥

माषादिघृत ।

माषाणामात्मगुप्तानां बीजानामाढकत्रयम् ॥
जीवकर्षभकौ मेदे वीरावृद्धी शतावरी ॥ ६५ ॥
मधुकं चाश्वगंधा च साधयेत्कुडवोन्मितम् ॥
तमेवास्मिन्घृतप्रस्थे द्द्याद्दशगुणं पयः ॥ ६६ ॥
विदारिणो दशप्रस्थं प्रस्थमिक्षुरकस्य च ॥
दत्त्वा मृद्वग्निना साध्यं सिद्धं सर्पिर्निधापयेत् ॥ ६७ ॥
शर्करायास्तु गोक्षीर्याः क्षौद्रस्य च पृथक् पृथक् ॥
भागांश्चतुष्पलांश्चात्र पिप्पल्याश्च द्वयं पलम् ॥ ६८ ॥
बलपूर्वमतो लीढ्वा ततोन्नमुपयोजयेत् ॥
यदीच्छेदक्षयं शुक्रं शेफसश्चोत्तमं बलम् ॥ ६९ ॥

कौंचके वीज ४ सेर, उड़द ४ सेर, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धी, वृद्धी, शतावर, मुलहटी, असगन्ध प्रत्येक १६ तोले लेकर आठगुने पानीमें पकावे और जब पकते २ चौथाई रहे तब उतारकर छान लेवे । फिर इसमें घृत १ सेर, दूध १० सेर, विदारीकंदका स्वरस १० सेर, डालकर पकावे जब पकते २ घृतमात्र शेष रहे तो इसमें मिसरी, वंशलोचन, सहद, प्रत्येक सोलह १६ तोले, पीपलका चूर्ण ८तोले, मिलाकर चिकने पात्रमें रखदेवे इसमेंसे अग्निके बलानुसार खाकर ऊपरसे मूंग चावल घृत यह इच्छापूर्वक खावे इसके प्रभावसे वीर्य कभी क्षय नहीं होता । और लिंगमें अपूर्व ताकत आजाती है ॥ ६५-६९ ॥

महासुगंधितैलम् ।

कर्पूरागरुचोचपत्रनलिकालाक्षासटीधातुकी
पुष्पैः सप्तदलैलवालुसरलैः शैलेयमांसीप्लवैः ॥
एलाकुंकुमरोचनादमनकैः श्रीवासजातीफलैः
कंकोलक्रमुकोच्चटामदमुराकांतालवंगामयैः ॥ ७० ॥
वालोशीरहरेणुकामलयजस्थौणेयचंडानखै-
र्जातीकोशकुलीरपद्मकनतैः स्पृक्कान्वितैः पालिकैः ॥
लाक्षायोजनवल्लिलोध्रसलिलैस्तैलं विपाच्याढकं
तैलाभ्यक्ततनुर्जरन्नपि भवेत्स्त्रीणां परं वल्लभः ॥ ७१ ॥
शुक्राढ्यो द्युतिमाननल्पतनयः षण्ढोपि रत्युत्सुको
वंध्या गर्भवती भवेदपि तथा वृद्धापि सूते सुतम् ॥
कण्डूस्वेदविचर्चिकामलहरं दौर्गंध्यकुष्ठापह-
माश्विभ्यां परिकीर्तितं बहुगुणं तैलं सुगंधं महत् ॥ ७२ ॥

कपूर. अगर. दालचीनी, पत्रज, नलिका, लाख, कचूर, धावेके फूल, सतवन. एलवालुक, सुगन्धद्रव्य, सरल, छड, जटामांसी, सुगंधवाला, इलायची, केसर, गोरोचन, दोनो प्रकारके मरुवा, श्रीवास, जैफल, कंकोल, सुपारी. सफेद चिरमिटी. कस्तूरी, मुरा, प्रियंगु, लौंग, कूठ, नेत्रवाला, खस. रेणुका, चन्दन, थुनेर, गठौना, नख, जावत्री, काकडासिंगी, पद्माख, तगर स्पृक्का (सुगन्धद्रव्य), पालिक, लाख, मजीठ, लोध प्रत्येक ४ तोला लेकर इनका काढा करे फिर अष्टावशेष रहनेपर इस काढेको छानकर इसमें ८ सेर शुद्ध तिलतैल मिलाकर पकावे मन्द २ पकावे जब पानी जलकर तैलमात्र शेष रहे तो उतारकर छान लेवे, इस तैलकी मालिश करनेसे बुढापेमें भी जवानकी तरह स्त्रियोंका प्यारा हो, शुक्रयुक्त, कांतिमान, बहुतसे पुत्रोंवाला हो. नपुंसक भी मैथुनाभिलाषी हो, इस तैलके नित्य सेवनसे

वंध्या भी गर्भवती हो, वृद्धास्त्रीभी पुत्रजने, और देहकी खुजली, पसीना, विचर्चिका, मैल, देहकी दुर्गंधि, फोड़, यह सब नष्ट हों यह अश्विनीकुमारका बनाया महासुगंधि तैल है ॥ ७०-७३ ॥

चन्दनादितैलम् ।

चंदनादेर्विधिं तात चंदनं रक्तचंदनम् ॥
पतंगमथ कालीयागरुकृष्णागरूणि च ॥ ७४ ॥
देवद्रुमः ससरलः पद्मकं क्रमुकोपि च ॥
कर्पूरो मृगनाभिश्च लताकस्तूरिकापि च ॥ ७५ ॥
सिल्हकः कुंकुमं गव्यं सजातीफलमेव च ॥
जातीपत्रं लवंगं च सूक्ष्मैला महती तथा ॥ ७६ ॥
कंकोलं फलकं त्वक्च पद्मकं नागकेशरम् ॥
वालकं च तथोशीरं मांसी दारुसितापि च ॥ ७७ ॥
मुरा कर्चूरकश्चापि शैलेयं भद्रमुस्तकम् ॥
रेणुकश्च प्रियंगुश्च श्रीवासो गुग्गुलुस्तथा ॥ ७८ ॥
लाक्षा नखश्च रालश्च धातकीकुसुमं तथा ॥
ग्रंथिपर्णं च मंजिष्ठा तगरं सिक्थकस्तथा ॥ ७९ ॥
एतानि शाणमानानि कल्कीकृत्य शनैः पचेत् ॥
तैलप्रस्थमितं सम्यगेतत्पात्रे शुभे क्षिपेत् ॥ ८० ॥
अनेनाभ्यक्तगात्रस्तु वृद्धोऽशीतिसमोपि यः ॥
सुखी भवति शुक्राढ्यः स्त्रीणामत्यंतवल्लभः ॥ ८१ ॥
वंध्यापि लभते गर्भं षण्ढोपि तरुणायते ॥
अपुत्रः पुत्रमाप्नोति जीवेच्च शरदां शतम् ॥ ८२ ॥

चंदनादि महातैलं रक्तपित्तं क्षयं ज्वरम् ॥
दाहं प्रस्वेददौर्गंध्यं कुष्ठं कंडूं विनाशयेत् ॥ ८३ ॥

हे पुत्र! अब चंदनादि तैलकी विधिसुनो।सफेद चन्दन, लाल चंदन,पतंग, हरिचंदन,अगर, काला अगर,देवदार,सरल, पद्माख, सुपारी,कपूर, कस्तूरी, लता कस्तूरी, शिलारस, केशर, गौका घी,जायफल, जावित्री, लवंग, छोटी इलायची, वडी इलायची, कंकोल, तज, कमल, नागकेशर, सुगंधबाला, खस, जटामांसी, देवदारु, दालचीनी, मुरा, कचूर, छड, सिलाजीत, भद्रमोथा, रेणुका, प्रियंगु पुष्प, श्रीवास, गुग्गल, लाख, नख, राल, धावेके फूल, गठौना, मंजीठ, तगर, मोम, इन सबोको चार चार मासे लेकर कल्क वनावे फिर स्वच्छ धुली तिलीका तैल १ सेर लेकर उसमें वह कल्क डाल कर तैलपाक विधिसे इस तैलको वनाकर वोतलमे भरकर रखदेवे । इसकी मालिशसे अश्शीवर्षका बूढा अत्यंतवीर्यवाला होकर स्त्रियोंका प्यारा हो और सुखी रहे, वंध्याभी पुत्रवती हो, नपुंसकभी तरुण हो, जिसके संतान न होती हो संतान होय, पूर्ण सौ वर्षकी आयु हो, यह चंदनादि तैल, रक्त पित्त, क्षय, ज्वर,दाह,पसीना, दुर्गंध, कोढ,खाज,इनको भी नष्ट करताहै ७४–८३

द्राक्षासवम् ।

द्राक्षातुलामुपादाय जलद्रोणे चतुष्टये ॥
पक्त्वा चतुर्थशेषं तु तं कषायमुपाहरेत् ॥ ८४ ॥
दत्त्वा गुडतुलां तत्र धातकीप्रस्थमेव च ॥
निखात्य स्थापयेद्भूमौ यावतासौ वरो भवेत् ॥ ८५ ॥
ततस्तत्सारमादद्याद्वारुणीयंत्रतः शनैः ॥
पुनस्तं वारुणीयंत्रे समारोप्य तदाहरेत् ॥ ८६ ॥
एवं तु दशधा सारं पुनश्च विधिना हरेत् ॥
ततस्तस्मिंश्चतुर्जातं जातीकोशं लवंगकम् ॥ ८७ ॥

कर्पूरं कुंकुमं चापि यथालाभं नियोजयेत् ॥
तं यथाग्निबलं मर्त्यः पिबेत्सर्वक्षयापहम् ॥ ८८ ॥
स्निग्धेन भोजनेनैव आसवं विधिना पिबेत् ॥
नरो नवतिवर्षोऽपि पौरुषेण महीयते ॥ ८९ ॥

४ सेर मुनक्काको १६ सेरपानीमें पकावे जब ४ सेर बाकी रहे तो उतार लेवे फिर इसमें ४ सेरगुड़, और १ सेर धावेके फूल डालकर एक मट्टीके वर्तनमें भरकर करडीमें दवा देवे जब वह सडकर उफानपर आवे तो वारुणीयंत्रद्वारा अर्क खेचलेवे फिर उस अर्कको दुवारा वारुणीयंत्रद्वारा खेंचे ऐसेही वारवार उसीको दसवार चुआवे फिर चतुर्जात, जावित्री, लौंग, भीमसेनी कपूर, केशर यह सब अनुमान माफिक मिलावे फिर इसको जठराग्निका वलावल विचार कर सेवन करै तो यह क्षय (यक्ष्मा) इनको दूर करे इसको सुंदर चिकने भोजनके साथ विधिपूर्वक उचितमात्रासे पीवे तो ९० वर्षका बूढाभी पुरुषार्थका अभिमान करने लगे ॥८४-८९॥

राक्षसयाग ।

वस्तांडं सर्पिषा भृष्टं कणासैंधवमिश्रितम् ॥
भक्षयेत्सततं यस्तु अंगनामदभंजकः ॥ ९० ॥

वकरेके आंडको घृतमे भूनकर उसमें सेंधानमक और पीपल मिलाके भक्षण करे इसके निरंतर खानेसे वडी मदवती स्त्रियोंके मदको भंजन करने वाला पुरुष हो जाता है ॥ ९० ॥

मद्यमांसयुता योगा म्लेच्छानां शोभनाः स्मृताः ॥
निंदनीया द्विजातीनामभक्ष्या इति मे मतिः ॥ ९१ ॥

मद्यमांसके मेलके जो योग है वह म्लेच्छोंके लियेही शोभायमान है। द्विजातियोंके लिये यह योग अभक्ष्य है और इनका स्पर्श करनाभी निंदनीय है इस विषयमें हे शिष्य ! हमारा यही मत है ॥ ९१ ॥

वाजीकरण पूपालिका ।

तिलमाषविदारीणां शालीनां चूर्णमेव च ॥
पौंड्रकेक्षुरसेनार्द्रं मर्दितं सैंधवान्वितम् ॥ ९२ ॥
वाराहमेदसा युक्तां घृतेनोत्कारिकां पचेत् ॥
तां भक्षयित्वा पुरुषो गच्छेन्नारीं यथेच्छया ॥ ९३ ॥

तिल, उडद, विदारीकंद, शाली चावल, इन चारोका वारीक चूर्ण पौंडा नामक ईखके रसमे गूंध लेवे और अनमान माफिक इसमें सेंधानमक मिलावे और वराहकी मेदका मोन डाले फिर इसको उत्तम घृतमें पूडी वना लेवे यह पूडी परम वाजीकरण है इसको खाकर पुरुष यथेच्छ स्त्री गमन करसक्ता है ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

म्लेच्छ योग ।

क्षीरेण बस्तांडयुजा शृतेन
संप्लाव्य कामी च बहूंस्तिलान्यः ॥
सुशोषितानत्तिपिबेत्पयश्च
तस्याग्रतः किं चटकः करोति ॥ ९४ ॥

बकरेके आंडोंको दूधमें डालकर पकावे और इस दूधकी भावना तिलोंको देवे इस प्रकार कई भावना देकर सुखालेवे फिर दो तोला तिल खावकर ऊपरसे मिसरी मिला धारोष्णदूध पीवे तो यह मनुष्य घरके चिडेसे भी अधिक मैथुन करे ॥ ९४ ॥

पुरुषार्थदायकबस्तिकर्म ।

जीवंत्यतिबलामेदाकाकोलीद्वयजीरकैः ॥
साभयातिक्तकृष्णाकाकनासारसायनैः ॥ ९५ ॥
स्वयंगुप्तासठीशृंगीजीवकशारिवाद्वयैः ॥
सहचरखराविश्वपिप्पलीमूलभर्जनैः ॥ ९६ ॥

पिष्टैस्तैलं घृतं पक्वं क्षीरेणाष्टगुणेन च ॥
दत्तमनुवासनैर्ज्ञेयं शुक्राग्निबलवर्द्धनम् ॥ ९७ ॥
बृंहणं वातपित्तघ्नं गुल्मानाहहरं परम् ॥
नस्यैः पानैश्च संयुक्तमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥ ९८ ॥

जीवंती, अतिवला, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली दोनो जीरे, हरड, पीपल, काकनासा, वायविडंग, कोंचके बीज, (पुनर्नवा–या कचूर) काकडासिंगी, जीवक, ऋषभक, दोनो सारिवा, सहचर, (वीयावांसा), त्रिफला, सोंठ, पिप्पलीमूल, इन सबका चूर्न करके प्रथम थोडा घृतमें भून लेवे फिर घृत अथवा तेल,–या तेल घृत दोनोंमे उपरोक्त भुने चूर्णका कल्क मिलावे फिर तैलघृतसे आठगुना दूध डालकर पकावे । इसके द्वारा अनुवासनवस्ति देनेसे वीर्यकी, तथा अग्नि और बलकी वृद्धि होतीहै यह इस प्रकार सिद्ध किया घृत, या तैल पुष्टिकारक वातपित्तनाशक गुल्म, अफारा, इनको दूर करता है इसको यदि नस्यमें तथा पीनेमें उपयोग किया जाय तो ऊर्ध्व जत्रुवोंके सब रोग दूरहोते हैं ॥ ९५–९८ ॥

वृष्यम् ।

यत्किंचिन्मधुरं स्निग्धं जीवनं तर्पणं गुरु ॥
हर्षणं मनसश्चैव सर्वं तद्वृष्यमुच्यते ॥ ९९ ॥

जो पदार्थ, मधुर, चिकने, प्राणरक्षक, तृप्तिकारक, भारी, तथा मनमें आनंद देनेवाला है उन सबको वृष्य कहतेहैं ॥ ९९ ॥

सामान्यत इमे योगाः पुरुषार्थप्रदायकाः ॥
कथिता विधिवत्तात क्लैव्यानां हितकाम्यया ॥१००॥
अथाग्रे यद्वदिष्यामि क्रमशश्च तरंगके ॥
तत्त्वया प्रश्नक्रमतः श्रोतव्यं हि विभागशः ॥१०१॥

गुरुबोले हे तात! सामान्यतासे नपुंसकोंके कल्याणके लिये पुरुषार्थ दायक योग हम कहचुके हैं वह तुमने विधि पूर्वक सुन लिये। अब जो कुछ हम आगे तरंग प्रतितरंग कहेंगे। वह तुम क्रमपूर्वक नपुंसकसंबंधी हरेक विषयमें प्रश्न करके उत्तररूपसे सुनते जाओ ॥ १००-१०१ ॥

इति प्रबोधितः शिष्यस्तरंगेऽस्मिश्चिकित्सिते ॥
चूर्णपाकरसांस्तैलान्पृष्टवान् क्रमशः पृथक् ॥१०२॥

इस प्रकार गुरुमुखसे इस चिकित्सा तरंगमें प्रबोधन किया हुवा शिष्य फिर तरंग प्रति तरंग नपुंसकताके नाशक और वीर्य वर्द्धक चूर्ण, पाक, रस, तैल पूछने लगा सो आगे क्रमसे लिखे जावेगे ॥ १०२ ॥

श्री वै० प० प० रामप्रसाद उपाध्यायप्रणीत नपुकामृतार्णवे
नपुमकचिकित्सित नाम द्वितीयस्तरगः ॥ २ ॥

अथ तृतीयस्तरंगः।

वाजीकरणादिचूर्णवर्णनम्।

शिष्यउवाच।

अथ चूर्णप्रकारं हि खंडादिदोषनाशनम् ॥
वीर्यवृद्धिकरं ब्रूहि वाजीकरणमुत्तमम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त शिष्य बोले हे गुरो! नपुंसकता आदि दोषोंके हरनेवाले वीर्यको वढानेवाले और उत्तमवाजीकरणकर्त्ता चूर्णोंका कथन कीजिये?

गुरुरुवाच।

शृणु चूर्णविधानं हि वीर्यवृद्धिकरं परम् ॥
क्षीणमेहादिशमनमायुरारोग्यदं तथा ॥ २ ॥
अत्यंतशुष्कं यद्द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम् ॥
तस्याच्चूर्णं रजक्षोदस्तन्मात्राकर्षसम्मिता ॥ ३ ॥

इस प्रश्नको सुनकर गुरु बोले हे तात! वीर्यके बढानेवाले और क्षीणता तथा प्रमेह आदि घोर व्याधियोंके शमन करनेवाले आयु तथा आरोग्यताके बढानेवाले चूर्णोंका कथन करता हूं तुम सावधान होकर सुनो ॥ २ ॥ अत्यन्त सूखी हुई औषधियोंको वारीक पीसकर कपड़ेमें छान लेवे उस छनेहुवे रजको चूर्ण रज और क्षोद भी कहते हैं इसकी सामान्यतासे मात्रा (खोराक) १ तोलाकी कही है ॥ ३ ॥

१ गोक्षुरादिचूर्णम् ।

गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली वानरी नागबलाऽतिबला च ॥
चूर्णमिदं पयसा निशि पीतं वाजिकरं परमं मनुजानाम् ४

गोखरू, तालमखाना, शतावर, कौंचके बीज, गंगेरण, और खरेंटी, इन सबका चूर्ण करके बराबरकी मिसरी मिलाके दो तोला चूर्ण रात्रीके समय भक्षण करके ऊपरसे मिसरी मिला गर्म अथवा धारोष्ण दूध पीवे तो यह चूर्ण परम वाजीकर्ता और वीर्यके बढानेवाला है ॥ ४ ॥

२ अथवा ।

त्रिकटकात्मगुप्तानां बीजचूर्णं सशर्करम् ॥
क्षीरेण यः पिबेद्गच्छेद्दशवारं निरंतरम् ॥ ५ ॥

गोखरू, और कोंचके बीज इन दोनोंके चूर्णको मिसरी मिले गर्म दूध से जो पुरुष निरन्तर (हमेशा) सेवन करता है वह नित्य स्त्रीसे दशवार रमण करसक्ता है ॥ ५ ॥

३ नारसिंहचूर्णम् ।

शतावरीरजःप्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च ॥
वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पंचविंशतिः ॥ ६ ॥
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैव तु ॥
तिलानां शोधितानां च प्रस्थं दद्यात्सुचूर्णितम् ॥ ७ ॥

त्र्यूषणस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्ततिः ॥
माक्षिकं शर्करार्धेन माक्षिकार्धेन वै घृतम् ॥ ८ ॥
शतावरीसमं देयं विदारीकंदजं रजः ॥
एतदेकीकृतं चूर्णं स्निग्धे भांडे निधापयेत् ॥ ९ ॥
पलार्धमुपयुंजीत यथेष्टं चापि भोजनम् ॥
मासैकमुपयोगेन जरां हंति रुजामपि ॥ १० ॥
बलीपलितखालित्यं मेहपांड्वादिपीनसान् ॥
हंत्यष्टादशकुष्टानि तथाष्टावुदराणि च ॥ ११ ॥
भगंदरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसीं सहलीमकाम् ॥
क्षयं चैव महाश्वासान्पंचकासान्सुदारुणान् ॥ १२ ॥
अशीतिवातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पित्तजान् ॥
विंशतिश्लेष्मकांश्चैव संसृष्टान्सान्निपातिकान् ॥ १३ ॥
सर्वानर्शोगदान्हंति वृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥
वीर्यवान्रमते नार्य्या दशवारं निरंतरम् ॥ १४ ॥
पुत्रान् संजनयेद्वीरान् नरसिंहनिभांस्तथा ॥
नारसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं परम् ॥ १५ ॥

शतावरका चूर्ण १ सेर । दक्षिणीगोखरूका चूर्ण १ सेर । वाराहीकंदका चूर्ण १ सेर । गिलोय सत्व १। सेर । शुद्ध भिलावे २सेर । चित्रककी छाल अढाईपाव । शुद्ध तिल १ सेर । त्रिकुटा आधसेर । मिसरी ४ ॥ सेर । सहद २।सेर । गोघृत एकसेर दोछटांक । इन सबको कूटछान मिला करके चिकने शुद्धपात्रमें भरकर रख देवे इसमेंसे दो तोला प्रातःकाल भक्षण करे और यथेच्छभोजन किया करे इसके एकमहीनेके सेवनसे बुडापेके रोग दूर हों देहमें गुलजटपडना सफेदबाल होना, गंज, प्रमेह, पांडु, पीनस,

१८ कोढ, ८ उदररोग, भगंदर, मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी, हलीमक, क्षयरोग, महाश्वास, पांच प्रकारकी खांसी, ८० वायुके रोग, ४० पित्तरोग, २० कफके रोग, मिश्रित और सन्निपातके रोग, सब प्रकारके बवासीर, इन सब रोगोंको नष्ट करे, जैसे इंद्रका वज्र वृक्षोंको नष्ट करता है। इसके सेवनसे वीर्य अत्यंत बढकर मनुष्य स्त्रियोंसे नित्यप्रति १० वार गमन करसक्ता है। इसके प्रभावसे मनुष्य शेरकी समान पराक्रमवाले शूरवीर पुत्रोंको उत्पन्न करे यह नारसिंह चूर्ण मनुष्योंके सब रोग नष्ट करने वाला है॥ ६–१५ ॥

४ मुसलीचूर्णम् ।

मुसलीकंदचूर्णं च गुडूचीसत्वसंयुतम् ॥
वानरीगोक्षुराभ्यां च शाल्मलीशर्करामलैः ॥
आलोड्य घृतदुग्धाभ्यां भक्षयेत्कामवृद्धये ॥ १६ ॥

मुसलीस्याह, मुसलीसफेद, विदारीकंद, गिलोयका सत्त्व, कौंचके बीज, गोखुरू, शेंवलाकी मुसली, इनके चूर्णमें बराबरकी शुद्धमिसरी मिलावे फिर इसमेंसे १॥ तोला या दो तोलाकी फक्की लेकर ऊपर मिसरी और घी मिला हुवा दूध पीवे तो वीर्य पुष्ट होकर कामकी वृद्धि होवे ॥ १६ ॥

५ वाराहीकन्दचूर्णम् ।

वाराहीकंदभृंगाभ्यां पलं षोडशचूर्णितम् ॥
किंचिदाज्येन भृष्टं च सितायुक्तं च कारयेत् ॥ १७ ॥
त्वक्पत्रनागपुष्पाभ्यां केशरं मधुयष्टिका ॥
एतानि पलमात्राणि शर्करासममेव च ॥ १८ ॥
आलोड्य घृतदुग्धाभ्यां पिबेत्कामं निशामुखे ॥
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां बहुरामासु रम्यते ॥ १९ ॥

वाराहीकंदके चूर्ण और भांगरेके चूर्णको १६ सोलहपल लेकर किंचित घीमे भूनलेवे फिर इसमें बराबरकी मिसरी मिलाकर इसमेंसे १तोला चूर्ण खाकर ऊपरसे दूध पीवे तो कामशक्ति बलवान् होती है ॥ १७ ॥ अथवा

दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, मुलहठी, इनको चार २ तोला लेकर बराबरकी शुद्धचीनी मिलावे फिर घृत और मिसरीमिले दूधसे इसका सेवन करे अथवा इस चूर्णको उपरोक्त विदारीकंदके चूर्णमेंही मिलाकर भक्षण करके दूध पीवे ॥ १८ ॥ १९ ॥

६ अन्यच्चूर्णम् ।

स्वयंगुप्तेक्षुरकयोर्बीजचूर्णं सशर्करम् ॥
धारोष्णेन नरः पीत्वा पयसा न क्षयं व्रजेत् ॥ २० ॥

कौंचके वीज, तालमखाने, इनके चूर्णमें समभाग मिसरी मिलाकर धारोष्ण दूधसे सेवन करे तो उस मनुष्यका वीर्य कभी क्षीण न हो सदैव पुष्ट रहे ॥ २० ॥

७-८ उच्चटादिचूर्णम् ।

उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणोत्तममुच्यते ॥
शतावर्युच्चटाचूर्णं पेयमेव सुखार्थिना ॥ २१ ॥

इसीप्रकार उटंगणके वीजोंका चूर्णकर मिसरी मिलाकर धारोष्ण दूध संग खावे तो वीर्य पुष्ट हो। अथवा शतावरकी और उटंगण इन दोनोंके चूर्णमें मिसरी मिलाकर १॥ तोला या दो तोलाकी फंकी लेकर धारोष्ण (तत्काल निकालादूध जिसमेंसे निकालनेकी गर्माई दूर न हुई हो) दूधमें मिसरी मिलाके पीवे तो वीर्यकी वृद्धि होकर कामशक्ति बलवान् हो॥२१ ॥

९ मधुयष्टीचूर्णम् ।

कर्षं मधूकचूर्णस्य घृते क्षौद्रसमन्विते ॥
प्रयुंक्ते यः पयश्चानु नित्यवेगः स ना भवेत् ॥ २२ ॥

एकतोला मुलहटीके चूर्णको छमासे घी और १ तोला शहद मिलाकर चाटकर ऊपरसे मिसरी मिला गर्म दूध पीवे तो वह मनुष्य सदैव वीर्यके वेग युक्त रहता है ॥ २२ ॥

१० विदारीकंदचूर्णम्।

चूर्णं विदार्याः सुकृतं स्वरसेनैव भावितम्॥
सर्पिःक्षौद्रयुतं लीढ्वा उष्णदुग्धं ततः पिबेत्॥ २३॥

विदारीकंदके चूर्णको विदारीकंदके रसकी भावना देकर सुखाता जावे इसी प्रकार २१ भावना देकर इसमेंसे १ तोला चूर्णमें १ तोला घृत और दो तोला शहद मिलाकर भक्षण करे ऊपरसे मिसरी मिला गर्मदूध पीवे तो पुरुष अनेक स्त्रियोंसे यथेच्छ गमन कर सक्ता है॥ २३॥

११ आमलकीचूर्णम्।

एवमामलकं चूर्णं स्वरसेनैव भावितम्॥
शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तं लीढ्वा पयः पिबेत्॥
एतेनाशीतिवर्षोपि युवेव परिहृष्यते॥ २४॥

इसी प्रकार नवीन सूखे आमलोंके चूर्ण आमलोंके रसकी २१ भावना देकर मिसरी शहद घी मिलाकर खावे ऊपरसे गर्म दूध पीवे तो अस्सीवर्षका बूढाभी जवानके समान मैथुन करे॥ २४॥

१२ शतावर्यादिचूर्णम्।

शतावरीनागबलाविदारी-
त्रिकंटकैरामलकीफलान्वितैः॥
विचूर्णितैः पंचभिरेकशः पृथक्
प्रकल्पितैर्वा घृतमाक्षिकप्लुतैः॥ २५॥
इति प्रयोगाः षडिमे भिषग्वरै-
रुदीरिताः शर्करया समन्विताः॥
नृणां मदांधप्रमदोपसर्पिणां
प्रधानधातोरतिरेककारणम्॥ २६॥

शतावर, खरैटी, विदारीकंद, गोखरू, आमले, इन सबका अलग २ अथवा सबका एकत्र चूर्ण करके इसमे घी और शहद तथा मिसरी मिलावे यह वैद्योने पांच अलग २ और एक सबको मिलाकर छः प्रयोग कहेहैं यह छहो प्रयोग कामदेवसे मदांधकर्ता और स्त्रीरमणकर्ता मनुष्योंके वीर्य के वढाने वाले हैं ॥ २५–२६ ॥

१३ गोखरूचूर्ण ।

शमयति गोक्षुरचूर्णं छागीक्षीरेण साधितं समधु ॥
भुक्तं क्षपयति षांढ्यं यज्जनितं कुप्रयोगेण ॥ २७ ॥

गोखरूका ५ टंक चूर्ण ७ टंक शहदमें मिलाकर चाटकर ऊपरसे वकरीका गर्मदूध मिसरी मिलाके पीवे तो हस्तमैथुन आदिकी नपुंसकता दूर हो ॥ २७ ॥

१४ मुसल्यादिचूर्णम् ।

मुसलिकोकिलगोक्षुरचूर्णकं
शशिविलोचनराममितं पचेत् ॥
पयसि प्रातरिदं यदि कोष्णके
सुसितया खलु टंककषट्कया ॥ २८ ॥
त्रिगुणसप्तदिनं परिभक्षयन्
छतवया अपि कांक्षति कामिनीम् ॥
किमिह चित्रमुदित्त्वरयौवनः
शशिमुखीं शयनान्न जहाति सः ॥ २९ ॥

कालीमुसली, तालमखाने, गोखरू, ए क्रमसे एक तथा दो और तीन भाग लेवे (काली मुसली ३ तोला, तालमखाने ६ तोला, गोखरू ९ तोला, फिर इनका चूर्णकर प्रातःकाल मिसरी मिले गर्म दूधसे नित्य ६ मासे खावे इसप्रकार २१ दिन भक्षण करनेसे १०० वर्षका वृढा मनुष्य भी स्त्री

रमणकी इच्छा करने लगे, फिर यदि चढीहुई जवानीवाला मनुष्य स्त्रीसंग की इच्छा करे तो आश्चर्यही क्या है ॥ २८–२९ ॥

१५ अन्य शतावर्यादि चूर्ण ।

शतावरीगोक्षुरकाश्वगंधापुनर्नवानागबलामुसल्यः ॥
घृतेन खंडेन तु भक्षणीयाः क्षीणा नरा नागबला भवंति ॥ ३० ॥

शतावर, गोखरू, असगन्ध, पुनर्नवा, खरटी, मुसली, इन सबका चूर्ण कर घी और मिसरी मिलाके गर्मदूधसे भक्षण करे तो क्षीण मनुष्यभी हाथीके समान पुरुषार्थी होवे ॥ ३० ॥

१६ अश्वगन्धादिचर्णम् ।

अश्वगंधा दशपला तन्मात्रो वृद्धदारुकः ॥
कर्षकं पयसा पीत्वा नारीभिर्नैव तुष्यति ॥ ३१ ॥

असगन्धनागौरी १० पल (४० तोला), विधायरा दश पल इन दोनोंका वारीक चूर्णकर बराबरकी मिसरी मिलावे फिर इसमेंसे दो तोला गर्म अथवा धारोष्ण दूधके साथ खाय तो धातु पुष्ट होकर मनुष्य स्त्रीसे रमण करता न थके ॥ ३१ ॥

१७ करवीरादिचर्णम ।

करवीरशालमलिजटास्तथा वानरिकं समम् ॥
सूक्ष्मचूर्णं कृतं सर्वं शाणमात्रं पिबेन्निशि ॥
आलोडय घृतदुग्धेन मानिनीमानभेदनम् ॥ ३२ ॥

कनेरकी जड़का चूर्ण १ तोला, नये सेमलकी जड़ पाच तोला, कौंचके बीजोंकी गिरू ७ तोला इन तीनोंको कपडछान करके बराबरकी मिसरी मिलाके घी और मिसरीयुक्त दूधसे नित्य छः मासे प्रमाण खावे तो वीर्य पुष्ट होकर स्त्रियोंका मानभंग करे ॥ ३२ ॥

कामदेवचूर्णम् ।

पलं गोक्षुरबीजस्य द्विपलं कपिकच्छुरा ॥
पलं नागबलाबीजं पलमेकं शतावरी ॥ ३३ ॥
विदारीकंदचूर्णस्य पलद्वयमथापि वा ॥
पलं त्रपुषबीजं च वाजिगंधापलत्रयम् ॥ ३४ ॥
वासा च तालमूली च गुडूची रक्तचंदनम् ॥
त्रिसुगंधिकणा धात्री लवंगं नागकेशरम् ॥ ३५ ॥
एतानि कर्षमात्राणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
बला शाल्मलिमूलं च भवेदेकैकविंशतिः ॥ ३६ ॥
कुशकाशशिफासप्तशर्करासप्तयोजितम् ॥
दुष्टशुक्रं वीर्यहानिं मूत्रकृच्छ्राणि यानि च ॥ ३७ ॥
मूत्राघातं मूत्रदोषाञ्जयेच्छुक्रविवर्द्धनम् ॥
दशकं गच्छति स्त्रीणां हयतुल्यपराक्रमः ॥
कामदेवाभिधं चूर्णं धन्वंतरिनिरूपितम् ॥ ३८ ॥

गोखरू १ पल कौंचके बीज २ पल, गंगेरनके बीज १ पल, शतावर १ पल, विदारीकन्द २ पल, असगंध ३ पल, अडूसा- मुसली, गिलोय, लालचन्दन, त्रिसुगन्ध (दालचीनी, इलायची, तेजपात), पीपल, आमले, लौंग नागकेशर इन सबको एक २ तोला लेवे । खरटी और सेमलकी मूसली यह इकीस २ तोला लेवे । कुशाकी जड़ काशकी जड़ सरपतेकी जड़ प्रत्येक सात तोला लेवे इन सबका चूर्णकर बराबर शुद्ध खांड मिलावे इस चूर्णको नित्य दूधसे सेवन करे तो दुष्टवीर्य वीर्यका न होना मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रदोष इन सबको दूर करे और वीर्यको बढावे दश स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्ति होवे घोड़ेकी समान पराक्रम होवे यह धन्वन्तरिजीका कथन किया हुवा कामदेव चूर्ण है ॥ ३३-३८ ॥

मानसोल्लासचूर्णम् ।

त्वक् पिप्पली लवंगैला चंदनं च शिवापलम् ॥ ३९ ॥
सारसार्द्धपलं भंगा सार्द्धद्विपलसंमिता ॥
कर्पूरो मृगनाभिश्च दशमापमितः पृथक् ॥ ४० ॥
सर्वं तुल्यसिताचूर्णं मानसोल्लाससंज्ञकम् ॥
वृष्यं वह्निप्रदं चैतत्कामोद्दीपनकारकम् ॥ ४१ ॥

तज, पीपल, लौंग, छोटी इलायची, सफेद चंदन, आमले प्रत्येक एक पल (४ तोला), लोहभस्म १॥ पल शुद्धभांग २ पल भीमसेनी कपूर और कस्तूरी दश२मासे इन सबका चूर्णकरके सबकी बराबर मिसरी मिलावे इसचूर्णको ६ मासे प्रमाण दूधके साथ भक्षण करे तो मान सोल्लासक चूर्ण वीर्यको पुष्ट करे जठराग्निको बढावे कामको उद्दीपन करे ॥ ३९-४१ ॥

बृहद्वाराहीकंदचूर्णम् ।

वाराहीकंदं शृंगाटं कंदं मार्जारमेव च ॥
चूर्णं सूक्ष्मं कृतं सर्वं पलमानं पृथक् पृथक् ॥ ४२ ॥
घृतभृष्टं तु तच्चूर्णं पश्चादेतन्महौषधम् ॥
चतुर्जातं लवंगं च पिप्पली नागरं तुगा ॥ ४३ ॥
एतान्द्विकर्षकान्भागान्सिता सर्वसमानिका ॥
पलार्द्धं भक्षयेन्नित्यं समितं माहिषीपयः ॥ ४४ ॥
दिनांते च पिबेन्नित्यं क्लीबत्वनाशनं परम् ॥
प्रमेहव्याधिशमनं वीर्यस्तंभनकारकम् ॥ ४५ ॥

वाराहीकंद, सिंघाडे, बिदारीकंद, प्रत्येकका चूर्ण चार २ तोले लेकर घीमें भून लेवे फिर इसमें दालचीनी इलायची तेजपात नागकेशर लौंग पीपल सोंठ वंशलोचन इन सब प्रत्येकका चूर्ण दो दो तोला मिसरी सबके बराबर ले सबको एकत्रकर चिकने बर्तनमें रखे फिर इसमेंसे नित्य दो

तोला खाकर ऊपरसे मिसरी मिला भैंसका दूध पीवे इस प्रकार नित्य रात्रिको सेवन करनेसे प्रमेह नपुंसकता दूर होवे और वीर्यस्तंभन होवे ॥ ४२-४५ ॥

मदनप्रकाशचूर्णम्।

कोकिलाशस्य बीजानि मुसलीकंदनागरम् ॥
वाजिगंधा कपिबीजं शाल्मलीपुष्पमेव च ॥ ४६ ॥
बला शतावरीमूलं मोचाह्वं च त्रिकंटकम् ॥
जातीफलं च माषान्नं मातुलानी तुगा तथा ॥ ४७ ॥
एतानि समभागानि सिता सर्वसमानिका ॥
पयसा हि पिबेद्रात्रौ कर्षयुग्मं च नित्यशः ॥ ४८ ॥
बलवीर्यकरं पुंसां प्रमेहव्याधिनाशनम् ॥
मदनप्रकाशचूर्णं हि प्रौढानां द्रावणं परम् ॥ ४९ ॥

तालमखाणे, मुसली, विदारीकंद, सोठ, असगंध, कौंचके बीज, सेमलके फूल खेंटी शतावर. मोचरस, गोखरू, जायफल, भुनी उडदकी दाल, भांग वंशलोचन इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करे फिर इसमे बराबरकी मिसरी मिलावे। इस मदन प्रकाश चूर्णको नित्य दो तोला खाकर ऊपरसे दूध पीवे तो वीर्यकी वृद्धि हो प्रमेहोका नाशहो इसके प्रभावसे मनुष्य प्रौढा स्त्रियोंको द्रावण करने वाला होता है ॥ ४६-४९ ॥

अश्वगंधाचूर्णम्।

अश्वगंधा तिलाः कृष्णाः समानं सूक्ष्मचूर्णितम् ॥
पलार्द्धमधुसर्पिभ्यां भुक्त्वा चानु पयः पिबेत् ॥
वीर्यवृद्धिकरं चैव क्लीबत्वनाशनं परम् ॥ ५० ॥

असगंध और काले तिल बराबर लेकर बारीक चूर्णकरे फिर घी और सहदमें मिलाकर नित्य दो तोला खावे ऊपरसे गर्म दूध पीवे तो वीर्यकी वृद्धि हो और नपुंसकता दूर होवे ॥ ५० ॥

माषचूर्णम् ।

त्रिपलं माषचूर्णं तु तत्समा श्वेतशर्करा ॥ ५१ ॥
आलोड्य मधुसर्पिर्भ्यां पलार्द्धं भक्षयेन्नरः ॥
बलवीर्यकरं शश्वद्वलीपलितनाशनम् ॥ ५२ ॥

शुद्धउडदोंके १२ तोला चूर्णको घृतसे किंचित् भून लेवे फिर ठंडा करके इसमें बराबरकी मिसरी मिलावे फिर घी और शहद मिलाकर दो तोला नित्य भक्षण कर ऊपरसे गर्म दूध पीवे तो बल और वीर्यकी वृद्धि हो शरीरमें गुलजटी पडना बाल सफेद होना दूर हो ॥ ५१-५२ ॥

वृद्धदारुकचूर्णम् ।

वृद्धदारस्य मूलानि सूक्ष्मचूर्णीकृतानि च ॥
शतमूलीरसेनैव सप्तवारं विभावयेत् ॥ ५३ ॥
तच्चूर्णं सर्पिषा लिह्यात्कर्षमात्रप्रमाणतः ॥
त्रिंशद्दिनप्रयोगेण जायते धातुवर्द्धनम् ॥ ५४ ॥

विधारेकी जडके बारीक चूर्णको शतावरके रसकी सात भावना देवे फिर इसमेसे एक तोला चूर्ण घृतमें मिलाकर चाट लेवे ऊपरसे दूध पीवे इसतरह ३० दिन सेवन करनेसे वीर्यकी वृद्धि होती है ॥ ५३-५४ ॥

अकरकरा चूर्ण ।

अकारकरभः शुंठी लवंगं कुंकुमं कणा ॥
जातीफलं जातिपुष्पं चंदनं कार्षिकं पृथक् ॥ ५५ ॥
चूर्णयेदहिफेनं च तत्र दद्यात्पलोन्मितम् ॥
सर्वमेकीकृतं माषमात्रं क्षौद्रेण भक्षयेत् ॥ ५६ ॥
शुक्रस्तंभकरं पुंसामिदमानंदकारकम् ॥
नारीणां प्रीतिजननं सेवेत निशि कामुकः ॥ ५७ ॥

अकरकरा, सोंठ, लोंग, केशर, पीपल जावित्री, सफेद चंदन प्रत्येक एक एक तोला लेवे शुद्ध अफीम ४ तोला सबको एकत्र कर इसमेंसे दो रत्ती

चूर्णको एकमासा शहदमें मिलाके चाटले ऊपरसे मिसिरीयुक्त दूध पीवे तो वीर्यस्तंभन हो स्त्रीपुरुषोंको आनंददायी हो इसको कामी पुरुष रात्रीको शयन करनेके समय सेवन करे ॥ ५५-५७ ॥

गन्धकादिचूर्णम् ।

गंधकामलकं चूर्णं धात्रीरसविभावितम् ॥
सप्तधा शाल्मलीतोयैः शर्करामधुयोजितम् ॥ ५८ ॥
लीढ्वा चानु पयःपानं प्रत्यहं कुरुते तु यः ॥
एतेनाशीतिवर्षोऽपि वेगेन रमते स्त्रियम् ॥ ५९ ॥

शुद्ध आमलासार गंधक और आमलोंके चूर्णको समभाग लेकर आमलोंके रसकी ७ भावना देवे और सात भावना सेमलके रसकी देकर इसमें मिसरी और शहद मिलाकर भक्षण करे ऊपरसे मिसरी मिला धारोष्ण दूध पीवे तो अस्सीवर्षका बूढाभी बडे वेगसे स्त्रीगमन करे ॥ ५८-५९ ॥

लक्ष्मणादिचूर्णम् ।

लक्ष्मणाहस्तिकर्णाभ्यां त्रिकत्रयसमन्वितम् ॥
अश्वगंधासमायोगाल्लोहं पुंसवनं स्मृतम् ॥ ६० ॥
पुत्रोत्पत्तिकरं वृष्यं कन्यासूतिनिवर्तकम् ॥
कृशस्य बलदं श्रेष्ठं सर्वामयहरं परम् ॥ ६१ ॥

लक्ष्मणा, लालएरंडकी जड हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, असगंध इन सबको समानभाग लेवे और उत्तम प्रकारसे बनीहुई लोह भस्म सबकी बराबर लेवे फिर इसमें मिसिरी मिलाकर उचित मात्रासे भक्षणकरे ऊपरसे दूध पीवे तो इसके प्रभावसे पुत्रोत्पत्ति हो शरीर बलवान् हो वीर्यकी वृद्धि हो, जिसके कन्या होती हो उसके पुत्र हो कृशमनुष्य बलवान होवे ॥ ६०-६१ ॥

मधुयष्ट्यादिचूर्णम् ।

मधुयष्टी तुगा क्षीरी धात्री गोक्षुरकं तथा ॥
वंगभस्म कपिबीजं धात्रीरसविभावितम् ॥ ६२ ॥

भक्षयेन्मधुसर्पिभ्यां ततश्चानुपयः पिबेत् ॥
वीर्यवृद्धिकरं पुंसां क्लीबत्वनाशनं परम् ॥ ६३ ॥

मुलहठी, वंशलोचन, आमले, गोखरू, उत्तम दशपुटी वंगभस्म, उत्तमप्रकारसे बनीहुई ६० पुटीअभ्रक भस्म, इन सबको आंवलेके रसकी, सातभावना देकर बारीक चूर्ण करलेवे फिर उचित मात्रासे चूर्णको घी और सहदमें मिलाके चाटले ऊपरसे गर्म मिसरी मिला दूध पीवे यह योग वीर्यको वढानेवाला और नपुंसकताको दूर करनेवाला है ॥ ६२–६३ ॥

वीर्यवृद्धिकरान्योगान्पंढादिदोषनाशकान् ॥
देशकालबलं ज्ञात्वा योजयेन्मतिमान्नरः ॥ ६४ ॥

इसप्रकार नपुंसकताको दूरकरनेवाले और वीर्यके वढानेवाले चूर्णोंको बुद्धिमान् मनुष्य देश काल बलावल विचारकर सेवन करावे ॥ ६४ ॥

कुछ एक औषधिके योग ।

शतावरी ह्युच्चटा च कपिकच्छुर्विदारिका ॥
मधुयष्टी च माषान्नं तथैवामलकी स्मृताः ॥ ६५ ॥
एषां पृथक्पृथक् चूर्णं सासितं भक्षयेत्पुमान् ॥
ततः पयोनुपानेन वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ६६ ॥

शतावर उटंगणके बीज, कौंचके बीज, विदारीकंद, मुलहठी, उडद आमले, इनका अलग २ चूर्ण मिसरी मिलाकर खावे उपरसे गर्म दूध पीवे तो यह एक, भी परम वाजीकरण है ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

उपसंहार ।

इति चूर्णविधानं च तरंगेऽस्मिन्हि वर्णितम् ॥
बलवृद्धिकरं शश्वद् पंढादिदोषनाशकम् ॥ ६७ ॥

इसप्रकार बलके वढानेवाले और नपुंसकताके नाश करनेवाले चूर्णोंका विधान इसतरंगमें वर्णन किया है ॥ ६७ ॥

श्रीनिगमचाननपण्डितरामप्रसादोपाध्यायप्रणीतेनपुंसकामृतार्णवे चूर्णवर्णनो नाम तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थस्तरंगः ।

कामोद्दीपकपाकवर्णनम् ।

गुरुरुवाच ।

अथ पाकान्प्रवक्ष्येहं नृणां क्लीबत्वनाशकान् ॥
वीर्यवृद्धिकरांश्चैव बलकांतिविवर्द्धकान् ॥ १ ॥

गुरु कहने लगे हे शिष्य! अब मैं वीर्यकी वृद्धि करनेवाले बल और कांतिके बढानेवाले पुरुषोंके नपुंसकता आदि दोषोंके नष्ट करनेवाले पाकोंका वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

कौंचपाक ।

निस्तुषं वानरीबीजं कृत्वा विंशत्पलानि च ॥
त्रिंशत्पलां सितां दत्त्वा घृतं दत्त्वा पलाष्टकम् ॥ २ ॥
दुग्धाढकं समायुक्तं मृदुना वह्निना पचेत् ॥
यावद्दार्वीप्रलेपः स्यात्तन्मध्ये चूर्णितं क्षिपेत ॥ ३ ॥
जातीफलं त्रिकटुकं त्रिगंधं देवपुष्पकम् ॥
आकल्लकं जातिपत्री कोकिलाबीजकेशरम् ॥ ४ ॥
पुनर्नवा बले द्वे च मुसली साहिफेनकम् ॥
पारदं लोहचूर्णं च अभ्रकं च पलार्द्धकम् ॥ ५ ॥
चंदनागरुकस्तूरीकर्पूरं शाणमात्रकम् ॥
पलार्द्धं भक्षयेदेतत्क्रमाद्वीर्यबलप्रदम् ॥ ६ ॥

छिलेहुवे कौंचके बीज ८० तोला, मिसरी १२० तोला, गौघृत ३२ तोला दूध ४ सेर, इन सबको एकत्रकर मंद २ आंचसे पकावे जब पकते २ खोयेकी सदृश गाढा होजावे तब नीचे लिखी औषधियोका चूरण मिला दे। जायफर त्रिकुटा त्रिगन्ध, लवंग, अकरकरा जावत्री, तालमखाणे,

केशर, पुनर्नवा, बला, अतिवला, मुसली, चंद्रोदय, लोहभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येक दो २ तोला चन्दन, अगर, कस्तूरी, कपूर, प्रत्येक ४ मासे इन सबके बारीक चूर्णको उपरोक्त पाकमें मिलाकर चिकने पात्रमें रख देवे इसमेंसे दो तोला प्रमाण नित्य खावे ऊपरसे दूध पीवे तो अत्यंत बल और वीर्यकी वृद्धि होवे ॥ २–६ ॥

आम्रपाक ।

पक्वाम्रस्य रसे द्रोणे रसाढकमितां सिताम् ॥
घृतप्रस्थमितं दद्यान्नागरस्य पलाष्टकम् ॥ ७ ॥
मरिचं कुडवोन्मानं पिप्पलीद्विपलोन्मिता ॥
सलिलस्याढकं दत्त्वा सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ ८ ॥
पचेत्तन्मृण्मये पात्रे दारुदर्व्या प्रचालयेत् ॥
चूर्णान्येषां क्षिपेत्तत्र घनीभूतेऽवतारिते ॥ ९ ॥
धान्यकं जीरकं पत्रं चित्रकं मुस्तकं त्वचम् ॥
बृहज्जीरकमप्यत्र ग्रंथिकं नागकेशरम् ॥ १० ॥
एलाबीजं लवंगं च पृथक्जातीफलं पलम् ॥
सिद्धे शीते प्रदातव्यं मधुनः कुडवद्वयम् ॥ ११ ॥
भक्षयेद्भोजनादर्वाक् पलमात्रमिदं नरः ॥
अथवा नियमो नात्र मात्रां खादेद्यथाबलम् ॥ १२ ॥
मानवस्सेवनादस्य वाजीव सुरते भवेत् ॥
समर्थो बलवान्पुष्टो हृष्टो नित्यं निरामयः ॥ १२ ॥

पक्के मीठे आमोंका रस १६ सेर, शुद्ध मिसरी ४ सेर, गोघृत १ सेर, सोंठका मैदा ३२ तोला, कालीमिरच ३२ तोला, पीपल ३२ तोला, स्वच्छ जल ४ सेर सबको मिलाकर मट्टीके पात्रमें पकावे और लकडीकी कडछुलीमे हिलाता जाय, जब मन्द २ आंचमें पकते २ गाढा होजावे और ता

दिखाई देने लगे फिर इसमें धनिया, जीरा, पत्रज, चित्रक, मोथे, तज, कलौंजी, पीपलामूल, नागकेशर, इलायची, लौंग, जायफल, प्रत्येक चार २ तोला लेकर इनका चूर्ण करके उपरोक्त पाकमें डाले जब शीतल हो जाय तो इसमें आधसेर शहद मिलावे फिर नित्य भोजन करनेसे पहले चार तोला खावे अथवा जठराग्निका बल देखकर मात्रा कल्पना करे इसके सेवनसे घोडेकी समान मैथुन करनेमें प्रवृत्त होय समर्थवान्, बलवान्, हृष्टपुष्ट होय और नित्य निरोग रहे यह आम्रपाक हृदयको हितकारी है॥ ७--१३॥

कामसुन्दरपाक।

शतावरी च मुसली गोक्षुरस्त्वग्लवंगकम्॥
खर्जूरमेला कृष्णा च शिवा कमलचंदनम्॥ १४॥
कपिकच्छुभवं बीजं पत्रं मुस्ता च नागरम॥
कोकिलाक्षश्च धनिका शुक्तिपूगं पलद्वयम्॥ १५॥
विंशत्पलासिता दर्पकर्पूरश्चार्द्धकार्षिकः॥
विजया सार्धपलिका प्रमेहघ्नो रसायनः॥
ज्वरघ्नः पुष्टिजननः पाकोयं कामसुंदरः॥ १६॥

सतावर मुसली, गोखरू, तज, लवंग छुवारे, इलायची, पीपल, आमला, कमलगट्टे, चन्दन, कौंचके बीज, पत्रज, मोथा सुंठ, तालमखाणे, धनिया, प्रत्येक एक तोला, दक्षिणी चिकनी सुपारी ८ तोला मिसरी ८० तोला, कस्तूरी भीमसेनी कपूर छे २ मासे, धुलीहुई भांग ६ तोला इन सबका विधिपूर्वक पाक बनावे और अग्निका बलाबल देखकर उचित मात्रासे खावे तो यह कामसुन्दर पाक आयुको स्थिर करे प्रमेह और ज्वरको नष्ट करे, वीर्यको पुष्ट करे॥ १४--१६॥

(रतिवल्लभ पूगपाक)

पूगं दक्षिणदेशजं दशपलोन्मानं भृशं कर्तयेत्
तच्छिन्नं जलयोगतो मृदुतरं संकुट्य चूर्णीकृतम् ॥
तच्चूर्णं पटशोधितं वसुगुणे गोशुद्धदुग्धे पचेत्
गव्याज्यांजलिसंयुतेऽतिनिबिडे दद्यात्तुलार्द्धांसिताम् १७
पक्कं तज्ज्वलनात्क्षितिं प्रतिनयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपेत्
यद्यद्यत्तत्तदुदाहरामि बहुला दृष्ट्वादरात्संहिताः ॥
एला नागबला तथा सचपला जातीफलालिंगिता
जातीपत्रकमत्रपत्र कयुतं तच्च त्वचा संयुतम् ॥ १८ ॥
विश्वा वीरणवारि वारिदवरा वांशीवरी वानरी
द्राक्षा सेक्षुरगोक्षुरातिमहती खर्जूरिका क्षीरिका ॥
धान्याकं सकसेरुकं समधुकं शृंगाटकं जीरकं
पृथ्वीकाथ यवानिका वराटिका मांसी मिसी मेथिका १९
कंदेष्वत्र विदारिकाथ मुसली गंधर्वगंधा तथा
कर्चूरं करिकेशरं च मरिचं चारस्य बीजं नवम् ॥
बीजं शालमलिसंभवं करिकणाबीजं च राजीवजम्
श्वेतं चंदनमत्र रक्तमपि च श्रीसंज्ञपुष्पैः समम् ॥ २० ॥
सर्वंचेतिपृथक् पृथक् पलमितं संचूर्ण्य तत्र क्षिपेत् ॥
सूतं वंगभुजंगलोहगगनं सन्मारितं स्वच्छया ॥
कस्तूरीघनसारचूर्णमपि च प्रातं यथा प्रक्षिपेत्त ॥
पश्चादस्य तु मोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणानथ ॥ २१ ॥

तान्भोक्तातिसदा यथानलबलं भुंजीत नाम्लं रसं
पूर्वस्मिन्नसिते गते परिणते प्राग्भोजनाद्भक्षयेत् ॥
नित्यं श्रीरतिवल्लभाख्यकमिमं यः पूगपाकं भजेत्
सस्याद्वीर्यविवृद्धवृद्धमदनो वाजीव सक्तो रतौ ॥ २२ ॥
दीप्ताग्निर्बलवान्बली विरतिहो हृष्टःस पुष्टस्सदा
वृद्धो योपि युवेव सोपि रुचिरः पूर्णेन्दुवत्सुंदरः॥ २३ ॥

दक्षिणी सुपारी ४० तोला लेकर काट लेवे फिर जलमे भिगोकर धीरे २ कूटकर वारीक चूर्ण करे उस चर्णको सुखाकर कपडछान करे फिर चारसेर गौके दूधमे पकावे फिर उसमे १६ तोला गौका घी डाले, और ५ सेर मिसरी डाले जब पकते पकते पाक बनकर तैयार हो तो उसको नीचे उतारकर इन औषधियोंका प्रक्षेप करे । इलायची, नागवला, वला, पीपल जायफल, जवित्री, जवत्री, पत्रज, तज, दालचीनी, सोंठ, खस, नेत्रवाला, नागरमोथा त्रिफला, वंशलोचन, शतावर, कौंचके बीज, दाख, तालमखाणे. गोखरू, खजूर, छुवारे धनियां, क्षीरकाकोली, कसेरू, महुवा, सिघाडे जीरा कलोंजी. अजवायन. वटके बीज, जटामांसी, सौंफ, मेथी. विदारिकंद, मूसली. असगंध कचूर, नागकेशर, कालीमिर्च चिरोंजी सेमरके बीज, गजपिप्पली, कमलगट्टा, दोनो चंदन, लौंग, प्रत्येक चार २ तोला लेकर सबका चूर्णकर पाककी चासनीमें डाले, और चंद्रोदय. वंगभस्म नागभस्म, लोहभस्म, अभ्रक, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर यह अपनी बुद्धि अनुसार वैद्य डाले, फिर सबको एकजीवकर चार २ तोलेके लड्डू बनावे इसको अपनी अग्निका बलाबल विचार खावे और कोईभी खट्टा पदार्थ न खावे । जब पहले दिनका किया भोजन पचगया हो तो भोजनसे पहले इसको खावे. जो मनुष्य इस रतिवल्लभ पूगपाकको सेवन करताहै वह बढेहुवे वीर्यवाला और कामशक्तिके वेग-वाला होकर घोडेके समान मैथुन करे । इसके सेवनसे निर्बलभी बल-

वान् होकर अग्निचैतन्य रहे, हृष्टपुष्ट हो और वृद्धभी सुन्दर पूर्ण चंद्रमाकी सदृश कांतिवाला होताहै ॥ १९–२३ ॥

महाकामेश्वर पाकः ॥

एतस्मिन्रतिवल्लभे यदि पुनः सम्यक् खुरासानिका
धत्तूरस्य च बीजमर्ककरभा पाथोधिशोषस्तथा ॥
सन्माजूफलकं तथा खसफलं त्वक् चापि निक्षिप्यते
चूर्णार्द्धा विजया तदा स हि भवेत्कामेश्वराख्यानकः २४॥

इसी ऊपर कहे रतिवल्लभ पूगपाकमें खुरासानी अजवायन, धत्तूरेके बीज, अकरकरा, समुद्रशोष, माजूफल, खसखस, तज इन सबका चूर्ण करके मिलावे और इस चूर्णसे आधी भांगका चूर्ण मिलावे तो यह कामेश्वर पाक बने । यह पाक वीर्यको गाढा और स्तंभन करता और काम शक्तिको बलवान् करता है ॥ २४ ॥

रतिवृद्धकर मोदक ।

गोक्षुरेक्षुरबीजानि वाजिगंधा शतावरी ॥
मुसलीवानरीबीजं यष्टी नागबला बला ॥ २५ ॥
एषां चूर्णं दुग्धसिद्धं गव्येनाज्येन भर्जितम् ॥
सितया मोदकं कृत्वा भक्ष्यं वाजीकरं परम् ॥ २६ ॥
चूर्णादष्टगुणं क्षीरं घृतं चूर्णसमं स्मृतम् ॥
सर्वतो द्विगुणं खंडं खादेदग्निबलं यथा ॥ २७ ॥

गोखरू, तालमखाने, असगंध, शतावर, मुसली, कौंचके बीज, मुलहटी, , नागबला, इनसबका चूर्ण करके चूर्णकी बराबर गोघृत, और मे आठ गुण दूध डालकर पकावे जब पककर खोयेकी समान होजाय इसमें दुगनी शुद्ध मिसरी मिलाकर लड्डू बनालेवे जठराग्निके बलानु-ार खावे तो यह परम वाजीकरण है ॥ २५–२७ ॥

शतावरीपाक ।

शतावरी श्वदंष्ट्रा च बला चातिबला तथा ॥
मर्कटीक्षुबीजं च बिदारीकंदजं रजः ॥ २८ ॥
एतानि समभागानि पलिकानि विचूर्णयेत् ॥
चूर्णाच्चतुर्गुणं चैव त्रैलोक्यविजयारजः ॥ २९ ॥
एतदेकीकृतं यावत्तदर्ध माहिषं पयः ॥
तावन्मात्रेण दातव्यं शतावर्या रसं तथा ॥ ३० ॥
विदार्याः स्वरसं प्रस्थं सितापलशतद्वयम् ॥
गोलयित्वा सितां चैव पात्रे ताम्रमये दृढे ॥ ३१ ॥
पाचयेत्पाकविद्वैद्यो मोदकः परमो हितः ॥
त्र्यूषणं त्रिफला शृंगी त्रिजातं सैंधवं शटी ॥ ३२ ॥
धान्यकं बालकं मुस्तं द्विजीरं कुंदरुमुरा ॥
काकोली क्षीरकाकोली कस्तूरी मृद्धिका तुगा ॥ ३३ ॥
जातीकोषफलं मांसी पत्रं वारेंद्रग्रंथिजम् ॥
शतपुष्पा च वीदारु प्रियगुः सलवंगकम् ॥ ३४ ॥
सरलं शैलजं कुष्टं जातीपुष्पं यवानिकाम् ॥
कट्फलं केशरं मेथी मधुकं देवताडकम् ॥ ३५ ॥
मिषा तालीसपत्रं च खर्जूररसगंधकम् ॥
त्रिसुगंधिसमायुक्तं कर्पूरेणाधिवासयेत ॥ ३६ ॥
कोलप्रमाणं कर्तव्यं क्षीरं चापि पिबेन्नरः ॥
प्रमदादशकं गच्छेन्न च शुक्रक्षयो भवेत् ॥ ३७ ॥

सतावर, गोखरू, वला, अतिवला, कौंचके बीज, तालमखाणे, विदारीकंद, प्रत्येक चार २ तोला शुद्ध भांगका चूर्ण २८ पल, शुद्धखांड १०० पल, भैंसका दूध, और शतावरका रस, तथा विदारीकन्दका रस, प्रत्येक ३२ पल, इन सबको मिलाके तांबेके पात्रमें मन्द २ आंचसे पकावे । जब पकते २ गाढा होजावे तो त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिसुगन्ध, शृंगी, सेन्धा, कचूर, धनियां, मोथे, सुगन्धवाला, दोनांजीरे, कुन्दरू, कपूरकचरी, काकोली, क्षीरकाकोली, दाख, वंसलोचन, जावत्री, जायफल, छड़, वांरद्रपत्र, गठौना, सोये, चव्य, देवदारु, प्रियंगु, लौंग, सरल, भूरीछरीला, कुठमीठा, चमेलीके फूल, अजवायन, कायफल, नागकेशर, मुलेठी, मेथी, देवताड़, सौंफ, तालीसपत्र, खजूर, शुद्धपारे और शुद्ध गंधककी कजली, इन सबका चूर्णकर उपरोक्त पाकमें मिलावे फिर त्रिसुगंध और भीमसेनी कपूरसे सुगंधितकर एक २ तोलेका लड्डू बनावे, इसलड्डूको प्रातःकाल खाकर दूध पीवे और पथ्यसे रहै खटाई न खाये तो उस मनुष्यका कभी वीर्य क्षीण न होय और दश स्त्रियोंसे मैथुन करनेपरभी शिथिलता न हो ॥ २८--३७ ॥

रतिवल्लभविजयापाक ।

समूलपत्रशाखायास्तुलां शक्राशनस्य च ॥
संरुध्योलूखले छित्त्वाऽपां द्रोणे हि तथा च वै ॥ ३८ ॥
क्वाथं पादावशिष्टं तु वस्त्रपूतं च कारयेत् ॥
क्षीरप्रस्थं समादाय खंडस्यार्द्धं शतं न्यसेत ॥ ३९ ॥
शतावरी रसस्याष्टौ पिप्पल्याः कुडवस्तथा ॥
सर्वमेतत्समालोड्य घृतप्रस्थेन मेलयेत् ॥ ४० ॥
ओषधीनां ततश्चूर्णं दापयेत्कलिकं पृथक् ॥
त्रिकटु त्रिफलां चव्यमेलात्वक्पत्रकेशरम् ॥ ४१ ॥
चित्रकं पिप्पलीमूलं धान्यकाजाजिमेथिका ॥
कुष्टाब्दरेणुकाग्न्योपं भार्ङ्गी तालीशकेशरा ॥ ४२ ॥

तालमूली त्रिवृद्दंती श्रेयसी हिंगु पौष्करम्॥
लवंगजातिकोषं च यमानी कारवी तथा ॥ ४३॥
शुभा जातिफलं चंद्रं शृंगी चैव विदारिका॥
अष्टवर्गं च काकोलं श्लक्ष्णचूर्णं च कारयेत्॥ ४४॥
गुडवद्विपचेद्वैद्यो मोदकं कारयेत्ततः॥
अक्षमात्रं च जग्ध्वैषां शीतलं पाययेज्जलम्॥ ४५॥
नाशयेच्छुक्रदोषं च षंढं चैवातिदारुणम्॥
श्रीकरं लाघवकरं मेधाबुद्धिप्रवर्द्धकम्॥ ४६॥

भांगके मूलपत्र शाखासमेत सब लेकर कूट लेवे ऐसी कुटी भांग ६। सवाछेसेर, ३२ सेर पानीमें पकावे, जब ८ सेर पानी बाकी रहै उसको शुद्ध वस्त्रमें छान लेवे फिर इसमे गोदूध २ सेर, बूरा ६। सेर, शतावरका रस १ सेर, पिप्पलीका क्राथ १ सेर, घी २ सेर, सब मिलाके पकावे जब पकते २ गाढा होजाय तो इसमें त्रिफला, त्रिकुटा, चव्य, छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, चित्रक, पीपलामूल, धनियां, जीरा, मेथी, मीठाकूठ, मोथे, रेणुका, त्रिकुटा भांर्गी, तालीसपत्र, नागकेशर, मुसली, निशोत. दन्ती, गजपीपल. हींग, पोष्करमूल, लौंग, जावत्री, अजवायन, सोंफ पीपल जायफल, कपूर, काकड़ासिंगी, विदारीकन्द, अष्टवर्ग (जीवक, ऋषभक मेदा महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली ऋद्धी, वृद्धी,) शीतलचीनी, प्रत्येकका चूर्ण चार २ तोला मिलाके गुड़पाक विधिसे पकाकर दो २ तोलेके लड्डू बनावे एक लड्डू खाकर ऊपरसे थोडा जल पीवे तो अतिदारुण नपुंसकता दूर हो वीर्यके सब विकार दूर होकर पुरुषार्थ बढे ॥ ३८--४६ ॥

खण्डकूष्माण्डपाक।

पुराणं पीनमानीय कूष्माण्डस्य फलं महत्॥
तद्बीजाधारबीजत्वक् शिराशून्यं समाचरेत्॥ ४७॥

ततस्तस्य तुलां नीत्वा पचेज्जलतुलाद्वये ॥
तस्मिन्नीरेऽर्धशिष्टे तु यत्नतः शीतलीकृते ॥ ४८ ॥
तानि कूष्माण्डखण्डानि पीडयेद्दृढवाससा ॥
यत्नतस्तज्जलं नीत्वा पुनः पाकाय धारयेत् ॥ ४९ ॥
कूष्माण्डं शोषयेद्धर्म्मे ताम्रपात्रे ततः क्षिपेत् ॥
क्षिप्त्वा तत्र घृतं प्रस्थं कूष्मांडं तेन भर्जयेत् ॥ ५० ॥
मधुवर्णं तदालोक्य तज्जलं तत्र निक्षिपेत् ॥
सितायाश्च तुलां तत्र क्षिप्त्वा तल्लेहवत्पचेत् ॥ ५१ ॥
सुपक्के पिप्पली शुंठी जीराणां द्विपले पृथक् ॥
पृथक् पलार्द्धं धान्याकं पत्रैलामरिचं त्वचम् ॥ ५२ ॥
चूर्णमेषां क्षिपेत्तत्र घृतार्धं क्षौद्रमावपेत् ॥
एतत्पलमितं खादेदथवाग्निबलं यथा ॥ ५३ ॥
खण्डकूष्मांडलेहोयं रक्तपित्तं च नाशयेत् ॥
हंति कासक्षयादींश्च बलवीर्यविवर्द्धनः ॥ ५४ ॥

बड़े पकेहुवे पेठेके शुद्ध छिलेहुवे टुकड़े १०० पल, लेकर २०० पल जलमें पकावे, जब जल, आधा बाकी रहे उतारकर ठंढा करके साफ वस्त्रसे खूब दबाकर छान लेवे, उस छनेहुवे जलको अलग एक पात्रमें रख देवे और उन पेठेके टुकड़ोंको कुछेक धूपमें सुखाकर, एक तांबेके पात्रमें ?गो घी डाल कर मन्द आंचसे भूनता जाय, जब पककर लाल होजावे, फिर वह नुचडाहुवा जल भी इसीमें डाल देवे और १०० पल देशीमिसरी डालकर अवलेहकी भांति पकावे, सिद्ध होनेपर इसमें पीपल, सुण्ठ, जीरा प्रत्येक दोपल । धनियां, पत्रज इलायची, मिर्च, तेज, प्रत्येक दो तोला इन सबका चूर्ण करके डाल देवे और खूब मिलाकर ठंडा कर ले ठंडा होनेपर आधसेर शुद्ध शहद भी इसमें मिला देवे यह खण्डकूष्माण्डावलेह बना

इसमेंसे ४ तोला या जितना माफिक होवे, इसको नित्य प्रातःकाल खावे तो रक्तपित्त खांसी. राजयक्ष्मा. क्षय आदिरोग दूर हों, और बल तथा वीर्यकी वृद्धि होवे ॥ ४७-५४ ॥

केशरपाक ।

व्योषं चतुर्जातफलत्रिकं च लवंगकृष्णागरुचंदनं च ॥
कांडेक्षुबीजं करहाटकं च जातीफलं मर्कटिकाफलं च॥५५॥
शालमल्यनिर्यासबलाश्वगंधागोक्षूरबीजं मुसलीं कृमिघ्नम् ॥
समुद्रशोषं विषपंजरं च पुष्पं सजात्युद्भवकंकबीजम् ॥५६॥
सर्वैः समं योज्य सकुंकुमं च सुचूर्णितं विंशतिभागयुक्तम्॥
कस्तूरिकाषोडशभागचूर्णं खंडं चतुर्भागयुतं विपक्कम्॥५७॥
दलानि हेम्नः द्विशतानि दत्त्वा तथैव देयानि च राजतानि॥
एकत्र सर्वं विनिधाय वैद्यो जयाष्टभागं विदधीत लेहम्॥५८॥
जातीफलप्रमाणेन भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥
वीर्यवृद्धिं करोत्येष सर्वव्याधिविनाशनः ॥ ५९ ॥
दशकं रमते स्त्रीणां वृद्धोपि तरुणायते ॥
सर्वान्वातामयान्हंति प्रवृद्धं वातशोणितम् ॥
काश्मीरकावलेहोयं बलकांतिविवर्द्धनः ॥ ६० ॥

त्रिकुटा चतुर्जात, त्रिफला, लौंग सफेदचंदन, कालाअगर, तालमखाणे, अकरकरा. जायफल. कौंचके बीज सेमलका गोंद, गुलशकरी, असगंध, गोखरू मुसली वायविडंग,समुद्रशोष, विषपंजर, जवित्री, खैरैटी ये सब समानभाग लेवे और केशर सब दवाईयोंके चूर्णसे वीसवां भाग लेवे और कस्तूरी सबसे सोलवां भाग लेवे । सब दवाइयोसे चौगुनी शुद्धखांड लेवे सोलकी चासनी बनाकर उसमे विधिपूर्वक सब दवाइयोंका प्रक्षेप

करे फिर २०० वर्क सोनेके और २०० चांदीके इसीमें मिलावे और केशरसे आठवॉं भाग विजया (शुद्ध भॉंग) का वारीक चूर्ण मिलाकर एकजीव करके रक्खे, फिर इसमेंसे जायफलके वरावर नित्य प्रातःकाल शुद्ध होकर खावे यह केशरपाक वीर्यको वढावे और अनेकरोगोंको दूर करता है,दशस्त्रीसे नित्यरमणकी सामर्थ्य पैदा करे,इसके प्रभावसे वुड्ढा भी जवानेकी सदृश मैथुन करे । सव किस्मके वातविकार और वढाहुवा वातरक्त इनको दूरकरे यह केशरावलेह वल और शरीरकी कांतिको वढाने वाला है ॥ ५९–६० ॥

अमृतभल्लातकपाक ।

भल्लातकानां पवनोत्थितानां तरुच्युतानां च यदाढकं स्यात्
घृष्टेष्टिकाचूर्णकणैर्जलैश्च प्रक्षाल्य संशोष्य च मारुतेन ६१
शुष्काणि तानि द्विदलीकृतानि विपाचयेदप्सु चतुर्गुणासु॥
तत्पादशेषं पुनरेव शीतं क्षीरेण तुल्येन विपाचयेत्तत्॥६२॥
तदर्द्धया शर्करया विमिश्र्य पश्चात्खजेनोन्मथनं विधाय॥
सत्र्यूषणं त्रैफलचंद्रमासी त्रिवृच्च वासी खदिरामृतं च॥६३॥
सचंदनाकल्लकणाकबावं सदेवपुष्पं मुसलीद्वयं च ॥
कंकोलमोचाह्वयदीप्ययुग्मं नतं समातंककणाविदारी६४ ॥
जातीफलं मुस्तकजातिपत्री कुवेरजीरागरुसाम्विशोपम् ॥
मेदाद्वयं लोहरसेंद्रवंगमभ्रं तथा कुङ्कुमकं च कर्षम् ॥ ६५ ॥
तत्सप्तरात्रादतिजातवीर्यं सुधारसादप्यधिकं वदंति ॥
प्रातः प्रवुद्धः कृतदेवकार्यो मात्रां भजेत्सात्म्यशरीरयोग्याम् ॥
नचानुपाने परिहार्यमस्ति नचातपे नाध्वनि मैथुने च ॥
यथेष्टचेष्टो विचरेत्प्रयोगान्नरो भवेत्कांचनगौरगात्रः ॥६७॥

अनेन मेधानरसिंहवीर्यो दृढेंद्रियो व्याधिगतः सुबुद्धिः ॥
दंताविशीर्णाःपुनरेव दिव्याःकेशाश्च शुभ्राः पुनरेव कृष्णाः६८
नीलांजनालिप्रतिमा भवंति त्वचो विशीर्णाः पुनरेव भव्या॥
विशीर्णकर्णाङ्गुलिनासिकोपिकृम्यर्दितो भिन्नगलोऽपि कुष्ठी
शुष्कः पुनः स्याद्गतमूलशाखस्तरुर्यथा भाति नवांबुसिक्तः॥
बृहस्पतेरप्यधिको हि बुद्ध्या ग्रंथं विशालं च नवं करोति ७०
गृह्णाति सद्यो नच विस्मृतिं च करोति कल्पायुरनल्पवीर्यम्॥
कुर्वन्निमं कल्पमनल्पबुद्धिर्जीवन्नरो वर्षशतं सुखी स्यात् ७१

पके भिलावे जो पवनसे टूटकर गिरे हों ४ सेर लेकर ईटके चूर्णमें घिस कर शुद्ध जलसे धोकर पवनसे सुखालेवे । जब सूख जावें तो एक २ के दो टुकडे करके, १६ सेर पानीमें पकावे जब चारसेर पानी बाकी रहे उतार-कर ठंढा करे । फिर उसमें चारसेर दूध मिलाके पकावे. पकनेपर दो सेर मिसरी मिलाके मथानीसे मथ डाले फिर इसमें, त्रिकुटा, त्रिफला,कपूर, जटामांसी, निसोथ, वंशलोचन, खैरसार, सिंगियाविष, सफेदचन्दन, अक-रकरा पीपल कबाबचीनी. लौंग. सफेदमुसली स्याहमुसली, कंकोल, मोचरस अजवायन, अजमोद छड़ गजपीपल. विदारीकंद, जायफल, नागरमोथा जावित्री लताकांज. अगर, जीरा. समुद्रशोष, मेदा, महामेदा. [illegible] पत्रांदन अभ्रक केशर प्रत्येक एक २ तोला लेकर सबका चूर्ण उसी पाकमें मिला देवे. एक जीव करके चीकने बर्तनमें भरकर सात दिन [illegible] रखा रहने देवे तो यह अमृतसेभी अधिक गुणसंपन्न अमृत-[illegible] सिद्ध होगया । इसमेंसे प्रातःकाल शौचादि कर्मोंसे निवृत्त होकर जितनी ठीक पच सके उतनी मात्रासे खावे ऊपरसे गर्म जलका [illegible] अनुपान है और घृतसे चकना मधुर आहार [illegible] इसके बनानेसे मनुष्य सुवर्णसदृश

कांतिमान् रूपवाला हो, बुद्धि बढे, नरसिंहसमान बल हो, इंद्रियें दृढ होवें, सब रोग दूर हों, गिरे दांत फिर पैदा हों सफेद बाल भौंरेके समान काले हों गुलजटियें दूर हों त्वचा मजबूत हो, जिसके कान नाक उंगली गिर गये हो कृमि पड़रहे हों, गला बैठ गया हो, उस मनुष्यको इसके सेवनसे ऐसा आराम हो जैसे जड़ शाखाहीन वृक्ष जलके संयोगसे हरा होजाता है, इस प्रकार इसके खानेवाला मनुष्य भी सब रोगरहित रूपवान् होजाता है और बृहस्पतिके समान बुद्धिवाला हो नया ग्रन्थ रचनेकी सामर्थ्य हो, बात सुनतेही धारण करे, भूले नहीं, कल्पायु हो, अधिक वीर्यवान् हो इस मिलावे कल्पके सेवनसे सौ१०० वर्ष निरोग होकर जीवे ॥६१--७१॥

खोप्यापाक।

गोलकं नारिकेलस्य पाटयेच्च विधानतः ॥
पलार्द्धमिक्षुरबीजांस्तस्मिन्दत्त्वा विभावयेत् ॥ ७२ ॥
वटदुग्धेन संपूर्य दुग्धे वसुगुणे पचेत् ॥
चतुर्पले घृते भृष्ट्वा सिते प्रस्थे च मेलयेत् ॥ ७३ ॥
संस्कृत्य विधिवत्पाकं चूर्णानेतान् क्षिपेत्ततः ॥
जातिपत्रं लवंगं च वंगं जातीफलं तथा ॥ ७४ ॥
गोक्षुरांकभौं सुंठीं कपिकच्छुं बलां त्वचम् ॥
मधुयष्टीं चोच्चटां च चूर्ण कृत्वा च प्रक्षिपेत् ॥ ७५ ॥
शीते मधु प्रदातव्यं कुडवैकप्रमाणतः ॥
स्निग्धे भांडे निधायाथ मात्रा पलमिता भवेत् ॥ ७६ ॥
अथवाग्निबलं दृष्ट्वाऽनुपानं पयसश्चरेत् ॥
वीर्यवृद्धिकरं चैव षण्ढादिदोषनाशनम् ॥
नारिकेलस्य पाकोयं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ७७ ॥

एक उत्तम नया नारियलका गोला लेकर उसको युक्तिसे ऐसा काटे कि कटाहुवा टुकड़ा फिर उसी खोपडेके मुँहपर लगजावे जिसमेंसे, जिस जगेसें काटा हो फिर इसमें दोतोला तालमखाणेका चूर्ण डालकर इसको बड़के दूधसे भरदेवे, फिर इस तालवखाणे युक्त गोलेसे आठगुणें दूधमें इसको डालकरखोवा, करे, और खोंचेसे खूब रगडे ताके यह खोपडाभी दूधमें मिलजावे यदि कुछ बाकी रहे तो उसे पत्थरसे पीस डाले फिर इसमें १६ तोला शुद्ध घी डालकर मंद आँचसें भून लेवे फिर १ सेर मिसरीकी तेज चासनीमें इस खोयेको डाल देवे फिर इसमे, जवत्री, लौंग, वंगभस्म, जायफल, गोखरू, अकरकरा, सुंठ, कौंचके बीज, खरटी, मुलठी, उटंगणकेबीज, प्रत्येक १॥ तोला लेकर चूर्ण करके मिलावे फिर ठंडा होनेपर १६ तोला शहद मिलाकर चिकने वर्तनमें राखे इसमेंसे चार तोला अथवा जितना माफिक आवे खाकर ऊपरसे दूध पीवे । यह नारिकेलपाक वीर्यबल [illegible]नेवाला नपुंसकता आद दोषोंका हरनेवालाहै और परम वाजीकरण ॥ ७२-७७ ॥

मेथीपाक ।

मेथीप्रस्थमिता पलद्वयमितं चूर्णं वरीसम्भवं
त्वक्पत्राऽनलविश्वजीरमगधाद्राक्षाशिवागोक्षुरम् ॥
धात्रीनागकणाप्रियंगुमुसलीकीनाशबीजैः समैः
पिष्टैः सूक्ष्मतरं पलैकतुलितैः सर्वैः पृथक्पाचयेत् ७८॥
गोदुग्धेन चतुर्गुणेन विधिना मंदाग्निना वैद्यराट्
यावत्तद्घनतामियादथ ततः सर्वद्विभागा सिता ॥
पाच्यापाच्यसुशीतमेतदखिलं दृष्ट्वा तदेलाद्वयं
मन्नाचारमवाथ देवकुसुमं खाजैरवातामकम् ॥ ७९ ॥

जातीपत्रसमं विदल्यदलितं प्राग्गोघृतैर्भर्जिते
युक्तांशैरवधूल्यमेव सकलं तन्मोदकान्कल्पयेत्॥
वंगाभ्रेण पलार्द्धकेन सहितान्संभक्ष्य यावद्बलं
कांतासंगविलासभोगचपलो वृद्धो युवा वै भवेत् ॥८०॥

मेथीका चूर्ण १ सेर, सतावर १० तोला, तेजपत्र, चित्रक, सुंठ, सफेदजीरा, पीपल, दाख, हरड, गोखरू, आमले, गजपीपल, प्रियंगु, मुसली, कौंचके वीज, प्रत्येक चार २ तोला लेकर सबका चूर्ण करके सबसे चारगुणे दूधमें डालकर खोया करे फिर आधसेर घीमे उस औषधियुक्त खोयेको भूने जब मंद २ आँचसे भुनकर तैयार होजावे फिर इसको दुगुनी खांडकी चासनीमे मिलावे जब देखे कि ठीकपाक तैयार हो गया फिर नीचे उतार लेवे और ठंडा करे तथा इसमे छोटी इलायची, और वडी इलायची, पिस्ता, लौंग, छुवारा, वादाम चिरोंजी जवत्री प्रत्येक १ तोला मिलावे । वंगभस्म, अभ्रक भस्म, ये दोनो दो २ तोला मिलावे, फिर इसके लड्डू वनाकर जठराग्निका वलावल विचारकर खावे तो वृद्धमनुष्य भी युवा हो और स्त्रीसंगमे बडी चपलता दिखावे ॥ ७८–८० ॥

आमलापाक ।

सुपक्वधात्रीफलशुष्कचूर्णं पुनः पुनस्तद्रसभावितं च ॥
शतैकवारान्परिशोष्य पश्चाद्घृतेन तुल्येन सिताद्वयेन ८१॥
घृतार्द्धभागेन च माक्षिकेण विधाय पाकं सह दुग्धपानैः ॥
भुंजीत यस्त्वाशु च कामिनीनां दशं तु विद्रावयते पुरस्तात्

अच्छे पकेहुवे सूखे आमलोंका एकसेर चूर्ण लेकर, गीले आमलोंके रसमे भिगो २ कर सुखावे इसीतरह १०० दफा सुखाकर इसमें १ सेर उत्तम घी, २ सेर मिसरी, आधसेर शहद मिलाकर पाक वनाके अनुमान खाकर दूध पीवे इसके प्रभावसे मनुष्य दशस्त्रियोंको शान्त करसकता है ८१–८२॥

छुवारापाक ।

खर्जूरप्रस्थं मगधापलैकं दुग्धेन संपाच्य चतुर्गुणेन ॥
घृतेन संभर्ज्य पलाष्टकेन द्राक्षाश्वगंधामुसलीद्वयेन ॥८३॥
लवंगजातीफलजातिपत्रीपत्राबलाकेशरकैः समांशैः ॥
सर्वैर्द्विभागासुसितासमेतं वंगाभ्रलोहै स्तुपलार्द्धमानैः ॥८४॥
मज्जात्रयाक्षोटककाश्मरीभिःसाकं विधायास्यच मोदकान्यः
पुष्टस्तु हृष्टःप्रमदामदघ्नो भुंजीत वै रोगगणप्रमुक्तः ॥ ८५ ॥

छुवारा १ सेर (विना गुठली), पीपलका चूर्ण ४ तोले इन दोनोंको ४ चारसेर दूधमें पकावे, जो गाढा होजाय तो आधसेर घीमें मंद २ धांचसे खूब भूने, फिर इसमें मुनक्का असगन्ध, दोनों मुसली, लौंग, जायफल, जवत्री पत्रज, वला, केशर. प्रत्येक दो २ तोला लेकर चूर्ण करे फिर सब औषधियोंसे दुगनी खांडकी चासनी करके उस चासनीमे सब दवाइयोंको मिला देवे, और वंगभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, प्रत्येक दो २ तोला डाले फिर बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, अखरोटकी, गिरू किशमिस, मिलाकर लड्डू बनावे इनके खानेसे मनुष्य हृष्टपुष्ट हो,गर्ववती स्त्रियोंके मानको भंजन करे और सब रोगोंसे रहित रहे ॥ ८३–८५ ॥

मुशलीपाक ।

सुतालमूलीद्वयचूर्णमेव सुवस्त्रपूतं विनिगृह्य प्रस्थम् ॥
गोदुग्धप्रस्थैर्वसुभिश्च पाच्यं यावद्घनं तत्प्रसमीक्ष्य सर्वम्॥
पलाष्टकेनाथ घृतेन भड्ढा पलैकमानानि तथौषधानि ॥
संवक्ष्यमाणानि गुरूक्तयुक्तया खंडं द्विमानं सकलौषधीभ्यः
गोकंटकं चेक्षुशतावरीभ्यां शिवाकणावानरबीजपत्रैः ॥
लवंगखार्जूरसुजातपत्रीमज्जात्रयैश्चंदनगोस्तनीभ्याम ॥८८॥

जातीफलैलानतवंगयुक्तं ग्राह्यं यथोक्तं सकलं पलैकम् ॥
पलद्वयं मोदकमस्य प्रातः सायं समश्नाति समाक्षिकाज्यम् ।
वृद्धोपि तारुण्ययुतस्तरुण्या युक्तोपि चान्यास्तरुणीरिरंसुः॥
वीर्यप्रमोदैर्बलपौरुषाभ्यां युक्तः सुदृग्रोगगणैर्विमुक्तः ॥९०॥

दोनों मुसलियोंका चूर्ण १ सेर लेकर वस्त्रमें छानले । फिर ८ सेर गो दुग्धमें डालकर खोवा करलेवे फिर इस खोवेको आधसेर घीमें भूनलेवे फिर युक्तिपूर्वक इसमें गोखरू, तालमखाणे, शतावर, हरड, पीपल, कौंचके बीज, पत्रज, लौंग, छुवारा, जवत्री, बादाम, पिस्ता, चिरौंजी, चन्दन, दाख, जायफल,छोटी इलायची, वंगभस्म, प्रत्येकका चूर्ण चार २ तोला, खांड सब औषधियोंसे दुगुनी डालकर विधिपूर्वक पाक बनावे इसमेंसे ४ तोलाका लड्डू सवेरे और चार तोला सायंकाल घृत और सहत मिलाके खावे तो वृद्ध पुरुषभी तरुणकी समान स्त्रीसे मैथुन करे और मैथुन करताहुवा भी और स्त्रीरमणकी इच्छा करे और बल तथा वीर्यकी वृद्धि हो आनंद और पुरुषार्थसे युक्त हो आंखोंके सब रोग दूर हों ॥ ८९-९० ॥

वादामपाक ।

मज्जां वातादजं पिष्ट्वा प्रस्थार्धं मानतो बुधः ॥
प्रस्थैकं च सितां पक्त्वा विधिना मेलयेत्ततः ॥ ९१ ॥
पलद्वयं घृतं दत्त्वा चूर्णानेतांश्च संक्षिपेत् ॥
एलाद्वयं जातिफलं लवंगं केशरं त्वचम् ॥ ९२ ॥
कर्षकर्षप्रमाणेन चूर्णयित्वा विमेलयेत् ॥
मज्जाद्वयं पलैकैकं दलाश्चाथ सुवर्णजान् ॥ ९३ ॥
राजतान्छतमानेन संमेल्य विधिना ततः ॥
पंचकर्षप्रमाणेन मोदकान्कारयेद्बुधः ॥ ९४ ॥

धनिनां पुरवासानां भक्षणार्थं हि शोभनम् ॥
बलवृद्धिकरं शश्वद्वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ९५ ॥

छिलीहुई बादामकी गीरूकी पीठी आधसेर, शुद्ध मिसरी १ सेर लेकर विधिपूर्वक चासनी करे, इस चासनीमें १० तोला शुद्ध घृत मिलावे फिर बादामकी पीठी भी इसीमें मिला देवे, फिर छोटी इलायची, बड़ी इलायची, जायफल, लौंग, केशर, दालचीनी, एक २ तोला लेकर इनका बारीक चूर्ण इसीमें मिलावे, चिरोंजी ५ तोला, पिस्ता ५ तोला, मिलावे, और १०० वर्क सुवर्णके, तथा १०० वर्क चांदीके मिलाकर पांच,२तोलेके लड्डू बनावे यह लड्डू धनिक पुरुषोंके और शहरोंमें रहनेवाले पुरुषोंके लिये बहुत अच्छे हैं बलको बढानेवाले और कामशक्तिको बलवान् करनेवाले हैं ॥ ९२-९५ ॥

मलाईपाक।

संतानिकार्द्धप्रस्थं सितां प्रस्थां च संपचेत् ॥
चतुर्पलं घृतं दत्त्वा कुर्यात्पाकं विधानतः ॥ ९६ ॥
एलाद्वयं जातिपत्रीं काश्मीरं च लवंगकम् ॥
प्रत्येककर्षमाचूर्ण्य दलांश्चैव सुवर्णजान् ॥ ९७ ॥
राजतान्मेलयित्वा च मोदकान्पलसम्मितान् ॥
कारयित्वा विधानेन भक्षयेद्धनवांस्ततः ॥
वीर्यवृद्धिकरं शश्वद्वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ९८ ॥

उत्तम दूधकी मलाई आधसेर घी १ पाव शुद्ध देशी मिसरी १ सेर, इन सबको मिलाकर मन्द आंचपर विधिपूर्वक पाक बनावे फिर इसमें छोटी इलायची, बडी इलायची, जवत्री, केशर, लौंग, प्रत्येक एक २तोला मिलावे और यथासंभव सुवर्णके वर्क और चांदीके वर्क मिलाके पांच २ तोलेके लड्डू बनावे फिर प्रातःकाल और सायंकाल इच्छापूर्वक

धनिक पुरुष खावे इसके खानेसे वीर्यकी वृद्धि हो तथा कामशक्ति युक्त बलवान् हो ॥ ९६-९८ ॥

पिष्टीपाक ।

प्रस्थैकं माषजां पिष्टिं प्रस्थार्द्धं मुद्गजं तथा ॥
गोधूमानां च वै चूर्णमर्द्धप्रस्थप्रमाणतः ॥ ९९ ॥
घृते समे विभज्याथ सर्वांश्चैव पृथक्पृथक् ॥
पाकं चैव विधायाथ शर्करांप्रस्थकत्रयम् ॥ १०० ॥
पाकं कृत्वा विधानेन पश्चाच्चूर्णांश्च मेलयेत् ॥
मुशलीद्वयमिक्षुं च अश्वगंधां शतावरीम् ॥ १०१ ॥
वृद्धदारुं कपीकच्छुं पलैकांश्चूर्णयेत्पृथक् ॥
जातीफलं जातिकोशं आकारकरभं त्वचम् ॥ १०२ ॥
लवंगं चैव काश्मीरं तथैव नागकेशरम् ॥
वंगमभ्रं च संमेल्य कर्षकर्षप्रमाणतः ॥ १०३ ॥
कारयित्वा विधानेन द्विपलिकांश्च मोदकान् ॥
प्रातर्नित्यं भक्षणीयं पाकोयं पिष्टिसंभवः ॥ १०४ ॥
कटीशूलं च कार्श्यं च नाशयेन्नात्र संशयः ॥
बलवृद्धिकरं शश्वद्वाजीकरणमुत्तमम् ॥ १०५ ॥

उत्तम उडदकी दालकी बारीकपिसी पीठी १ सेर, मूंगकी दालकी पीठी आधसेर, कणकका आटा आधसेर इनको अलग २ बराबर २ के घीमें विधिपूर्वक भून लेवे फिर तीन सेर उत्तम देशी खांडकी चासनी करे जब समझे कि चासनी तयार होगई तब तीनोंचीज भुनीहुई और यह खांडकी चासनी दोनोंको खूब मिला देवे और इसमें, दोनों मुसली तालमखाणे, असगंध, सतावर विधायरा कौंचके बीजोंकी गिरी, मुलै-

कका चूर्ण चार २ तोले। जायफल, जंवत्री, अकरकरा, दालचीनी, लौंग, केशर, नागकेशर, वंग, अभ्रक, प्रत्येक एक २ तोला मिलावे सबको अच्छीतरहसे मिलाकर दश२ तोलेकी पिंन्नी बनावे इस पिष्टीपाकको नित्य प्रातःकाल खावे तो कृशता कमरकी पीडा दूर होवे बलकी वृद्धि हो कामशक्ति बलवान् हो वीर्य बढे यह परमोत्तम पाकहै इसमें संशय नही ॥ ९९-१०५ ॥

एवं पाकविधानं च तरंगेस्मिन्हि वर्णितम् ॥
ज्ञातव्यं तात विधिना बलवृद्धिकरं महत् ॥१०६॥

इस प्रकार पाकोंके विधानको इसतरंगमें वर्णन करचुकेहै हेतात! इसको तुम विधिपूर्वक समझ लेना यह पाकावली परम बलवीर्यके बढानेवाली है ॥ १०६ ॥

श्री वैद्यपंचानन पं० रामप्रसादप्रणीतनपुंसकामृतार्णवे वाजीकरणपाकवर्णनो नाम चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमस्तरङ्गः ।

गुटिकारसादिवर्णनम् ।

शिष्य उवाच ।

अथ गुटिका रसांश्चैव पुरुषार्थप्रदायकान् ॥
वीर्यवृद्धिकरांश्चैव ब्रूहि मे भिषजां वरः ॥ १ ॥

इसके उपरांत शिष्य बोले है भिषजांवर ! वीर्यके बढानेवाली और पुरुषार्थके देनेवाली गोलियों और रसोंका वर्णन कीजिये ॥ १ ॥

गुरुरुवाच ।

तदुवाच गुरुर्धीमानायुर्वेदस्य पारगः ॥
विधिवत्कथयनां शिष्य गुटिकाश्च रसांस्तथा ॥ २ ॥

इस प्रश्नको सुनकर आयुर्वेदको जाननेवाले गुरु शिष्यको कहने लगे हेशिष्य! अब विधिपूर्वक नपुंसकताके नष्ट करनेवाली गोलियां और रसोंका वर्णन सुनो ॥ २ ॥

वल्लभागुटिका ।

बहुफली मोचरसं मुसल्यौ करहाटकम् ॥
तुगा च मर्कटी बीजं कोकिलाक्षमुटंगणम् ॥ ३ ॥
गोक्षुरं ह्यमृतासत्त्वं जपापुष्यं लिसोरकम् ॥
मस्तगी जातिकोशं च लवंगं वंशजातकम् ॥ ४ ॥
एतानि समभागानि सिता च द्विगुणा भवेत् ॥
पाकं कृत्वा गुटीर्बद्धां कोलमात्रप्रमाणतः ॥ ५ ॥
सायंकाले भक्षयित्वा पिबेद्दुग्धं तदोपरि ॥
नपुंसकत्वरोगघ्नं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ६ ॥

बबूरके बीज, मोचरस, दोनो मुसली, अकरकरा, वंशलोचन, कौंचके बीज, तालमखाणे, उटंगणके बीज गोखरू, गिलोका सत, जपाके फूल, लिसोडे, मस्तगी जवत्री, लौंग, वंशलोचन, इन सबको समानभाग लेकर चूर्ण करे फिर सबसे दुगुनी मिसरीकी चासनीमें मिलाकर छै २ मासेकी गोली बनावे नित्य सायंकाल खाकर ऊपरसे दूध पीवे नपुंसकता दूर हो वीर्यकी वृद्धि हो ॥ ३-६ ॥

वाजीकरणगुटिका ।

करवीरस्य बीजानि बृहतीफलमेव च ॥
वृद्धदारस्य बीजानि वानरीबीजमूलकम् ॥ ७ ॥
एतानि समभागानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥
संमर्द्य तांबूलरसे वटीवल्लयुगं कृतम् ॥ ८ ॥
एकैकं भक्षितं पुंसां नपुंसकगदापहम् ॥
वीर्यवृद्धिकरं पुष्टं बलवाजीकरं परम् ॥ ९ ॥

कटेरीके वीज. कनेरके वीज, विधायरेके वीज, कौंचके वीज, मूलीके वीज, इन सबका वारीक चूर्ण करके वंगला पानके रसमें खरल करके एक २ मासेकी गोली वनावे एकगोली नित्य खाकर दूध पीवे तो नपुंसकता दूर हो वलवीर्यकी वृद्धि हो ॥ ७–९ ॥

चन्द्रोदयरस ।

पलं मृदुस्वर्णदलं रसेंद्रात्पलाष्टकं षोडश गंधकस्य ॥
शोणैस्तु कार्पासभवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः १०
तत्काचकुंभे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटैस्तद्दिवसत्रयं च ॥
पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययंत्रे ततो रसः पल्लवरागरम्यः ११॥
सौवर्णमेतत्सकलामयघ्नं सर्वेषु योगेषु च योजनीयम् ॥
निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव ॥१२॥
जातीफलं चोषणमिंद्रपुष्पं कस्तूरिकायामिह शाण एकः ॥
चंद्रोदयोयं कथितोस्य माषो भुक्तो हि वल्लीदलमध्यवर्त्ती १३
मदोद्धतानां प्रमदागणानां गर्वाधिकत्वं श्लथयत्यवश्यम् ॥
शृतं घनीभूतमतीवदुग्धमानंददायीन्यपराणि पथ्यम् ॥१४॥

उत्तम कुन्दनसुवर्णके वर्क ४ तोले. शुद्ध पारा ३२ तोले. शुद्ध गन्धक ६४ तोले इनकी कजली करके लाल फूलकी कपासके फूलोंके रसमें खरल करे । फिर घिकुवारके रसमें ४ प्रहर खरल करे फिर आतशी शीसीमें भरके. उस शीसीपर ७ कपडमिट्टी करके वालुकायन्त्रमे रखके नीचे आग देवे । जब शीसीके मुखसे धूंवा निकल जावे तब ईंटके टुकड़ेसे शीसीका मुख बन्द करदेय और क्रमसे मंद मध्य, तीक्ष्ण आंच तीन दिनरात्रि देवे. जब शीसीकी नली कारी होजाय तो नीचेसे आग निकाल देवे, फिर स्वांगशीतल होनेपर सिद्धचन्द्रोदयका नवीन पत्रकी लालीकी समान लाल रंगके चंद्रोदयको शीसी फोडकर निकाल लेवे इसको सर्व रोगोंमें अनुपान-

भेदसे देवे चन्द्रोदय ४ तोला, भीमसेनी कपूर १६ तोला, जायफल, लौंग, कालीमिर्च यह १६ तोला लेवे और कस्तूरी ४ मासे लेवे सबको खरल करके शीसीमें भरके रक्खे इसमें एकमासा पानमें रखके खाय तो मदमाती स्त्रियोंके गर्वको अवश्य दूर करे इसके ऊपर कढकर गाढा हुवा दूध पीवे और घृत, मिसरी, चावल, माष, आदि आनन्ददायक पथ्यभोजन करे ॥ १०--१४ ॥

लघुचन्द्रोदय रस ।

जातीफलं लवंगं च कर्पूरं मरिचं तथा ॥
प्रत्येकं तोलकं दत्त्वा सुवर्णस्य च माषकम् ॥ १५ ॥
अंडजं माषमानं च सर्वतुल्यमथेश्वरम् ॥
यत्नतो मर्दयेत्खल्वे चतुर्गुंजावटीं चरेत् ॥ १६ ॥
एष चंद्रोदयो नाम रसो वाजीकरः परः ॥
हंति रोगानशेषांश्च बलवीर्याग्निवर्द्धनः ॥ १७ ॥

जायफल, लौंग, भीमसेनीकपूर, कालीमिर्च, प्रत्येक एक २ तोला, सुवर्णके वर्क एक मासा, कस्तूरी एक मासा, रससिंदूर ४॥ तोला, सबको एकत्र करके खरल करे पानके रसमें चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे मलाईके संयोगसे खाय ऊपर दूध पीवे यह चंद्रोदय रस वाजीकरण कर्ता है तथा सर्व रोगोंको नष्ट करे । बल, कांति, वीर्य, जठराग्नि इनको ·वे ॥ १५--१७ ॥

सिद्धसूतरस ।

मुक्ताफलं शुद्धसूतं सुवर्णं रौप्यमेव च ॥
यवक्षारं च तत्सर्वं तोलैकैकं प्रकल्पयेत् ॥ १८ ॥
रक्तोत्पलपत्रतोयैर्मर्दयेत्पत्तलीकृतम् ॥
मर्दयेच्च पुनर्दत्त्वा गंधकं तदनंतरम् ॥ १९ ॥

क्षिप्त्वा काचघटीमध्ये सन्निरुध्य त्रियामकम् ॥
सिकताख्ये पचेच्छीते सिद्धं सूतं तु भक्षयेत् ॥ २० ॥
पंचरक्तिप्रमाणेन मुसलीशर्करान्वितम् ॥
शुक्रवृद्धिं करोत्येष ध्वजभंगं च नाशयेत् ॥ २१ ॥
दुर्बलं वपुरत्यर्थं बलयुक्तं करोत्यसौ ॥
मुद्गगर्भं घृतं क्षीरं शालयो माहिषं हितम् ॥ २२ ॥

मोती, शुद्धपारा. सुवर्णभस्म, चांदीकी भस्म, जवाखार प्रत्येक एक २ तोला लेवे फिर लालकमलके पत्रोंके रसमें खरल करके बराबरकी शुद्ध गन्धक मिलाके तीन प्रहर बराबर खरल करे फिर आतसी शीसीमें भरके वालुकायन्त्रद्वारा तीन प्रहरकी आंच देवे स्वांगशीतल होनेपर इस सिद्ध सूतको निकाल कर शीसीमें रक्खे । इसमेंसे पांचरत्ती लेकर मूसली और मिसरीमें मिलाकर सेवन करे तो वीर्यकी वृद्धि हो इंद्रियकी शिथिलता और अन्यविकार दूर हो । दुर्बल शरीरवाला भी इस रसके प्रभावसे बलवान् हो इसके सेवनके समय मूंग, घी, दूध, सांठीचावल, भैसका दूध, मक्खन, यह सब हित है खटाई, लालमिर्च, तेल आदि कुपथ्य त्याग देवे ॥ १८--२२ ॥

वसंतकुसुमाकररस ।

द्विभागं हाटकं चंद्रं त्रयो वंगाहिकांतकाः ॥
चतुर्भागं शुद्धमभ्रं प्रवालं मौक्तिकं तथा ॥ २३ ॥
भावयेद्गव्यदुग्धेन तथा चेक्षुरसेन च ॥
वासालाक्षारसोदीच्यरम्भाकंदप्रसूनकैः ॥ २४ ॥
शतपत्ररसेनैव मालत्या कुंकुमोदकैः ॥
पश्चान्मृगमदैर्भाव्यं सुगंधिरससंभवम् ॥ २५ ॥

कुसुमाकर आख्यातो वसंतपदपूर्वकः ॥
गुंजाद्वयेन संसेव्यः सितामध्वाज्यसंयुतः ॥ २६ ॥
मेहघ्नः कांतिदश्चैव कामदः पुष्टिदस्तथा ॥
वलीपलितनाशश्च श्रुतिभ्रंशं विनाशयेत् ॥ २७ ॥
पुष्टिदोयं बलायुष्यपुत्रप्रसवकारकः ॥
तथा सोमरुजं हंति साध्यासाध्यमथापि वा ॥ २८ ॥

सुवर्णके वर्क दोतोला, वंगभस्म, शीशेकीभस्म, कांतलोहभस्म, प्रत्येक एक२ तोला धान्याभ्रकभस्म,मोती, मूंगेकी भस्म, प्रत्येक चार २ तोला, सबको मिलाकर, गौके दूध ईखके रस अडूसा, लाख, नेत्रबाला, केलाकंद, केलेके फूल, कमल, मालती, केशर, इनके रसोंकी भावना देकर सुखाता जावे फिर कस्तूरी तथा और सुगंधित रसोंकी भावना देवे फिर इस वसंतकुसुमाकर रसकी दो २ रत्तिकी गोलियां बनाकर, मिसरी, सहत, घीमे मिलाके खावे तो सब प्रकारके प्रमेहोंको नाश करे। कांति और कामशक्ति बढावे शरीरको पुष्ट करे। वलीपलितका नाशकरे, बहरेपनको दूरकरे, वीर्यको पुष्ट करे। बल तथा आयुको बढावे, संतानको देनेवाला, साध्य तथा असाध्य सोमरोगका नाश करनेवाला यह रसहै ॥ २३–२८ ॥

पूर्णचंद्ररस।

मृताभ्रलोहं सशिलं जतु स्याद्विडंगताथे मधुना घृतेन ॥
पिष्टंप्रशस्तं खलु पूर्णचंद्रोमापोस्य पुष्ट्यै भवतिप्रशस्तः

रससिंदूर अभ्रकभस्म शिलाजीत, वायविडंग, सुवर्णमाक्षिकभस्म इन सबको समानभाग लेकर खरल करके रक्खे। इसमेंसे शहद और घृतमें मिलाकर एकमासा खावे तो यह पूर्णचंद्ररस अत्यंत पुष्टि कर्ता है२३-२८

कामदेवरस।

तारं वज्रं सुवर्णं च ताम्रं सूतकगंधकम् ॥
लोहं क्रमविवृद्धानि कुर्यादेतानि मात्रया ॥ ३० ॥
विमर्द्य कन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमये घटे ॥
विमुद्र्य पिठरीमध्ये धारयेत्सैंधवैर्भृते ॥ ३१ ॥
वह्निं शनैःशनैः कुर्याद्दिनैकं तु तदुद्धरेत् ॥
स्वांगशीतं च संचूर्ण्य भावयेदर्कदुग्धकैः ॥ ३२ ॥
अश्वगंधा च काकोली वानरी मुसली क्षुरा ॥
त्रिवारं च रसैर्भाव्य शतावर्याश्च भावयेत् ॥ ३३ ॥
कस्तूरीव्योषकर्पूरं कंकोलैल लवंगकम् ॥
पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णं विमिश्रयेत् ॥ ३४ ॥
सर्वैः समां शर्करां च दत्त्वा शाणोन्मितं पिबेत् ॥
गोदुग्धद्विपलेनैव मधुराहारसेवकः ॥ ३५ ॥
अस्य प्रभावात्सौंदर्यं बलं तेजो विवर्द्धते ॥
तरुणीरमयेद्वृद्धो न च हानिः प्रजायते ॥ ३६ ॥

रूपरस हीरेकी भस्म, सुवर्णभस्म, ताम्रभस्म, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, लोहभस्म ये क्रमसे एकसे दूने लेवे सबकी कजली करके घीकुमारके रसमें खरल करे फिर आतशी शीशीमें भरके कपडमिट्टीकर छेदवाली हांडीमें रखदेवे और उस हांडीको सेंधेनमकसे भरदेवे फिर एक दिनरात मंद २ आंच देवे जब स्वांग शीतल हो तो निकालकर खरलमें डाले फिर आकके दूधकी एक भावना देवे. और असगंध. काकोली, कौंच, मुसली, तालमखाने इनके रसकी तीन २ भावना देवे तथा शतावरके रसकी तीन भावना देवे। फिर कस्तूरी. त्रिकुटा. कपूर कंकोल इलायची, लौंग, इनका चूर्ण सबसे अष्टमांश मिलादे मिसरी सबकी बराबर मिलावे

फिर इसमेसे चार मासे औषधी भक्षण कर आधपाव दूध पीवे और इसके सेवन समय मीठे चिकने पदार्थही खावे खटाई, लालमिर्च, वातकर्ता, आदि कुपथ्य न खाय तो इस रसके प्रतापसे सुंदरता, बल तेज, बढे और बृद्ध मनुष्यभी स्त्री रमणकरे तथापि उसके कोई हानि न होवे ॥ ३०–३६ ॥

बृहत्पूर्णचंद्ररस ।

द्विकर्षं शुद्धसूतस्य गंधकं च द्विकार्षिकम् ॥
लोहभस्म परं चाभ्रं जारितं च पलांशकम् ॥ ३७ ॥
द्वितोलं रजतं चैव वंगभस्म द्विकार्षिकम् ॥
सुवर्णं तोलकं चैव ताम्रं कांस्यं च तत्समम् ॥ ३८ ॥
जातीफलं चेंद्रपुष्पमेला भृंगं च जीरकम् ॥
कर्पूरं वनितामुस्तं कर्षकर्षं पृथक् पृथक् ॥ ३९ ॥
सर्वं खल्वतले क्षिप्त्वा कन्यारसविमर्दितम् ॥
भावयित्वा वरातोयैः कंबुकानां रसेन च ॥ ४० ॥
एरंडपत्रैरावेष्ट्य धान्ये रात्रिदिनोषितम् ॥
उद्धृत्य मर्दयित्वा च वटिकां चणसम्मिताम् ॥ ४१ ॥
खादेच्च पर्णखंडेन संयुक्तां व्याधिनाशिनीम् ॥
सर्वव्याधिविनाशाय काशीनाथेन भाषितः ॥ ४२ ॥
पूर्णचंद्ररसो नाम सर्वरोगेषु योजयेत ॥
बल्यो रसायनो वृष्यो वाजीकरण उत्तमः ॥ ४३ ॥
अयमष्ठीलिकां हंति कासश्वासमरोचकम ॥
आमशूलं कटीशूलं हृच्छूलं पित्तशूलकम ॥ ४४ ॥

अग्निमांद्यमजीर्णं च ग्रहणीं चिरजामपि ॥
आमवाताम्लपित्तं च भगंदरमपि द्रुतम् ॥ ४५ ॥
कामलां पाण्डुरोगं च प्रमेहं वातशोणितम् ॥
नातः परतरः श्रेष्ठो विद्यते वाजिकर्मणि ॥ ४६ ॥
रसस्यास्य प्रसादेन नरो भवति निर्गदः ॥
मेधां च लभते वाग्मी सर्वशास्त्रसमन्वितः ॥ ४७ ॥
मदनस्य समा कांतिर्मदनस्य समं बलम् ॥
गीयते मदनेनैव मदनस्य समं बपुः ॥ ४८ ॥
स्त्रीणां तथानपत्यानां दुर्बलानां च देहिनाम् ॥
क्षीणानामल्पशुक्राणां वृद्धानां वातरेतसाम् ॥
ओजस्तेजःकरश्चायं स्त्रीषु कामविवर्द्धनम् ॥ ४९ ॥
अभ्यासेन निहंति मृत्युपलितं सर्वामयध्वंसनो
वृद्धानां मदनोदयोदयकरः प्रौढांगनासंगमे ॥
नित्यानंदकरः सुखातिसुखदो भूपैः सदा सेव्यते
दृष्टः सिद्धफलो रसायनवरः श्रीपूर्णचंद्रो रसः ॥ ५० ॥

शुद्धपारा दो तोला शुद्धगंधक दो तोला, लोहभस्म ४ तोला. चांदीकी भस्म दो तोला सुवर्णभस्म एकतोला, तांबेकी भस्म १ तोला, कांस्यभस्म १ तोला जायफर लौंग इलायची, भांग, जीरा कपूर फूलप्रियंगु, नागरमोथे. प्रत्येक एक २ तोला लेवे । इन सबको खरलमें डालकर त्रिकुटाके रसमें खरल करे फिर त्रिफलेके रसमे खरलकर अथवा काढेमें खरल करके सुखावे फिर सुपारीके काढेकी भावना देकर गोला बनावे और उस गोलेको एरंडके पत्तोंमें लपेटकर तीन दिनरात धानोंकी राशीमें गाड रखना देवे फिर चौथेदिन निकालकर पानीमे चनेकी बराबर

गोलियें बनावे । एकगोली पानके साथ खाय यह संपूर्ण व्याधियोंके नाशनार्थ काशीनाथ आचार्यने कहाहै इसपूर्ण चंद्ररसको संपूर्ण रोगोंमें देवे । यह बलकारी, रसायन वृष्य, उत्तम वाजीकरण कर्ता तथा अष्ठीलिका, खांसी, श्वास, अरुचि, आमशूल, कटीशूल, हृच्छूल, पित्तशूल, मंदाग्नि, अजीर्ण, पुरानी संग्रहणी, आमवात, अम्लपित्त, भगंदर, कामला, पांडुरोग, प्रमेह, वातरक्त, इन सबको दूरकरे । इससे बढ़कर वाजीकर्ता दूसरा रस नहीं इसके प्रभावसे मनुष्य रोगरहित होताहै सब शास्त्रोंके जाननेकी बुद्धि हो कामदेवके समान कांति, बल, बडाई, और देह हो । स्त्रियोंको जिनके संतान न होती हो ऐसे दुर्बल पुरुषोंको क्षीण, अल्पशुक्र, वृद्ध, वातरेतस, इनको ओज और तेजका देनेवाला, स्त्रियोंमें काम बढानेवाला और अभ्याससे सेवन किया अकालमृत्यु और बुढापेको रोकताहै, संपूर्ण रोगोंको नष्ट करताहै, वृद्धपुरुषोंको भी स्त्रीसंगमें कामवृद्धि करता है नित्य आनंदकारी, अत्यंत सुखदाता, अनुभव किया हुवा राजाओंके सेवन करने योग्य, रसायनोंमें श्रेष्ठ यह श्रीपूर्णचंद्ररस है ॥ ३७–५० ॥

मकरध्वजरस ।

स्वर्णद्विभागौ वंगं च मौक्तिकं कांतलोहकम् ॥
जातीकोपफले रूप्यं कांस्यकं रससिंदुरम् ॥ ५१ ॥
प्रवालचंद्रं कस्तूरी अभ्रकं चैकभागिकम् ॥
स्वर्णसिंदूरतो भागाश्चत्वारः कल्पयेद्बुधः ॥ ५२ ॥
नातः परतरः श्रेष्ठः सर्वरोगनिषूदनः ॥
वीर्यवृद्धिकरश्चैव वाजीकरण उत्तमः ॥ ५३ ॥

सुवर्णभस्म दोतोला, वंगभस्म, मौक्तिकभस्म, कांतलोहभस्म, जायफल, जावत्री, चांदीकी भस्म, कांसीकी भस्म, रससिंदूर, प्रत्येक एक ?

तोला स्वर्णसिंदूर ४ तोला, सबको एकत्रकर पानके रसमें खरल कर सेवन करे यह सर्वरोगोंको नष्ट करनेवाला और वीर्यको बढानेवाला उत्तम वाजीकरण है ॥ ५१--५३ ॥

श्रीमन्मथरस ।

रसगंधकयोर्ग्राह्यं कर्षमेकं तु शोधितम् ॥
अभ्रं निश्चंद्रकं दद्यात्पलार्द्धं तु विचक्षणः ॥ ५४ ॥
कर्पूरं शोधितं दद्याद्वंगं च कोलसंमितम् ॥
ताम्रं कोलार्द्धकं तत्र निःशेषं मरिचं क्षिपेत् ॥ ५५ ॥
लौहं कर्षं सुजीर्णं च वृद्धदारुकबीजकम् ॥
विदारी शतमूली च क्षुरबीजं बला तथा ॥ ५६ ॥
मर्कटयतिबला चैव जातीकोषफले तथा ॥
लवंगं विजयाबीजं श्वेतसर्जयमानिका ॥ ५७ ॥
एतेषां चूर्णमादाय प्रक्षिपेच्छाणसंमितम् ॥
गुंजाद्वयं च भोक्तव्यं कोष्णं क्षीरं पिबेदनु ॥ ५८ ॥
प्रमदा यस्य विद्यंते गृहे च न्यवसायिनः ॥
न तस्य शिश्नशैथिल्यमौषधस्यास्य सेवनात् ॥ ५९ ॥
न च शुक्रक्षयं याति न बलं ह्रासतां व्रजेत् ॥
कामरूपी भवेद्दिव्यो वृद्धः षोडशवार्षिकः ॥ ६० ॥
रसायनवरो बल्यो वाजीकरण उत्तमः ॥
रस श्रीमन्मथो नाम रसेषु ह्युत्तमः स्मृतः ॥ ६१ ॥

[illegible] १ तोला, शुद्धगंधक १ तोला उत्तम अभ्रकभस्म दो तोला [illegible], और वंगभस्म प्रत्येक आठ २ मासे ताम्रभस्म ४ मासे [illegible] १ तोला । [illegible] बीज, बिदारीकंद, शतावर तालमखाने,

खरटी, कौंचके बीज, गंगेरन, जायफल, जावत्री, लौंग, भांगके बीज, सफेद राल, अजवायन, प्रत्येकका चूर्ण चार २ मासे लेवे। पहले पारे गंधककी कजली करके फिर उसमें सब धातुवोंको मिलाके एकजीव करे फिर सबको मिलाकर पानके रसमें खरलकर दो २ रत्तीकी गुटिका बना-लेवे गोली खाकर ऊपरसे थोडा गर्मदूध पीवे। तो इस रसके प्रभावसे जिस व्यवसायी पुरुषके घरमें बहुत स्त्रियें होवें उसकी इंद्रियमें भी शिथिलता नहीं आती और न वीर्यक्षीण हो न बलकी हानि हो। इसके प्रभावसे वृद्ध भी १६ वर्षके समान रूपवाला हो यह रसायन बलकारी और उत्तम वाजीकरण है श्रीमन्मथरस रसोंमे उत्तम कहाहै ॥ ५४-६१ ॥

बृहच्छृंगाराभ्रक ।

पारदं गंधकं चैव टंकणं नागकेसरम् ॥
कर्पूरं जातिकोपं च लवंगं तेजपत्रकम् ॥ ६२ ॥
एतेषां कर्षभागानि सुवर्णं तत्समं भवेत् ॥
शुद्धकृष्णाभ्रभस्मापि चतुष्कं पिचुभागिकम् ॥ ६३ ॥
तालीशं वनकुष्टं च मांसी पुष्पवरांगकम् ॥
एलाबीजं त्रिकटुकं त्रिफला गजपिप्पली ॥ ६४ ॥
एषां कर्षद्वयं चैव पिप्पलीरसभावितम् ॥
अनुपानं प्रयोक्तव्यं चोचं क्षौद्रसमायुतम् ॥ ६५ ॥
नानारोगप्रशमनं विशेषात्कासरोगनुत ॥
वातिकं पैत्तिकं चैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम् ॥ ६६ ॥
हृच्छूलं पार्श्वशूलं च शिरःशूलं विशेषतः ॥
स्वरामयं तथा कुष्टं श्लेष्माणं वातशोणितम् ॥ ६७ ॥

रक्तपित्तं च कासं च नाशयेन्नात्र संशयः ॥
मुसलीघृतक्षौद्रैश्च वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ६८ ॥

शुद्धपारा, शुद्ध गन्धक, सुहागा, नागकेशर, भीमसेनी कपूर, जायफल, लौंग, तेजपात, प्रत्येक एक २ तोला । सुवर्णके वर्क एक तोला शुद्ध धान्याभ्रकभस्म ४ तोला, तालीसपत्र. नागरमोथा, कूठ, जटामांसी, जावत्री, दालचीनी, छोटी इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेडा, आमला. गजपीपल, प्रत्येक दो २ तोला लेवे, इन सबका चूर्णकर पीपलके क्वाथकी भावना देवे तो यह रस तैयार होगया । इसको दालचीनी और सहतसे चाटे तो यह अनेक रोगोको नष्ट करे विशेषकर खांसीको नष्ट करे । वातके, पित्तके कफके, सन्निपातके रोगोको नष्ट करे, तथा हृद्-यका शूल, पार्श्वशूल, मस्तकपीडा. स्वरभंग, कुष्ठ, कफके रोग, वातरक्त, रक्तपित्त, इनको दूर करता है मुसली और घी, शहद, इनके संयोगसे खावे तो यह परम वाजिकर्ता है ॥ ६२-६८ ॥

पुष्पधन्वारस ।

रसभुजगलोहान्यभ्रकं च त्रिभागं
कनकविजययष्टी शाल्मली नागवल्ल्यः ॥
सितमधुघृतदुग्धैः सेवितो वीर्यवृद्धी
रमयतिबहुकांताः पुष्पधन्वा रसः स्यात् ॥ ६९ ॥

शुद्धपारा १ भाग सीसेकी भस्म १ भाग. लोहभस्म १ भाग, अभ्रक भस्म ३ भाग. इनको एकत्र कर धतूरेके रसकी एक भावना और भांग, मुलहठी, सेमर पान इनके रसकी एक २ भावना देवे फिर इसको मिसरी, शहद घीमें मिलाकर चाटे ऊपरसे दूध पीवे इसके प्रभावसे वीर्यकी वृद्धि हो अनेक स्त्रियोंसे रमण करे यह पुष्पधन्वा रस है ॥ ६९ ॥

कन्दर्पसुन्दररस ।

सूतो वज्रमहिमुक्ता तारं हेम सिताभ्रकम् ॥
रसैः कार्पासकानेतान्मर्दयेदारिमेदजैः ॥ ७० ॥
प्रवालं चूर्णगंधञ्च द्विद्विकर्ष विमिश्रयेत् ॥
स्वरसे वाजिगंधाया विमर्द्य मृगशृंगके ॥ ७१ ॥
क्षिस्वा मृदुपुटे पक्त्वा भावयेद्धातकीरसैः ॥
काकोली मधुकं मांसी बलात्रयविपेंगुदम् ॥ ७२ ॥
द्राक्षा पिप्पली वंदा कबरी पर्णीचतुष्टयम् ॥
परूषकं कसेरुश्च मधुकं वानरी तथा ॥ ७३ ॥
भावयित्वा रसैरेषां शोपयित्वा विचूर्णयेत् ॥
एला त्वक्पत्रकं मांसी लवंगागरुकेशरम् ॥ ७४ ॥
मुस्तं मृगमदं कृष्णा जलं चंद्रश्च मिश्रयेत् ॥
एतच्चूर्णैः शाणमितैः रसं कंदर्पसुंदरम् ॥ ७५ ॥
खादेच्छाणमितं रात्रौ सिता धात्री विदारिका ॥
एतेषां कर्षचूर्णेन सर्पिष्कर्षेण सम्मितम् ॥ ७६ ॥
तस्यानुद्विपलं क्षीरं पिबेत्सुखितमानसः ॥
रमणी रमयेद्बह्वीर्न हानिं क्वापि गच्छति ॥ ७७ ॥

शुद्धपारा, हीरेकी भस्म, शीसेकी भस्म, मोतीकी भस्म, चांदीकी भस्म, सफेद अभ्रकभस्म, प्रत्येक चार२ तोला लेकर कपासके फूलोंके रसकी एक भावना और खैरके क्राथकी एक भावना देवे, फिर मूंगेकी भस्म दो तोला शुद्ध गन्धक तोला, लेकर असगन्धके रसमें खरल करके हिरनके सींगोंमें भर देवे फिर इन सींगोंपर कपडमिट्टी कर लघुसंपुटमें फूंक देवे, फिर धायके फूल,

काकोली, मुलठी, जटामांसी, बला, अतिबला, नागबला, भसींडा, हिंगोट, दाख, पीपल, बांदा, शतावर, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, फालसा, कसेरू, महुवा, कौंचके बीज, इनमेंसे जिसका रस मिले रसकी वरना क्वाथकी अलग २ भावना देकर सुखाता जावे । फिर इलायची, तज, पत्रज, जटामांसी, लौंग, अगर, केशर, नागरमोथा, कस्तूरी, पीपल, नेत्रवाला, भीमसेनी कपूर, इन सबका चूर्ण मिलावे तो यह कन्दर्पसुन्दर रस तयार हुवा । इसमेंसे चार मासे लेकर उसमें आमले, विदारीकन्द, मिसरी प्रत्येक एक २ तोला मिलाकर रात्रीके समय खावे ऊपरसे आध पाव पक्का दूध पीवे और प्रसन्नचित्त रहे तो इसके प्रभावसे अनेक स्त्रियोंसे गमन करके भी वीर्यहानी नहीं होती ॥ ७०-७७ ॥

लक्ष्मीविलासरस ।

पलं कृष्णाभ्रचूर्णस्य तदर्द्धौ रसगंधकौ ॥
कर्पूरं वै तदर्द्धं च जातीकोषफले तथा ॥ ७८ ॥
वृद्धदारुकबीजं च बीजमुन्मत्तकस्य च ॥
त्रैलोक्यविजयाबीजं विदारीकंदमेव च ॥ ७९ ॥
नारायणी तथा नागबला चातिबला तथा ॥
बीजं गोक्षुरकस्यापि नैचुलं बीजमेव च ॥ ८० ॥
एतेषां कार्षिकं चूर्णं पर्णपत्ररसेन च ॥
निष्पिष्य वटिका कार्या त्रिगुंजाफलमानतः ॥ ८१ ॥
निहंति सन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणान् ॥
वातोत्थानपि पित्तोत्थान्नास्त्यत्र नियमः क्वचित् ॥ ८२ ॥
कुष्ठमष्टादशविधं प्रमेहान्विंशतिं तथा ॥
नाडीव्रणं व्रणं घोरं गुदामयभगंदरम् ॥ ८३ ॥

श्लीपदं कफवातोत्थं चिरजं कुलसंभवम् ॥
गलशोथमंत्रवृद्धिमतीसारं सुदारुणम् ॥ ८४ ॥
कासपीनसयक्ष्मार्शः स्थौल्यदौर्गंध्यमेव च ॥
सर्वशूलं शिरःशूलं स्त्रीणां गदनिषूदनम् ॥ ८५ ॥
वटिकां प्रातरेकैकां खादेन्नित्यं यथाबलम् ॥
अनुपानमिह प्रोक्तं मांसं मिष्टं पयो दधि ॥ ८६ ॥
वारिभक्तसुरासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ॥
वृद्धोपि तरुणस्पर्द्धी न च शुक्रस्य संक्षयः ॥ ८७ ॥

उत्तम शुद्ध सहस्रपुटी कृष्णाभ्रकभस्म ४ तोला, पारा, गन्धक, दोनों दो २ तोला, भीमसेनी कपूर १ तोला, जायफल, जावत्री, विधायरेके बीज, धतूरेके बीज, भांगके बीज, विदारीकन्द, शतावर, बला, अतिबला, गोखरू, समुद्रफल, इन सबको एक २ तोला लेवे और इन सबको बारीक चूर्ण करके पानोंके रसमें खरलकर । तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे । यह गोलियां सन्निपातसे हुवे दारुण रोगोंको दूर करे और वातसे पैदा हुवे रोग, पित्तसे पैदा हुवे रोग, और सब किस्मके रोग, अठारह कुष्ठ, बीस प्रकारके प्रमेह, नासूर, घाव, भगंदर, कफवातसे हुवा श्लीपद, गलेकी सूजन, अंत्रवृद्धी, अतिसार, खांसी, पीनस, क्षयी, बवासीर, मेदरोग, देहकी दुर्गंधि, सब किस्मके शूल, शिरका दर्द, स्त्रियोंके रोग, यह सब इस लक्ष्मीविलासके सेवनसे दूर होतेहै,। इसको प्रातःकाल जठराग्निका बलाबल विचारकर खावे और इसको खाकर मांसरस अथवा दूध पीवे और मीठे अन्न, दूध दही, घृत, जलमे पके चावल, मद्यविशेष, आसव, इनका सेवन करे और पथ्यमे रहे । इसके सेवनसे बूढाभी कामदेवके समान रूपवान हो और जुवाकी सदृश स्त्रीगमनकी इच्छा करे और यथेच्छ स्त्रियोंसे गमन करनेपर भी वीर्यकी हानि न हो ॥ ७९-८७ ॥

श्रीकामदेवरस ।

कामदेवमथो सूतं कामिनां कामवृद्धये ॥
यस्य प्रसादतो बल्यो रम्यश्च रमते स्त्रियम् ॥ ८८ ॥
पारदं पलमेकं स्याद्विपलं शुद्धगंधकम् ॥
रक्तकार्पासतोयेन घृष्ट्वा काचस्य कुप्यतः ॥ ८९ ॥
निक्षिप्य टंकणेनैव मुखं तस्य निरोधयेत् ॥
वालुकायंत्रमध्यस्थं कुप्यं च कुरुते दृढम् ॥ ९० ॥
अहोरात्रं पचेदग्नौ शास्त्रवित्कुशलो भिषक् ॥
शीते चादाय पात्रस्थं कूपिकांतरलंबितम् ॥ ९१
दरदेन समं रक्तमुज्ज्वलं भस्म यद्भवेत् ॥
भक्षयेन्माषमेकं च घृतेन मधुना सह ॥ ९२ ॥
पश्चाद्दुग्धं गुडं चाज्यं कृष्णेक्षुमपि शर्कराम् ॥
द्राक्षाखर्जूरमधुकप्रभृतीनथ भक्षयेत् ॥ ९३ ॥
त्रिफलामधुना याति शांतिं पित्तं चिरोद्भवम् ॥
निर्गुण्डिकारसेनात्र दुर्वारा वातवेदना ॥ ९४ ॥
प्रशमं याति वेगेन नूतनं च वपुर्भवेत् ॥
वीर्यवृद्धिप्रभावेण वृद्धोपि रमते स्त्रियम् ॥ ९५ ॥

कामदेव और पान यह दोनो कामी पुरुषको काम वृद्धि कारक है जिनकी प्रसन्नतासे निर्बलभी बलवान् और सुन्दर होकर स्त्रियोंसे रमण करता है शुद्धपारा ४ तोला शुद्ध गन्धक ८ तोला दोनोंकी कजली करके लाल कपासके रसमें दो प्रहर खरल करके आतशी शीशीमें भरके उस शीशीके मुखको सुहागेसे बन्द करके वालुकायन्त्रद्वारा शास्त्रका जाननेवाला वैद्य एक दिनरात्रि आंच देवे फिर स्वांगशीतल होनेपर उस

रसको शीसीसे निकाल ले, वह रस सिंगरफके रंगका लाल वर्ण निकलेगा। इस रसको १ मासा घी और सहतसे खावे और घी, खांड, दूध, कालीमिर्च, छुवारा, महुवा, आदि मधुर और चिकने पदार्थ खाय और पथ्यसे रहे। त्रिफला और सहतसंग इस रसको खाय तो पित्तके रोग शान्त हो। निर्गुंडीके रससे खाय तो दुर्निवार वातकी पीडा शान्त हो और नवीन देह हो, इस रसको वाजिकर्ता पदार्थोंसे सेवन करे तो वीर्यकी वृद्धि होनेसे वृद्धपुरुष भी स्त्रीरमण करे ॥ ८८-९५ ॥

रससेवनमें आज्ञा।

रससेवी नरः पथ्यं सेवेत वा ह्यतंद्रितः ॥
तैलमम्लं च तीक्ष्णं च कुपथ्यं परिवर्जयेत् ॥ ९६ ॥

रसको सेवनकर्ता मनुष्यको सावधानीसे रहकर पथ्यही सेवन करना चाहिये और तेल, खटाई, लाल मिरच, आदि तीक्षणपदार्थ और कुपथ्यको त्यागदेवे ॥ ९६ ॥

कस्तूरीगुटिका।

सुवर्णं मृगनाभिं च रौप्यकाश्मीरकौ तथा ॥
लघुएला जातिफलं तुगा क्षीरी तथैव च ॥ ९७ ॥
जातिपत्रीं च संचूर्ण्य भागवृद्ध्या प्रयोजयेत् ॥
अजादुग्धे च संपेश्य नागवल्लीरसे तथा ॥ ९८ ॥
दिनत्रयं विमर्द्याथ युग्मगुंजासमा वटी ॥
संतानिकायुतं भुक्तं रेतःक्षयनिवारणम् ॥ ९९ ॥
मधुना मेहनाशाय शैथिल्ये पानमंबुनम ॥
गुटिकां भक्षयेद्धीमान्धातुसंजीवनीं शुभाम ॥ १०० ॥

सुवर्णके वर्क १ भाग, कस्तूरी २ भाग, चांदीके वर्क ३ भाग, केशर ४ भाग, छोटी इलायचीके बीज ५भाग, जायफल ६ भाग, वंशलोचन ७ भाग, जावित्री ८ भाग इन सबका चूर्णकर बकरीके दूधमे और पानके रसमे तीनदिन खरल करके दो २ रत्तीकी गोलियां बनालेवे । जिसकी धातु क्षीण होगई हो उसको मलाईके साथ या मलाईके पाककी साथ खिलावे और सहदके साथ प्रमेहोंके नष्ट करनेको देवे । पानके संग शिथिलतामें, देवे इसप्रकार इन शुभधातुसंजीवनी गोलियोंको बुद्धिमान् मनुष्य सेवन करे ॥ ९७-१०० ॥

वीर्यस्तंभी गुटिका ।

जातीफलं लवंगं च जातीपत्रं सकुंकुमम् ॥
सूक्ष्मैला चाहिफेनं च आकारकरभस्तथा ॥ १०१ ॥
प्रत्येकं कर्षमात्राणि कर्पूरं शाणमात्रकम् ॥
नागवल्लीदलरसैर्वटी चणकसन्निभा ॥ १०२ ॥
वीर्यसंस्तंभनी ह्येषा बलवर्णाग्निदीपनी ॥
भुक्त्वा शयनसमये पिबेद्दुग्धं सितायुतम् ॥ १०३ ॥

जायफल. लौंग, जावत्री, केशर छोटीइलायची, अफीम, अकरकरा, प्रत्येक एक २ तोला. भीमसेनीकपूर ४ मासे, इन सबको नागरवेलके पानके रसमे खरल करके चणेके प्रमाण गोलियां बनावे । यह गोली वीर्यको स्तंभन कर्ता तथा बल वीर्य. जठराग्नि, इनके बढानेवाली है इनको रात्रिको शयन करते समय खाकर ऊपरसे मिसरी मिला दूध पीवे ॥ १०१-१०३ ॥

स्तंभनवटिका ।

भार्गवं मृगनाभिं च तथा काश्मीरसंभवम् ॥
जातीफलं लवंगं च प्रत्येकं भागयुग्मकम् ॥ १०४ ॥

चतुर्भागाहिफेनं च विजया भागयुग्मकम् ॥
चणकाभा वटी कार्या वीर्यस्तंभकरी मता ॥ १०५ ॥
भक्षयेन्मधुना सार्द्धं कामी नित्यं निशामुखे ॥
ससितं सर्पिषा युक्तं दुग्धं चैव पिबेदनु ॥ १०६ ॥

कस्तूरी १ तोला, केशर, जायफल, लौंग, प्रत्येक दो २ तोला, अफीम ४ तोला, शुद्धभांग २ तोला, इन सबको कूटकर कपड़छान करे और पानीके संयोगसे रगडकर गोलियां बनावे । इनमेंसे कामी पुरुष रात्रिको शयनसमय एकगोली सहतके संयोगसे खावे और ऊपरसे घी, मिसरी मिला गर्म दूध पीवे यह परमोत्तम वीर्यस्तंभन करनेवाली गोलियां हैं ॥ १०४-१०६ ॥

वीर्यस्तंभिनी केशरादिगुटिका ।

काश्मीरं देवसुमनं जातीपत्रफले तथा ॥
शर्करा शाल्मली माजू कारवी चाब्धिशोषकम् ॥१०७॥
तालमूली च माकल्लशिफावर्बुरसर्जकम् ॥
पाठा मस्तकी दरदमहिफेनं च वत्सकम् ॥१०८॥
एतानि शाणमानानि चूर्णयेच्च पृथक् पृथक् ॥
कस्तूरिका च कर्पूरं शाणार्द्धं दीयते बुधैः ॥१०९॥
समं च मधुना योज्याः माषद्वयवटी कृता ॥
ससितदुग्धपानेन भक्षयेत्तां निशामुखे ॥११०॥

केशर, लौंग, जायफल, जवत्री, मिसरी, सेमलकी मुसली माजूफल, कालाजीरा, समुद्रशोष मुसली, अकरकरा, सालमा, कीकरकी कच्चीफली, राल, पाढ, रूमीमस्तगी, शुद्धसिंगरफ, अफीम, इंद्रजौ, प्रत्येक चार ४ मासे लेवे कस्तूरी, भीमसेनी कपूर प्रत्येक दो २ मासे । इन सब औष-धियोंको चूर्णकर बराबरके सहतमें मिलाकर दो २ मासेकी गोलियां बनावे ।

रात्रिको सोते समय एकगोली खाकर ऊपरसे मिसरी मिला दूध पीवे ॥ १०७-११० ॥

वीर्यस्तंभक कामेश्वररस ।

वीर्यस्तंभकरी ह्येषा बलकामविवर्द्धिनी ॥
जातीफलं च सौराष्ट्री कृष्णधत्तूरबीजकम् ॥ १११ ॥
जातीपुष्पमहेः फेनं नागं हिंगुलमेव च ॥
एतानि समभागानि खसक्काथेन मर्दयेत् ॥ ११२ ॥
गुंजामात्रां च वटिकां सितया सह भक्षयेत् ॥
नाम्ना कामेश्वरः प्रोक्तः परमानंदकारकः ॥ ११३ ॥

यह गोली वीर्यको स्तंभनकरती तथा बल और कामकी वृद्धि करनेवाली है जायफल, अकलकरा काले धत्तूरेके बीज, जवत्री, अफीम, शीशेकी भस्म शुद्धसिंगरफ इन सबको समानभाग लेकर खसखसके क्काथमें खरल करके एक २ रत्तिकी गोलियां बनावे । इनमेसे १ गोली मिसरीके साथ खावे तो यह कामेश्वररस परम आनंदका देनेवाला है॥ १११-११३॥

एवं प्रतितरंगे च क्लैब्यदुःखनिवृत्तये ॥
नानाविधाः प्रयोगाश्च वर्णिताः शिष्यसत्तम ॥ ११४ ॥
तथापि उत्तरे तंत्रे ह्यधिके च तरंगके ॥
रसायनान्वाजिकरान्प्रयोगान्कथयामि वै ॥ ११५ ॥

अथ षष्ठस्तरङ्गः ।

तैलसेकलेपादिवर्णनम् ।

शिष्य उवाच ।

तैलसेकप्रलेपादीन् नृणां क्लीबत्वनाशकान् ॥
ध्वजोद्दण्डकरांश्चैव ब्रूहि मे भिषजां वर ॥ १ ॥

शिष्य बोले हे भिषजांवर ! मनुष्योंकी क्लीवता (नामर्दी) के नाश करनेवाले तथा उनकी ध्वज (लिंगेंद्रिय) को उद्दण्ड अर्थात् कामशक्ति युक्त वलवान् करनेवाले तैल सेक लेप पट्टियोंका वर्णन कृपा करके मेरे पास कहिये ॥ १ ॥

गुरुरुवाच ।

प्रश्नं शिष्यमुखाच्छ्रुत्वा किंचित्तूष्णीं हि चिंतयन् ॥
उवाच वै खिन्नमनाः शास्त्रलोकगतिं विदन् ॥ २ ॥

इसप्रकारका प्रश्न शिष्यके मुखसे सुनकर शास्त्र और लोककी गतिके जाननेवाले गुरु थोडी देरतक चुपचाप सोचते रहे फिर खिन्न मन होकर बोले ॥ २ ॥

तात लोकगतिं दृष्ट्वा महाखेदोभिजायते ॥
धर्मकर्मविरहिता नित्यमुन्मार्गगामिनः ॥ ३ ॥
नीरुजोपि क्रियामेनां करिष्यंति ह्यतः परम् ॥
तेषां वै मैथुनेनैवोभयलोको विनश्यति ॥ ४ ॥
विधिं यदि न वक्ष्येऽहं सरुग्वै किंकरिष्यति ॥
धूर्तास्तु वै स्वयं तात शिश्नोदरपरायणाः ॥ ५ ॥
वर्णाश्रमाचारपराः सत्पुरुषाः स्वयं हि वै ॥
इति मत्वा हि तैलादीन्वक्ष्ये क्लीबत्वनाशकान् ॥ ६ ॥

हे पुत्र ! लोककी गति देखते हुये बड़ाभारी दुःख उत्पन्न होता है । जो मनुष्य धर्मकर्मसे हीन होकर नित्यप्रति कुकर्मके रास्तेपरही चलते हैं वह विना रोगसेभी इन तैलादिकोंका इस्तेमाल किया करेंगे फिर नित्य मैथुनोत्साहमेंही अपने इस लोक और परलोलको नष्ट करडालेंगे । यदि मैं इस तैलादि विधिको कथन ही न करूं तो जो मनुष्य क्लीवता (नामर्दी) रोगमें ग्रस्त हैं और जिनकी इंद्रियके पट्ठे मलेजानेसे खराब होगये अर्थात उनमें यथोचित रक्ताभिसरण और वायुकी उग्रता नही होती उन रोगियोंका क्या उपाय होगा । और जो धूर्तलोग हैं वह तो स्वयंही शिश्नोदरपरायण होतेहैं (जिनका खालेना और मैथुन करनाही कर्तव्य है) हे तात ! सत्पुरुषभी वर्णाश्रमधर्मको नहीं छोड सक्ते सो मैं ऐसा समझकर नपुंसकोंके कल्याणके लिये अब तैल आदिकोंका कथन करता हूं तुम सावधान होकर सुनो ॥ ३-६ ॥

बृहतीतैल ।

बृहतीपंचांगमानीय अजादुग्धे विभावयेत् ॥
यंत्रे पातालिके तैलं विधिना संहरेत्पुमान् ॥ ७ ॥
एकविंशतियोगेन मुच्यते स्वकृतार्दनात् ॥

बड़ी कटेलीके जड फूल पत्ते फल छिलका लेकर कूटले फिर बकरीके दूधमें खरल करके छायामें सुखालेवे इसीप्रकार तीनदफा सुखावे फिर इसकी बडी २ गोलियें बनाकर पातालयंत्रद्वारा तेल निकाल लेवे ॥ ७ ॥ इस तेलको २१ दिन इंद्रियपर मालिश करनेसे हस्तमैथुनसे प्राप्तहुई नपुंसकता दूर हो ॥

पातालयंत्र ।

हस्तप्रमाणं निम्नं च गर्त कृत्वा प्रमाणतः ॥ ८ ॥
तस्मिन्भांडं च संस्थाप्य तथान्यत्पात्रमाहरेत ॥
तस्मिन्नौषधवर्गं च दत्त्वान्यच्च शरावकम् ॥ ९ ॥

मुखे च्छिद्राणि संस्थाप्य कृत्वा चैव शरावके ॥
शरावसहितं पात्रं गर्तस्थं भाजनं न्यसेत् ॥ १० ॥
संधिलेपं ततः कृत्वा गर्तमापूर्य मृत्स्नया ॥
पश्चादग्निं च प्रज्वाल्य स्वांगशीतं समुद्धरेत् ॥ ११ ॥
तदंतःस्थं च तत्तैलं गृह्णीयाद्विधिपूर्वकम् ॥
पातालाख्यमिदं यंत्रं जानीहि शिष्यसत्तम ॥ १२ ॥

एक हाथ गहरा गढा खोदकर उसमें बडेमुखका पात्र रखे पीछे दूसरे पात्रमें औषधी रख ऊपरसे छेदोंवाला शराव ढक दे फिर शरावयुक्त औषधिवाले पात्रको उस गढेवाले पात्रपर युक्तिसे उलटा करके रख दे ताके दोनोंके मुख मिल जावें और वह छिद्रोंयुक्त शराव दोनोंके मुखके बीचमें आजावे फिर इन दोनोंके मुखको विधिपूर्वक कपडमिट्टीसे बंद करदेवे और गढेको मट्टीसे दबाकर भरदे ऊपरसे अग्नि जला देवे इस अग्निकी आंचसे ऊपरके दवाइयोंका तेल नीचेके बर्तनमें टपक जावेगा जब यह स्वांगशीतल होजावे फिर युक्तिसे नीचेके पात्रमेंसे तेल निकालले इसको हे शिष्यसत्तम पाताल यंत्र कहते हैं ॥ ८-१२ ॥

दूसरा प्रकार ।

अग्नितापसहेकाचे विधिनाऽनेन पातयेत् ॥
काचानां मुखंसमेल्य लोहोशीरे मुखं न्यसेत् ॥ १३ ॥

अथवा दो अग्निसहनशीला शीशियें लेकर एकमें औषधीको भरके उसके मुखमें लोहेकी तार या खस ठूस दे ताके शीशी उलटी होनेसे औषधि न गिरे फिर दूसरी बोतलसे मुख जोडकर उसपाताल यंत्रकी विधिसे तेल खींचले। १३

तीसरी विधि ।

कांश्यपात्रमथादाय छादयेत्सूक्ष्मवस्त्रतः ॥
तदुपरि न्यसेच्चूर्णं पत्रेणाच्छादयेत्ततः ॥ १४ ॥

अग्नियुक्तं ततः पात्रं युक्त्या तदुपरि न्यसेत् ॥
ऊष्मणा चूर्णतस्तैलं कांश्यपात्रे हि गच्छति ॥ १५ ॥

तीसरी विधि यहहै, एक कांशीका कटोरा अथवा चीनीका प्याला लेकर उसके मुखको बारीक मलमलसे ढकदेवे फिर जिस औषधिका तेल निकालना हो उसका चूर्ण उस कटोरेके मुखपर वस्त्रके ऊपर बिछादे उसके ऊपर एक पत्ता अथवा कागज रखकर ऊपर अग्निसे भरा तसला सावधानीसे रखदेवे और यह खयाल रखे कि आंचसे कपडा जलकर दवाई कटोरेमें न गिरजाय। इस मंद आंचकी गर्माईसे चूर्णमेंसे तेल निकलकर कटोरेमें आजावेगा फिर आगवाला पात्र जल्दीसे नीचे उतार कटोरेमेंसे तेलको काममें लावे यह थोडेसे तेल निकालनेकी विधि आधुनिक लोगोंने बनाई है परंतु उत्तम पहलेवाली दोविधियेंही हैं ॥१४-१५॥

अर्कतैल।

वस्त्रं वा अर्कदुग्धेन सप्तवारं विभावयेत् ॥
निरातपे विशोष्याथ नवनीतेन लेपयेत् ॥ १६ ॥
वर्तिकां कारयित्वा तु वह्निना योजयेत्ततः ॥
वर्तितः पतितं तैलं कांस्यपात्रे विनिःक्षिपेत् ॥ १७ ॥
तत्तैलं लेपयेच्छिद्रे पत्रैरेंडेन वेष्टयेत् ॥
नाशयेद्रक्तजं दुःखं तथा वै गुदसंभवम् ॥ १८ ॥

आकके दूधमें कपडेको भिगोकर सुखावे इसीतरह सातवार सुखाकर फिर उसमें मक्खन लगाकर बत्ती बनावे फिर इस बत्तीको जलाकर नीचे थाली वा प्याली रखदे इसमेंसे जो तेल टपककर थालीमें गिरे उस तेलको बवासीर मस्सोंपर लगाकर ऊपर एरण्डका पत्र लपेटे इसप्रकार २१ दिन करनेसे अर्श और गुदाका विकार दूर होता है ॥ १६-१८ ॥

३ (रालतैल)

श्वेतचंदनचूर्णं च चतुःपलप्रमाणतः ॥
द्विगुणं सालनिर्यासं लोबानं द्विपलं तथा ॥ १९ ॥
लवंगं वै द्विकर्षं च सर्वान्संचूर्ण्य भावयेत् ॥
संकर्ष्य विधिना तैलं वृकाशिष्णं च लेपये ॥ २० ॥
षंढत्वनाशनं ज्ञेयं वृकणबलप्रदं परम् ॥

सफेद चन्दनका चूरा २० तोला, सफेद राल ४० तोला, लोबान १० तोला, लौंग २ तोला सबको बकरीके दूधमें खरल करके छायामें सुखाके पूर्वोक्त विधानसे तैल खेंचले फिर इसको गुर्दोंपर और इंद्रियपर लेप करनेसे दोनोंमें बल आता है और नपुंसकता दूर होती है ॥ १९ ॥ २० ॥

४ (कामदेवतैल)

कामदेवस्य तैलस्य विधानं चाधुना शृणु ॥ २१ ॥
जातीफलं लवंगं च सुगुंजां जातिपत्रिकाम् ॥
आकारकरभं चौलं मूलं करवीरजं सितम् ॥ २२ ॥
ज्योतिष्मतीं समादाय त्रित्रिकर्षं पृथक्पृथक् ॥
इंद्रगोपं च गंडूपं पट्टपट्ट कर्षप्रमाणतः ॥ २३ ॥
कारस्करामितं कर्षं रजश्च गजदंतजम् ॥
अजादुग्धे भावयित्वा छायायां परिशोषयेत् ॥ २४ ॥
पातालसंज्ञके यंत्रे विधिना तैलं पातयेत् ॥
नित्यं च मर्दयेच्छिश्ने ह्यग्रभागं विहाय च ॥ २५ ॥
एकविंशतिपर्यंतं तांबूलेन च वेष्टयेत् ॥
दोषं नाशयते शीघ्रमयोनिमैथुनोद्भवम् ॥ २६ ॥

उद्दण्डो जायते शिश्नः दशस्त्रीद्रावकः स्थिरः ॥
रोगार्ताय हि दातव्यं न दातव्यं प्रमादतः ॥ २७ ॥

हे तात ! अब कामदेवतैलका विधान सुनो । जायफल, लौंग, सफेद गतक, जावत्री, अकरकरा, दालचीनी, सफेद कनेरकी जडका बक्कल, मालकांगुनी प्रत्येक तीन तोला, केंचुवे, वीरबहूटी, छै २ तोला । कुचले, हाथीदांतका बुरादा, एक २ तोला इन सबको बकरीके दूधमें रगड़कर छायामें सुखावे फिर पातालयन्त्रद्वारा विधिपूर्वक तैल निकाल लेवे । फिर सोवन और सुपारी छोडकर लिंगपर इस तेलकी मालिस करके ऊपरसे बंगलापान लपेटे इसी प्रकार २१ दिन करे । हस्तमैथुन और गुदमैथुनसे उत्पन्न हुई नपुंसकता दूर होकर इंद्रिय उद्दण्ड रहे दश स्त्रियोंके गमनकी शक्ति हो । यह तेल जिनकी इंद्रियमें अयोनिमैथुनसे शिथिलता हुई हो उनहीको इस्तेमाल करना चाहिये अन्य मनुष्योंको प्रमादवश सेवन नहीं करना चाहिये ॥ २१-२७ ॥

८ पलाशबीजतैल ।

पलाशसंभवान्बीजान्किम्पाकं कनकप्रभाम् ॥
कपोतारण्यजं विष्टं प्रत्येकं पट् च कर्षकम् ॥ २८ ॥
लवंगाकारकरभौ चोलं च कर्षसम्मितम् ॥
अजादुग्धे पेषयित्वा शोष्य तैलं च पातयेत् ॥ २९ ॥
पूर्वोक्तेन विधानेन शिश्नपृष्ठे विलेपयेत् ॥
विंशैकदिवसै रोगान्मुच्यते हस्तसंभवात् ॥ ३० ॥

[illegible] बीज धतूरे मालकांगुनी, जंगली कबूतरकी बीट प्रत्येक छै २ तोला । [illegible] धतूरे दालचीनी, एक २ तोला । इनको बकरीके [illegible] रगडकर छायामें सुखावे फिर पातालयन्त्रद्वारा तेल निकालकर पहिले [illegible] लिंगकी पीठपर मले २१ दिन ऐसे करनेसे हस्तमैथुनका [illegible] दूर होता है ॥ २८-३० ॥

क्लैब्यहरं तैलम ।

चुक्रं कारस्करं चैव ह्यश्वगंधा च कंगुनी ॥
त्वचं लवंगं सुमुनं जातिकोशं सुरक्तिका ॥ ३१ ॥
वीजं पलाशजं चैव विष्ठा वाराहसंभवम् ॥
विषं चाथ समाकुटच प्रत्येकं वै त्रिकार्षिकम् ॥ ३२ ॥
गंडूपं इंद्रगोपं च पल्लिं वै भूमिसंभवा ॥
मेदं च व्याघ्रजं शुद्धं प्रत्येकं पट्च कार्षिकम् ॥ ३३ ॥
काश्मीरं मृगमदं चैव मलं मनुजकर्णजम् ॥
टंकंटंकं प्रगृह्याथ सर्वान् सूक्ष्मंविचूर्णयेत् ॥ ३४ ॥
मेषीदुग्धे भावयित्वा विधिना तैलंकर्षयेत् ॥
तांवूलं वेष्टयेत्पश्चात् त्रिसप्ताहे विधानतः ॥ ३५ ॥
यदि काचिद्भवेत्पीडा तैलं तत्र न लेपयेत् ॥
तैलं क्लैब्यहरं नाम लिंगोदण्डत्वकारकम ॥ ३६ ॥
शैथिल्यं न भवेत्तस्य दशवारानियाद्यदि ॥
हस्तगुदसंभवक्लैब्यनाशनं परमं मतम् ॥ ३७ ॥

चोककुचले असगन्ध मालकांगुनी, दालचीनी, लौंग, जावत्री, जायफल, सफेद रतक ढाकके खरणा, जंगली सूअरकी विष्ठा, तेलियाविष प्रत्येक तीन २ तोला गंडोये, वीरबहूटी, सांडा, बाघकी चर्बी, प्रत्येक छै २ तोला केशर, कस्तूरी, मनुष्यके कानका मल प्रत्येक तीन २ मासे इन सबको भेड़के दूधमें खरल कर छायामें सुखावे फिर पातालयन्त्रद्वारा तेल निकाल ले इस तेलको इंद्रियकी सीवन और सिर छोड़कर २१ रोज इंद्रियपर मले ऊपरसे पान बांधे इसतरह करने यदि कुछ फुनसीयां हो तो तबतक तेल लगाना बन्द कर दे आराम होनेपर फिर लगावे । यह [illegible] लिंगको लकड़ीकी तरह ताकतवाला बनादेता है और १० बार गमन कर

नेमें भी शिथिलता नहीं होती हस्तमैथुन और गुदामैथुनसे प्राप्त हुई नपुंसकता दूर होतीहै परन्तु यह तेल नामर्दकोही देना चाहिये प्रमादी पुरुषोंको कभी भूलकर भी न बताना चाहिये ॥ ३१--३७ ॥

पानिनाशक तैल।

रोगार्ताय तु दातव्यमप्रकाश्यं तु ह्यन्यथा ॥
जोतिष्मती तु कुडवमजेपालं पलद्वयम् ॥
जातीफलं जातिपत्रीं चोलं च देवपुष्पकम् ॥ ३८ ॥
सर्वान्संमेल्य विधिना तैलं संकर्षयेत्ततः ॥
अग्रभागं च सीमानौ त्यक्त्वा लेपं प्रलेपयेत् ॥ ३९ ॥
पिडिकादर्शनात्त्यक्त्वा लेपने तैलसंभवम् ॥
रोपणीं च क्रियां कुर्याद्यावदारोग्यतां व्रजेत् ॥ ४० ॥
अनेनैव विधानेन शिश्ननाडीभवं जलम् ॥
नश्यति नात्र संदेहो योगोयं परमोत्तमः ॥ ४१ ॥

मालकांगनी १ पाव, जमालगोटेकी गिर आधपाव, जायफल, जावत्री, दालचीनी, लौंग, यह एक २ छटाक लेकर सबका विधिपूर्वक तेल खेंच लेवे इस तेलको इंद्रियका अग्रभाग और सीमन छोडके मले जब फुनसियें होजावें तो तेल लगाना छोडकर रोपणीमरहम लगावे इस प्रकार करनेसे इंद्रियकी नसाकी शिथिलताकारक पानी नष्ट होजाता है । यह परम उत्तम योग है ॥ ३८--४१ ॥

अजेपाल तैल।

कर्षाजेपालजं तैलं द्विपलं जातिसंभवम् ॥
संमेल्य मर्दनं शिश्ने नाडीनां दोषनाशनम् ॥ ४२ ॥

१ तोला जमालगोटेका तेल लेकर १० तोला चमेलीके तेलमें मिलाकर इंद्रियका मर्दन करना इंद्रियकी नाडियोंके विकारको दूर करताहै ॥ ४२ ॥

राक्षसतैलम् ।

अश्वगंधा तथा चुकं करवीरं सुमनं त्वचम् ॥
जातीकोशं पलाशं च आकारकरभं तथा ॥ ४३ ॥
लवंगं मर्कटीबीजं किंपाकं कनकप्रभम् ॥
चंदनं देवदारुं च बृहतीमर्कमूलकम् ॥ ४४ ॥
एरंडमाकर्फं चैव धत्तूरं विषमेव च ॥
काश्मीरं मृगनाभिं च प्रत्येकं कर्षमानकम् ॥ ४५ ॥
चर्मको रोहितः पल्ली हींद्रगोपश्च कर्कटः ॥
शशः शल्यः शिवा गोधा सिंहो व्याघ्रश्च भल्लुकः ॥ ४६ ॥
वन्यकपोतो गंडूपः गृध्रवाराहकस्तथा ॥
मेदोमांसान्यथाशक्यानानीय त्रिककार्पिकान् ॥ ४७ ॥
मेषीदुग्धे भावयित्वा पूर्ववत्तैलमाहरेत् ॥
नानायोगप्रयोगैश्च शैथिल्यं यत्र निर्गतम ॥ ४८ ॥
उद्दण्डं जायते सोऽपि कोटियोगैर्विसर्जितः ॥
शैथिल्यं न भवेत्तस्य नित्यं दिक्स्त्री प्रगच्छतः ॥ ४९ ॥
तैलोयं राक्षसो नाम गोपनीयः प्रयत्नतः ॥
धनिनां यत्र युंजीत प्रायश्चित्तं समाचरेत ॥ ५० ॥
अन्यथा यः प्रकाशेत स भिषङ्नरकं व्रजेत ॥

असगन्ध, चोक, सफेद कनेरकी जड़, जावत्री, दालचीनी, जायफल, पलाशके बीज, कुचले मालकांगुनी लौंग, कौंचके बीज, अकरकरा, सफेद-चन्दन, देवदारु, बड़ीकटेली, आककी जड़, एरण्ड अफीम, धतूरा तेलि-याविष, केशर, कस्तूरी प्रत्येक एक २ तोला ॥ चमगादड़ गोण्डा, बीर-बहूटी, केंकड़ा खरगोश सेह स्यार गोधा शेर व्याघ्र, रीछ, कबूतर

जंगली कबूतर, गंडाये, गीध, जंगली सूवर, इनमेंसे जिसका मांस मिले मांसले जिसकी चरबी मिलसके चरबी लेवे प्रत्येक तीन तोला लेकर भेडके दूधकी भावना देकर पातालयन्त्रसे तेल खेंच लेवे जिस मनुष्यको अनेक औषधि तैलप्रयोगसे आराम न हुवा हो और अनेक वैद्योंने इलाज करके छोड़ दिया हो और आराम न हुवा हो उसकी इंद्रिय कामशक्तिके बलसे दृढ रहे नित्य दश स्त्रियोंसे गमन करतेहुवे भी शिथिल न हो । इस राक्षसनाम तैलको कभी किसीके पास न बताना चाहिये हमेशा छिपाके रखना चाहिये जिस जगे इस तैलको बनाकर धनिक पुरुषके यहां उपयोग करे पहले इसके बनानेका प्रायश्चित्त करना चाहिये । जो वैद्य विना समझे हरेकको यह तैल समझावे अथवा उपयोग करे वह पापी वैद्य नरकमें परता है ॥ ८३–५० ॥

इति तैलविधानं च ह्यवश्यं ते निवेदितम् ॥

इसतरह यह तैलोंकी विधि नपुंसकोंपर दया करके और तुमको योग्य समझकर कथन करदिया है ॥

यावदारोग्यतां याति तावद्ग्रामं विवर्जयेत् ॥ ५१ ॥

तैलसेवनके समय जबतक बिलकुल तन्दुरुस्त न होजाय तबतक मैथुन आदिका विशेष परहेज रक्खे ॥ ५१ ॥

अथ सेकान्प्रलेपांश्च क्लैब्यानां हितकाम्यया ॥
श्रूयतां विधिवत्तात वक्ष्ये विधिविधानतः ॥ ५२ ॥

अब इससे आगे नपुंसकोंके कल्याणके लिये सेक और लेपोंकी विधि और उनके सेवनकी विधिको वर्णन करताहूं तुम सावधान होकर सुनो ॥ ५२ ॥

१ सेक ।

इंद्रगोपश्च गंडूपो ह्यश्वगंधा तथैव च ॥
एतान् हरिद्राचूर्णकं भर्जितं च विनिक्षिपेत् ॥ ५३ ॥

चूर्णं वै दंतजं तत्र मेल्यं पोटलियुग्मकम् ॥
कृत्यसत्यत्रिके तैले ह्युष्णे पोटलिकांक्षिपेत ॥ ५४ ॥
मुहूर्तं सेकयेत्ताभ्यां तांबूलं वेष्टयेत्ततः ॥
अनेन विधिना सेकं सप्तरात्रं च कारयेत् ॥ ५५ ॥

वीरवहूटी, केंचुवे, असगंधनागौरी, चोख, अम्बा हलदी भुने चणे, हाथीदांतका बुरादा, इन सबको छै २ मासे लेकर कूट छानकर दो पोटली बनावे फिर गुलरोगनको कोयलेकी ऑचपर रख उसमें पोटली भिगोकर सहता २ दो घडीतक सैंक करके ऊपर गर्म करके बंगला पान बांधे इसी प्रकार सातरोज करे ॥ ५३–५५ ॥

सेंकके बाद लेप ।

कुडवैकमुच्चटाबीजान्मेपीक्षीरे चतुर्गुणे ॥
पाचयित्वा विधानेन शिश्ने मासं विमर्दयेत् ॥ ५६ ॥
औद्दण्डयं जायते शिश्ने दोषं हत्वा ह्ययोनिजम् ॥

एकपाव उटंगणके बीज लेकर १ सेर भेड़के दूधमें खीर बनावे फिर इस खीरको लिंगपर आधघंटा तक मलता रहे इस प्रकार एकमहीना करने से अयोनि मैथुनका दोष दूर होकर इंद्रियमें बल आजाताहै कामशक्ति बलवती होतीहै ॥ ५६ ॥

अथवा ।

नागरं देवसुमनमाकारकरभं तथा ॥ ५७ ॥
चूर्णितं मधुयोगेन मासैकं लेपयेद्बुधः ॥
तांबूलैर्वेष्टितं कृत्वा पुरुषार्थप्रदायकम ॥ ५८ ॥

सूंठ लौंग अकरकरा इन तीनोंके चूर्णको सहद मिलाके इंद्रियपर लेप करे ऊपर पान लपेटे ऐसा एक महीना करनेसे इंद्रिय दृढ होजाती है ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

२ सेक ।

पलं गजदंतचूर्णं तथैव मत्स्यदंतजम् ॥
जातीफलं लवंगं च माषाष्टकमुदाहृतम् ॥ ५९ ॥
अरण्यजं पलांडुं च संचूर्ण्य पोटलीसमौ ॥
विधाय मेषीदुग्धं च पात्रे तु मृण्मये क्षिपेत् ॥ ६० ॥
भाण्डोपरि च्छिद्रयुक्तं शरावं स्थापयेत्ततः ॥
अग्नौ संस्थापयेद्भांडं पोटल्युपरि संन्यसेत् ॥ ६१ ॥
स्वेदेनोष्मी भवेद्यावत्तावत्सेकं विधानतः ॥
कर्तव्यं घटिकायुग्मं तांबूलं वेष्टयेत्ततः ॥ ६२ ॥
दश दिवसान्विधायाथ शीतं वारि न संस्पृशेत् ॥

हाथीदांतका बुरादा ४ तोला । मच्छीके दांतका चूरा ४ तोला । लौंग ८ मासे । जायफल ८ मासे । जंगलीगठा एक अदद । इन सबका चूर्ण कर दो पोटली बनावे फिर एक मिट्टीकी हाडीमें भेड़का दूध डालकर ऊपर छिद्रयुक्त शरावा रक्खे फिर इसको आगपर गर्म होनेको रक्खे दूधके पकनेसे जो भाप शरावीके छिद्रद्वारा निकले उसपर पोटली रक्खे उस पोटलीके गर्म होनेपर उससे इंद्रियकी नसोंको नाभि पर्यंत सेक करै फिर उसको शरावपर गर्म होनी रक्खे दूसरीको उठाकर सेक करे इसीतरह १ घंटा तक सेके ऊपर गर्म करके बंगलापानबांधे ऐसे दसदिन करे और ठंडे पानीमें परहेज रक्खे ॥ ५९-६२ ॥

सेंकके पीछे लेप ।

एलाफलं जातिकोशं मूलं करवीरजं सितम् ॥ ६३ ॥
शाल्मलीत्वचमादाय ह्याकुकं पट्टमापकम् ॥
सर्पतैले विनिक्षिप्य तुष्णं कृत्वा विलेपयेत् ॥ ६४ ॥

अवश्यं पुंस्त्वमाप्नोति षण्ढत्वं तस्य नश्यति ॥
शीतं वारि न सेवेत मैथुनं चापि वर्जयेत् ॥ ६५ ॥

बड़ी इलायची, जायफल, सफेद कनेरकी जड़का छिलका, अफीम, सेमलका छिलका, प्रत्येक छै २ मासे कपड़छान करके एक तोला तिलतैलमें मिलाकर गर्म करके इंद्रियपर लगावे इसतरे २१ रोज करनेसे अवश्य नपुंसकता दूर होकर पुरुषार्थ प्राप्त होताहै। परंतु इस अवसरमे शीतलजल और मैथुनसे विशेष परहेज रखना चाहिये ॥ ६३–६५ ॥

सेंक।

आकारकरभं कुष्टं जातीपत्रं फलं तथा ॥
अर्धकर्षप्रमाणेन सर्वान् संचूर्णयेत्पृथक् ॥ ६६ ॥
गुडमेरंडबीजांश्च कार्पासबीजखर्परम् ॥
तिलान्कर्षप्रमाणेन माक्षिकं द्विपलोन्मितम् ॥ ६७ ॥
सर्वेषां पोटलीं कृत्वा ह्यजादुग्धेन स्वेदयेत् ॥
अनेन जायते चौच्छूं ध्वजदोषनिवारणम् ॥ ६८ ॥

अकरकरा, कूठ, जायफल, जवत्री, हरेक छे २ मासे पुराण गुड़, एरंडके बीज, बिनौलेकी गिरू, तिल, प्रत्येक एक २ तोला, शहद दो तोला, सबको कूट छानकर बकरीके दूधमें भिगोकर अग्निपर गर्म करके इंद्रियपर सेक करे तो इंद्रियका विकार दूर होकर उद्दंडता हो ॥६६–६८॥

अथवा।

मलं मनुजकर्णस्य मेदः सूकरसंभवम ॥
संखल्य लेपयेन्नित्यं हस्तदोषस्य शांतये ॥ ६९ ॥

मनुष्यके कानका मल जंगली सूकरकी चरबीमें खरल करके लेप करे तो नित्य ४० दिन करनेसे हस्तमैथुनसे प्राप्त हुई नपुंसकता दूर होती ॥६९

इन्द्रगोपादिलेप ।

टंकंटंकमिंद्रगोपं श्वेतगुंजां ह्यकर्भकौ ॥
मापकं च समादाय लोहपाषाणसंकरम् ॥ ७० ॥
तीक्ष्णमद्ये विमर्द्याथ शिश्ने नित्यं विलेपयेत् ॥
तांबूलं वेष्टयेत्पश्चात्सप्तरात्रीश्च नित्यशः ॥ ७१ ॥
अयोनिजं हरेद्दोषं कामवृद्धिकरं परम् ॥

वीरबहूटी सफेद रतक, अकरकरा प्रत्येक तीन २ मासे संखिया १ मासा इन सबको तीक्ष्ण मद्यमें खरल करके इंद्रियपर लेप करके पान लपेटे इसीप्रकार सातरोज करनेसे इन्द्रियकी शिथिलता दूर होकर कामशक्ति बलवती होती है ॥ ७०॥ ७१ ॥

करवीरजटादिलेप ।

करवीरत्वग्द्विकर्षं दुग्धे प्रस्थद्वये पचेत् ॥ ७२ ॥
तत्र दुग्धं दधि कृत्वा मंथनेन विलोडयेत् ॥
नवनीतं विनिष्कृष्य स्वौषधिं तत्र निक्षिपेत् ॥ ७३ ॥
जातीफलमजेपालं विषमाखुपषाणकम् ॥
विधिना मर्दयेत्खल्वे ततो लेपं समाचरेत् ॥ ७४ ॥
त्यक्त्वाग्रभागं सीमानौ तांबूले तं प्रवेष्टयेत् ॥
पिटिका चेद्भवेच्छुद्धनवनीतेन लेपयेत् ॥ ७५ ॥
षंढत्वनाशनार्थाय लेपोयं समुदाहृतः ॥

दो तोला सफेद कनेरकी जडके छिलकेको कूटकर दो सेर दूधमें पकाकर जमावे फिर इस दहीमेंसे मक्खन निकालकर जमालगोटा जायफल, विष. संखिया. इन चारोंको पीसकर उपरांत मक्खनमें खूब खरल करके इंद्रि-यका अग्रभाग और सीमन छोडकर लेप करे ऊपर पान बांधे, इसप्रकार

७ रोज करे यदि सूजन या फुन्सी होजाय तो लेप बन्द करके शुद्ध धुला-हुवा मक्खन लगावे । इसके प्रभावसे अयोनिमैथुनकी नपुंसकता दूर होती है ॥ ७२--७५ ॥

लेप ।

आमिषं तु कुलीरस्य तिलतैलेषु पाचयेत् ॥
ध्वजस्तेनोपलिप्तस्तु शैथिल्यं परिमुंचति ॥ ७६ ॥

कुलीरके मांसको तिलोंके तेलमें भूनकर इंद्रियपर लेप करे तो इंद्रियकी शिथिलता दूर हो ॥ ७६ ॥

कार्पासबीजलेप ।

कार्पासबीजमज्जाहिफेनं जातीफलं विषम् ॥
आकारकरभं सर्वं पलार्द्धं सूक्ष्मचूर्णितम् ॥ ७७ ॥
पलपंचमिता ग्राह्या वसा सूकरसंभवा ॥
संमर्दयेन्मेलयित्वा द्वात्रिंशत्प्रहरावधि ॥ ७८ ॥
लिंगलेपं विधायाथ नागवल्लीदलेन च ॥
बध्नीयान्नश्यति क्षिप्रं ध्वजपातः कियद्दिनैः ॥ ७९ ॥

बिनौलेकी मींगी, अफीम, जायफल, सिंगियाविष, अकरकरा, प्रत्येक दो २ तोला लेकर कपडछान चूर्ण करे । फिर इसमें २० तोला जंगली सूकरकी चरबी मिलाकर ३२ पहर खरल करे फिर इसको (सुपारी व सीवन बचाकर) इंद्रियपर लेप करे ऊपर बंगलापान बांधकर पट्टी बांध देवे इसप्रकार १८ दिन करनेसे लिंगकी शिथिलता दूर होती है ॥ ७७–७९ ॥

आखुविष्टां समानीय मधुना पेषयेद्भृशम ॥
विधिना लेपयेच्छिश्ने ध्वजस्योच्छ्रायकारकम ॥ ८० ॥

चूहेकी मेंगनीको शहदमें एकदिन खूब रगडे फिर लिंगपर लेप करे तो लिंगकी शिथिलता दूर हो ॥ ८० ॥

अरिष्टकादिलेप।

त्वचामरिष्टकभवामाकारकरभं तथा ॥
तीक्ष्णे मद्ये मर्दयित्वा शिश्ने नित्यं प्रलेपयेत् ॥ ८१ ॥
तांबूलं वेष्टयेत्पश्चाद्विंशैकदिवसानयम् ॥
योगोऽयोनिरतोद्भूतपण्ढत्वस्य विलोपकः ॥ ८२ ॥

रीठेका छिलका. और, अकरकरा, इन दोनोको तीक्ष्ण मद्यमें खरल करके २१ दिन पर्यंत इंद्रियपर लेप करके पान बांधे इस प्रयोगसे हस्तमैथुन और गुदमैथुनसे पैदाहुई नपुंसकता दूर हो ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

करवीरादिलेप।

करवीरमूलत्वचं संमर्द्य बृहतीरसे ॥
विधिना लेपयेच्छिश्ने ध्वजस्योत्तेजनाय वै ॥ ८३ ॥

सपेद कनेरकी जडके छिलकेको बडीकटेलीके रसमें खरल करके लिंगपर लेप करे तो कामशक्ति बलवती होतीहै ॥ ८३ ॥

मूलिकाबीजादिलेप।

कार्पासबीजमादाय निस्तुषं कारयेद्बुधः ॥
[illegible] मूलिकाबीजान्कर्षद्वयमितान्पृथक् ॥ ८४ ॥
आकारकरभं कुष्ठं प्रत्येकं पट्चमापकम् ॥
मद्ये तु मर्दयित्वा वै शिश्ने नित्यं प्रलेपयेत् ॥ ८५ ॥

[illegible] मूलीके बीज माशे दो २ भाग अकरकरा, कडवाकूठ, [illegible] एक २ भाग इन सबको मद्यमें खरल करके इंद्रियपर लेप करे इस प्रकार २१ दिन करनेसे लिंगकी शिथिलता दूर हो ॥ ८४-८५ ॥

मर्दन।

[illegible]द्रवं च माक्षिकं समभागतः ॥
[illegible] मर्दयित्वा शिश्ने नित्यं विमर्दयेत् ॥ ८६ ॥

मासैकमर्दनेनैव शैथिल्यं च विनाशयेत् ॥
हस्तमैथुनजं दुःखं प्रणश्यति न संशयः ॥ ८७ ॥

गौका घी, आकका दूध, सहत, इन तीनोंको कांसीके वर्तनमें कांसीके कटोरेसे खूब रगड़े फिर इसमेंसे नित्य इंद्रियपर मले तो इंद्रियकी शिथिलता दूर हो और हस्तमैथुनका विकार दूर हो ॥ ८६-८७ ॥

इंद्रिय सुखगई हो तो मर्दन ।

चोलोद्भवं तथा तैलं लवंगानां च मर्दयेत् ॥
स्वकृतोत्थं शिश्नशोषं मासमेकं च नश्यति ॥ ८८ ॥

दालचीनी तथा लौंग, इनमेंसे किसीएक अथवा दोनोंका तेल निकालकर इंद्रियपर मलनेसे अपने कुकर्मसे प्राप्त किया लिंगेंद्रियका सूखना एकमहीनेमें दूर होताहै ॥ ८८ ॥

इंद्रियमें स्पर्शज्ञानदायकतेल ।

यस्य शूकप्रयोगेण हस्तेन मर्दनेन च ॥
महता शिश्नयोगेन स्पर्शज्ञानं विनश्यति ॥ ८९ ॥
लोबानोद्भवं तैलं तत्र योज्यं सदा बुधैः ॥

इंद्रियको बढानेवाले लेप आदिकोंके करनेसे तथा हाथसे मलनेसे अथवा इंद्रिय बड़ी होनेके कारण यदि लिंगेंद्रियका स्पर्शज्ञान जाता रहा हो तो बुद्धिमानोंको उचित है उस जगे लोबानका तेल मला करें ॥ ८९ ॥

इंद्रियके बांकपनका यत्न ।

मनःशिला टंकणं च कुष्टं कर्षप्रमाणतः ॥ ९० ॥
जातीपत्ररसं चैव कर्षं वै त्रयमेव च ॥
तिलतैले पाचयित्वा लिम्पेदेकांतरे दिने ॥ ९१ ॥
एकं दिनं विहायाथ चत्वारिंशद्दिनेषु च ॥
विकृतिः शिश्नस्य नश्येत्कामोत्तेजकरं परम ॥ ९२ ॥

मनसिल. सुहागा, कूठ, प्रत्येक एक २ तोला, चमेलीके पत्तोंका रस ३ तोला, तिलका तेल ६ तोला इन सबको तेलमें डालकर आंचपर पकावे तेलमात्र शेष रहनेपर इंद्रियपर मले चालीसदिनमें २१ वार लगावे एक-दिन वीचमें छोड़दे एकादिन लगावे इसप्रकार लगानेसे इंद्रियका वांकपन दूर हो और कामशक्ति वलवती हो ॥ ९०-९२ ॥

इति तैलविधानं च लेपशेकविधिं तथा ॥
रोगार्ताय हि कर्त्तव्यमप्रकाश्यं तु चान्यथा ॥ ९३ ॥

इसप्रकार तेल लेप सेककी विधि कथन करचुके हैं सो यह तैलादि रोगियोंके कल्याणके लिये ही प्रकाश करने चाहिये अन्यथा प्रकाशकरना नहीं चाहिये ॥ ९१ ॥

तैललेपके समय पथ्यापथ्य।

उष्णं च शीतमम्लं च तैलं च वातकारकम् ॥
त्याज्यं शिश्नगदे नित्यं व्रणवत्सेवनं हितम् ॥
मुद्गं घृतं शुभान्नं च दुग्धं वा तण्डुलं तथा ॥ ९४ ॥

मिर्च आदि तीक्ष्ण और अत्यंतगर्म, अत्यंत शीत, खटाई, तैल, वातकारी पदार्थ इन सबको इंद्रियके विकारमें त्याग देवे और व्रणरोगमें जो हित हो उसका सेवन करे। तथा मूंग, घृत, शुभ हलका अन्न, दूध चावल इनका सेवन करे ॥ ९४ ॥

मासैकमर्दनेनैव शैथिल्यं च विनाशयेत् ॥
हस्तमैथुनजं दुःखं प्रणश्यति न संशयः ॥ ८७ ॥

गौका घी, आकका दूध, सहत, इन तीनोको कांसीके वर्तनमे कांसीके कटोरेसे खूब रगड़े फिर इसमेसे नित्य इंद्रियपर मले तो इंद्रियकी शिथिलता दूर हो और हस्तमैथुनका विकार दूर हो ॥ ८६-८७ ॥

इंद्रिय सूखगई हो तो मर्दन ।

चोलोद्भवं तथा तैलं लवंगानां च मर्दयेत् ॥
स्वकृतोत्थं शिश्नशोषं मासमेकं च नश्यति ॥ ८८ ॥

दालचीनी तथा लौंग, इनमेंसे किसीएक अथवा दोनोका तेल निकालकर इंद्रियपर मलनेसे अपने कुकर्मसे प्राप्त किया लिंगेंद्रियका सूखना एकमहीनेमें दूर होताहै ॥ ८८ ॥

इंद्रियमें स्पर्शज्ञानदायकतेल ।

यस्य शूकप्रयोगेण हस्तेन मर्दनेन च ॥
महता शिश्नयोगेन स्पर्शज्ञानं विनश्यति ॥ ८९ ॥
लोबानोद्भवं तैलं तत्र योज्यं सदा बुधैः ॥

इंद्रियको बढानेवाले लेप आदिकोके करनेसे तथा हाथसे मलनेसे अथवा इंद्रिय बड़ी होनेके कारण यदि लिंगेंद्रियका स्पर्शज्ञान जाता रहा हो तो बुद्धिमानोंको उचित है उस जगे लोबानका तेल मला करे ॥ ८९ ॥

इंद्रियके बांकपनका यत्न ।

मनःशिला टंकणं च कुष्ठं कर्षप्रमाणतः ॥ ९० ॥
जातीपत्ररसं चैव कर्षं वै त्रयमेव च ॥
तिलतैले पाचयित्वा लिम्पेदेकांतरे दिने ॥ ९१ ॥
एकं दिनं विहायाथ चत्वारिंशद्दिनेषु च ॥
विकृतिः शिश्नस्य नश्येत्कामोत्तेजकरं परम् ॥ ९२ ॥

मनसिल, सुहागा, कूठ, प्रत्येक एक २ तोला, चमेलीके पत्तोंका रस ६ तोला, तिलका तेल ६ तोला इन सबको तेलमें डालकर आंचपर पकावे तेलमात्र शेष रहनेपर इंद्रियपर मले चालीसदिनमें २१ बार लगावे एक-दिन बीचमें छोड़दे एकादिन लगावे इसप्रकार लगानेसे इंद्रियका बांकपन दूर हो और कामशक्ति बलवती हो ॥ ९०-९२ ॥

इति तैलविधानं च लेपशेकविधिं तथा ॥
रोगार्ताय हि कर्त्तव्यमप्रकाश्यं तु चान्यथा ॥ ९३ ॥

इसप्रकार तेल लेप सेककी विधि कथन करचुके हैं सो यह तैलादि रोगियोंके कल्याणके लिये ही प्रकाश करने चाहिये अन्यथा प्रकाशकरना नहीं चाहिये ॥ ९१ ॥

तैललेपके समय पथ्यापथ्य।

उष्णं च शीतमम्लं च तैलं च वातकारकम् ॥
त्याज्यं शिश्नगदे नित्यं व्रणवत्सेवनं हितम् ॥
मुद्गं घृतं शुभान्नं च दुग्धं वा तण्डुलं तथा ॥ ९४ ॥

मिर्च आदि तीक्ष्ण और अत्यंतगर्म, अत्यंत शीत, खटाई, तैल, वातकारी पदार्थ इन सबको इंद्रियके विकारमें त्याग देवे और व्रणरोगमें जो हित हो उसका सेवन करे। तथा मूंग, घृत, शुभ हलका अन्न, दूध चावल इनका सेवन करे ॥ ९४ ॥

अथ सप्तमस्तरंगः ।

नपुंसककारणत्वेन प्रमेहवर्णनम् ।

शिष्य उवाच ।

यदुक्तं श्रीमता नाथ क्लैव्ये मेहोऽपि कारणम् ॥
अतस्तद्ब्रूहि कृपया सनिदानचिकित्सितम् ॥ १ ॥

शिष्य बोले हे नाथ ! श्रीमान्ने नपुंसकतामें प्रमेहको भी कारणत दी थी अर्थात् नपुंसकोंका निदान कथन करते समय प्रमेहसे नपुंसकता होना भी कथन किया था। इसलिये सविनय प्रार्थना है कि, उस प्रमेहक भी कुछनिदान और चिकित्सा नपुंसकोंके कल्याणके लिये कृपया कथन कीजिये ॥ १ ॥

प्रश्नं शिष्यमुखाच्छ्रुत्वा गुरुः संहृष्टमानसः ॥
उवाच कृपया शिष्यं मनसा तं प्रशंसयन् ॥ २ ॥

इस प्रश्नको शिष्यके मुखसे सुनकर प्रसन्नमन हुये गुरु मनमें शिष्यकी बडाई करते हुये कृपा करके कहने लगे ॥ २ ॥

गुरुरुवाच ।

तात कारणता मेहे क्लीबतायाऽपि वर्तते ॥
दोषा धातून्दूषयित्वा मेहांश्च जनयंति वै ॥ ३ ॥
यतो बस्तिगता दोषाः सुखस्वप्नादिकारणैः ॥
वीर्यं मूत्रं च संदूष्य पुंस्त्वं च नाशयंति वै ॥ ४ ॥
अतः किंचिन्निदानं च चिकित्सां सिद्धिसंयुताम् ॥
वक्ष्ये युक्तिप्रमाणैश्च विधिवच्छास्त्रसंमितैः ॥ ५ ॥

हेतात ! प्रमेहमेभी नपुंसकताकी कारणता अवश्य है क्योंकि वात पित्त कफ प्रायः सब धातुवोको दूपित करकेही प्रमेहको पैदा करतेहैं और सुख पूर्वक बैठने सोने आदि अनेक कारणोंसे कुपित हुये दोप वस्तिमें प्राप्त

होकर वीर्यको और मूत्रको भी दूषित करदेतेहैं, फिर वीर्य और मूत्रके दूषित होनेसे मूत्रवाही और वीर्यवाही नली भी दूषित होतीं है उसमें प्रमेहपि टिका आदि विकार होनेसे ध्वजभंग होजाता है और वीर्यके दूषित होनेसे शुक्रक्षय होकर नपुंसकता होजाती है और पुरुषार्थ नष्ट हो जाताहै । इस लिये प्रमेहका कुछ निदान और सिद्धचिकित्साका वर्णन शास्त्रसंमत युक्ति और प्रमाणसे विधिपूर्वक कथन करेंगे तुम सावधान होकर सुनो ॥ ३-५॥

प्रमेहनिदान ।

आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि
ग्राम्यौदकानूपरसाः पयांसि ॥
नवान्नपानं गुडवैकृतं च
प्रमेहहेतुः कफकृच्च सर्वम् ॥ ६ ॥

बैठनेके सुखसे, दिनमें सोनेसे स्वप्नमें स्त्रीसंग करनेसे-दही, ग्रामसंचारी-जीवोंके मांस (भेड़, बकरी,) जलसंचारी मछली. आदिके खानेसे, जलके समीप रहनेवाले जीवोंके मांसखानेसे और अनेक मांसरस, दूध नया अन्न, नया जल गुड़, और गुड़के विकार विशेष तथा और विकारोंसे भी और कफको पैदा करनेवाले सबपदार्थ प्रमेहके कारण है अर्थात् इन कारणोंसे प्रमेह होताहै ॥ ६ ॥

संप्राप्ति ।

मेदश्च मांसञ्च शरीरजञ्च क्लेदं कफं बस्तिगतं प्रदूष्य ॥
करोति मेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेव पित्तं परिदूष्य चापि ॥
क्षीणेषु दोषेष्ववकृष्य धातून्संदूष्य मेहान्कुरुतेऽनिलश्च ७॥

बस्तिगत कफ मेद, मांस और शरीरमें होनेवाले क्लेद (जल) को दूषितकर कफके प्रमेहको पैदा करता है और अपने कारणोंसे अर्थात् उष्ण गर्म पदार्थोंके सेवन करनेसे बढाहुवा पित्तभी. मेद मांस आदि. को दूषित करके पित्तके प्रमेहोंको पैदा करता है इसीप्रकार दोषः

(वात, पित्त, कफ,) के क्षीण होजानेसे वायु मेद मज्जा आदि धातुवोंको दूषित करके उनके स्थानसे खींचकर वस्तीके मुखपर लाकर वायुके प्रमेहोंको पैदा करता है ॥ ७ ॥

सब प्रमेहोमें मूत्रदूष्य ।

दोषो हि बस्तिं समुपेत्य मूत्रं ॥
संदूष्य मेहान् कुरुते यथास्वम् ॥ ८ ॥

इस प्रकार वातादिदोष वस्तिमें प्राप्त होकर मूत्रको दूषित करके प्रमेहोंको पैदा करते हैं ॥ ८ ॥

प्रमेहमें दूष्य ।

मेदो मांसं तनुक्लेदो वसा मज्जा लसीकया ॥
ओजो रसोऽसृक्छुक्रं च मूत्रं मेहेषु दुष्यति ॥ ९ ॥

मेद, मांस, देहका क्लेद, चिकनाई, मज्जा, लसीका (मांसके घावका जल) ओज, रस, रुधिर, शुक्र मूत्र, इनको दोषदूषित करके प्रमेहोंको पैदा करतेहैं इसवास्ते इन सबको दूष्य अर्थात् दूषित होनेवाले कहतेहैं॥९॥

प्रमेहके पूर्वरूप ।

दंतादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं पाणिपादयोः ॥
दाहश्चिक्कणता देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते ॥ १० ॥

दांत, तालु, गला, आदिमें मैल जमा रहना, हाथ पैरोंमें दाहका होना, देहका चिकना रहना,प्यास लगे और मुखमें मिठास रहै यह प्रमेहके पूर्वरूप हैं ॥ १० ॥

प्रमेहके सामान्य लक्षण ।

सामान्यलक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता ॥
शुक्रद्रवोऽप्रमाणेन मूत्रे विषमतोपि वा ॥ ११ ॥

बहुत गंदला पेशाब आना अथवा वीर्य मिला मूत्र उतरना मूत्रसे आगे अथवा पीछे वीर्यका गिरना, यह सामान्यतासे प्रमेहके लक्षण हैं ॥ ११ ॥

प्रमेहभेदोंकी कल्पना ।

दोषदूष्याविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः ॥
मूत्रवर्णादिभेदेन भेदो मेहेषु कल्प्यते ॥ १२ ॥

यद्यपि दोष वात पित्त कफ और दूष्य (रसरक्तादि०) विशेष नहीं भी हैं अर्थात् जितने हैं उनसे अधिक नही हो सक्ते इसलिये वातादि भेदसे प्रमेह भी अधिक न होने चाहिये । परंतु इनही दोषदूष्योंकी न्यूनाधिकतासे और मूत्रके वर्णादि भेदसे प्रमेह २० प्रकारके कथन किये ॥ १२ ॥

कफके १० प्रमेह ।

अच्छं बहुसितं शीतं निर्गंधमुदकोपमम् ॥
मेहत्युदकमेहेन किंचिदाविलपिच्छिलम् ॥ १३ ॥
इक्षो रसमिवात्यर्थं मधुरं चेक्षुमेहतः ॥
सांद्रीभवेत्पर्युषितं सांद्रं स्नेहेन मेहति ॥ १४ ॥
सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् ॥
संहृष्टरोमा पिष्टेन पिष्टवद्बहुलं सितम् ॥ १५ ॥
शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति ॥
मूत्राणून्सिकतामेही सिकतारूपिणो मलान् ॥ १६ ॥
शीतमेही सुबहुशो मधुरं बहु शीतलम् ॥
शनैः शनैः शनैर्मेही मंदं मंदं प्रमेहति ॥ १७ ॥
लालातंतुयुतं मूत्रं लालामेहेन पिच्छिलम् ॥

(वात, पित्त, कफ,) के क्षीण होजानेसे वायु मेद मज्जा आदि धातुवोंको दूषित करके उनके स्थानसे खींचकर वस्तीके मुखपर लाकर वायुके प्रमेहोंको पैदा करता है ॥ ७ ॥

सब प्रमेहोमें मूत्रदूष्य ।

दोषो हि बस्तिं समुपेत्य मूत्रं ॥
संदूष्य मेहान् कुरुते यथास्वम् ॥ ८ ॥

इस प्रकार वातादिदोष वस्तिमें प्राप्त होकर मूत्रको दूषित करके प्रमेहोंको पैदा करते हैं ॥ ८ ॥

प्रमेहमें दूष्य ।

मेदो मांसं तनुक्लेदो वसा मज्जा लसीकया ॥
ओजो रसोऽसृक्छुक्रं च मूत्रं मेहेषु दुष्यति ॥ ९ ॥

मेद, मांस, देहका क्लेद, चिकनाई, मज्जा, लसीका (मांसके घावका जल) ओज, रस, रुधिर, शुक्र मूत्र, इनको दोषदूषित करके प्रमेहोंको पैदा करतेहैं इसवास्ते इन सबको दूष्य अर्थात् दूषित होनेवाले कहतेहैं॥९॥

प्रमेहके पूर्वरूप ।

दंतादीनां मलाढ्यत्वं प्राग्रूपं पाणिपादयोः ॥
दाहश्चिक्कणता देहे तृट् स्वाद्वास्यं च जायते ॥ १० ॥

दांत, तालु, गला, आदिमें मैल जमा रहना, हाथ पैरोंमें दाहका होना, देहका चिकना रहना, प्यास लगे और मुखमें मिठास रहे यह प्रमेहके पूर्वरूप हैं ॥ १० ॥

प्रमेहके सामान्य लक्षण ।

सामान्यलक्षणं तेषां प्रभूताविलमूत्रता ॥
शुक्रद्रवोऽप्रमाणेन मूत्रे विषमतोपि वा ॥ ११ ॥

बहुत गंदला पेशाब आना अथवा वीर्य मिला मूत्र उतरना मूत्रसे आगे अथवा पीछे वीर्यका गिरना, यह सामान्यतासे प्रमेहके लक्षण हैं ॥ ११ ॥

प्रमेहभेदोंकी कल्पना ।

दोषदूष्याविशेषेऽपि तत्संयोगविशेषतः ॥
मूत्रवर्णादिभेदेन भेदो मेहेषु कल्प्यते ॥ १२ ॥

यद्यपि दोष वात पित्त कफ और दूष्य (रसरक्तादि०) विशेष नहीं भी हैं अर्थात् जितने हैं उनसे अधिक नही हो सक्ते इसलिये वातादि भेदसे प्रमेह भी अधिक न होने चाहिये । परंतु इनही दोषदूष्योंकी न्यूनाधिकतासे और मूत्रके वर्णादि भेदसे प्रमेह २० प्रकारके कथन किये ॥ १२ ॥

कफके १० प्रमेह ।

अच्छं बहुसितं शीतं निर्गंधमुदकोपमम् ॥
मेहत्युदकमेहेन किंचिदाविलपिच्छिलम् ॥ १३ ॥
इक्षो रसमिवात्यर्थं मधुरं चेक्षुमेहतः ॥
सांद्रीभवेत्पर्युषितं सांद्रं स्नेहेन मेहति ॥ १४ ॥
सुरामेही सुरातुल्यमुपर्यच्छमधोघनम् ॥
संहृष्टरोमा पिष्टेन पिष्टवद्बहुलं सितम् ॥ १५ ॥
शुक्राभं शुक्रमिश्रं वा शुक्रमेही प्रमेहति ॥
मूत्राणून्सिकतामेही सिकतारूपिणो मलान् ॥ १६ ॥
शीतमेही सुबहुशो मधुरं बहु शीतलम् ॥
शनैः शनैः शनैर्मेही मंदं मंदं प्रमेहति ॥ १७ ॥
लालातंतुयुतं मूत्रं लालामेहेन पिच्छिलम् ॥

(१) उदकप्रमेहमें, स्वच्छ बहुत सफेद, शीतल, गंधरहित, पानीके समान, कभी कुछ गदलाई लिये, मूत्र होताहै ॥ १३ ॥
(२) ईखके रसकी समान अत्यंत मीठा इक्षुमेहमें मूत्र आता है ॥
(३) सांद्रमेहमें, रात्रिको पेशाव करके पात्रमें धरे तो सवेरे गाढा होजाता है ॥ १४ ॥
(४) जिसका मूत्र मद्यके समान ऊपर स्वच्छ नीचे गाढा हो उसको सुरामेही कहते हैं ॥
(५) पिसेहुवे चावलोंके पानीके समान सफेद और बहुत मूत्र मूते और मूतते समय रोमांच हो उसको पिष्टमेह कहते हैं ॥ १५ ॥
(६) शुक्रमेहमें, वीर्यके समान या वीर्यमिला मूत्र होताहै ॥
(७) सिकतामेहमें, मूत्रमें वालूके समान छोटे २ कणके गिरते हैं ॥१६॥
(८) शीतमेहमें, मीठा, और अत्यंत शीतल ऐसा वार २ बहुत मूते ॥
(९) शनैर्मेहमें, थोडा २ बूंद २ मूत्र आताहै ॥ १७ ॥
(१०) लालामेहमें, लारके समान तारयुक्त चिकना मूत्र होताहै ॥ १० ॥
यह १० कफकी अधिकतासे होतेहैं ॥

पित्तके ६ प्रमेह ।

गंधवर्णरसस्पर्शैः क्षारेण क्षारतोयवत् ॥ १८ ॥
नीलमेहेन नीलाभं कालमेही मषीनिभम् ॥
हारिद्रमेही कटुकं हरिद्रासन्निभं दहत् ॥ १९ ॥

(१) क्षारमेहमें, खारे जलके समान गंध रस स्पर्शमें मूत्र होताहै ॥१८॥
(२) नीलमेहमें, नीलेरंगका मूत्र होताहै ॥ २ ॥
(३) कालमेहमें, कालेरंगका मूत्र होताहै ॥ ३ ॥
(४) हरिद्रामेहमें, हलदीकी समान रंगवाला दाहयुक्त मूत्र होताहै ॥१९॥

विस्रमांजिष्टमेहेन मंजिष्ठासलिलोपमम् ॥
विस्रमुष्णं सलवणं रक्ताभं रक्तमेहतः ॥ २० ॥

(५) मांजिष्ठमेहमे, आमदुर्गंधयुक्त और मंजीठके समान रंगका मूत्र होताहै ॥ ५ ॥

(६) रक्तमेहमे, दुर्गंधयुक्त, गरम, खारयुक्त, और रुधिर समान लाल-मूत्र होताहै ॥ २० ॥ येह ६ पित्तसे होतेहैं ॥

वायुके ४ प्रमेह ।

वसामेही वसामिश्रं वसाभं मूत्रयेन्मुहुः ॥
मज्जाभं मज्जमिश्रं वा मज्जमेही मुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥
कषायमधुरं रूक्षं क्षौद्रमेहं वदेद्बुधः ॥
हस्ती मत्त इवाजस्रं मूत्रं वेगविवर्जितम् ॥
सालसीकं विबद्धं च हस्तिमेही प्रमेहति ॥ २२ ॥

(१) वसामेही चरबीके समान या चरबीमिला मूत्र मूते ॥

(२) मज्जामेहमें, मज्जाके समान या मज्जामिला वार २ मूत्र आताहै ॥ २१ ॥

(३) क्षौद्रमेहमें. सहतके समान, कषैला, मीठा, मूत्र होताहै ॥

(४) हस्तिमेहमें, मत्तहाथीके समान वेग रहित तारयुक्त ठहर २ के मूते ॥ २२ ॥ यह चारवातके विकारसे हैं ॥

असाध्य ।

आलस्यं ष्ठीवनं देहे मक्षिकाणां परिग्रहः ॥ २३ ॥
मूर्च्छाच्छर्दिज्वरश्वासकासवीसर्पगौरवः ॥
पिडिकापीडितश्चैव प्रमेहो हंति मानवम् ॥ २४ ॥

आलस्य. मुखसे लारोंका गिरना, शरीरपर मक्खियोंका बैठना, मूर्च्छा, छर्दी ज्वर श्वास खांसी, दारुणप्रमेहकी पिड़िका (फुनसी) का होना इन उपद्रवोंसे युक्त प्रमेह मनुष्यको मारडालता है ॥ २३-२४ ॥

---

१ प्रोस्टिटिना इत्युक्ताद्रिंयोंमें देखो.

सबप्रमेहोंमें मूत्रमें मीठा आताहै ।

सर्वे एव प्रमेहास्तुऽकालेनाप्रतिकारिणः ॥
मधुमेहत्वमायांति तदा साध्या भवंति हि ॥ २५ ॥

सब प्रकारके प्रमेहोंमें प्रमेहके पैदा होतेही यत्न न करनेसे कुछकाल पाकर पेशावमें मीठा आने लगजाता है इसीकारणँ सब प्रमेहोंकीही मधुमेह संज्ञा होती है । मधुमेह होनेसे प्रायः प्रमेह असाध्य होजाते हैं ॥२५॥

वातादिभेदसे साध्यासाध्य ।

मेहाः कफभवाः साध्याः कृच्छ्रसाध्यास्तु पित्तजाः ॥
असाध्या वातजा ज्ञेयाश्चिकित्सा शोषिणी यतः ॥२६॥

कफके प्रमेह साध्यहैं । पित्तके कष्टसाध्य हैं । वायुके असाध्यहैं क्योंकि प्रमेहोंमें सब चिकित्सा शोषण होती है वायु शोषणपदार्थोंसे कुपित होताहै ॥ २६ ॥

प्रमेहोंसे नपुंसकता ।

रसशुक्रादिदुष्टत्वाद्वीर्यत्वं नश्यति स्वयम् ॥
पिडिकाभिर्दारुणाभिर्ध्वजभंगः प्रवर्तते ॥ २७ ॥
एवं प्रवर्तिते चक्रे जीवनं हि निरर्थकम् ॥
अतस्तद्दोपशांत्यर्थं सिद्धयोगान्वदामि ते ॥ २८ ॥

हेतात ! जब प्रमेहोंमें रस, रक्त, मांस, वीर्य आदि सबही खराब होजातेहैं तब वीर्यकी शक्ति तो स्वयंही नष्ट होजाती है और दारुण प्रमेहकी पिडिकाओंका विकार इंद्रियमें भी होकर ध्वजभंगनपुंसकता आकर अपना अधिकार जमा लेती है, इस प्रकार इस रोगका चक्र चलनेसे मनुष्यका जीवनही निरर्थक होजाता है । इस लिये हे शिष्य ! अब तुम्हारे पास इस दुष्ट प्रमेहके शासनकर्ता सिद्ध योगोंका वर्णन करता हूं तुम सुनो॥२७॥२८॥

कफके प्रमेहोंका यत्न ।

त्रिफलां दारुहारिद्रं मुस्तकं देवदारुकम् ॥
क्राथयित्वा मधुयुतं कफमेहनिवृत्तये ॥ २९ ॥

त्रिफला, दारुहलदी, नागरमोथा, देवदारु इनका क्राथ करके शहत मिलाकर पीवे तो कफके प्रमेह नष्ट हों ॥ २९ ॥

मुस्ताहरीतकीलोध्रैः कट्फलेन कृतं शृतम् ॥
पीतं मधुयुतं हंति प्रमेहं कफहेतुकम् ॥ ३० ॥

नागरमोथा, हरड, लोध, कायफल, इनके क्राथमें शहत डालकर पीना कफके प्रमेहोंको दूर करता है ॥ ३० ॥

पित्त प्रमेहकी चिकित्सा ।

पटोलनिंबामलकामृतानां पिबेत्कषायं मधुना समेतम् ॥
उशीरलोध्रार्जुनचंदनानां तथा पिबेत्पित्तनिमित्तमेही ३१

पित्तके प्रमेहमें पटोलपत्र, निंबका वक्कल, आमले, गिलोय, इनका क्राथ कर शहत मिलाकर पीवे। अथवा खस, लोध, धव, लाल चन्दन, इनका क्राथ शहत मिलाकर पीवे तो पित्तका प्रमेह नष्ट हो ॥ ३१ ॥

वात प्रमेह यत्न ।

त्रिफलागोक्षुरुचूर्णं घृतमाक्षिकसंयुतम् ॥
लेहयेन्मासयुग्मं च वातमेहनिवृत्तये ॥ ३२ ॥

त्रिफले और गोखरूके चूर्णको शहत और घीमें मिलाकर नित्य दो महीने चाटे तो वातप्रमेह निवृत्त हो ॥ ३२ ॥

सब प्रकारके प्रमेहोंका यत्न ।

मधुना त्रैफलं चूर्णमथ वाश्मजतूद्भवम् ॥
लोहजं वाऽभयोत्थं वा लिहन्मेहनिवृत्तये ॥ ३३ ॥

त्रिफलेके चूर्णको शहतमें मिलाकर चाटनेसे सब प्रकारके प्रमेह दूर होते हैं । अथवा शिलाजीतके खानेसे भी सर्व प्रमेह नष्ट होते हैं और लोह भस्म अथवा हरडका चूर्ण शहतमें मिलाकर चाटनेसे प्रमेह दूर होतेहैं॥ ३३।

गुडूच्याः स्वरसः पेयो मधुना सह मेहनुत् ॥ ३४ ।

गिलोयका स्वरस शहत मिलाकर पीवे तो सब प्रकारके प्रमेह दूर हों।

सिंहामृत घृत ।

कंटकार्य्या गुडूच्याश्च संहरेच्च शतं पलम् ॥
संकुटचोलूखले विद्वांश्चतुर्द्रोणेंभसः पचेत् ॥ ३५ ।
तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥
त्रिकटुत्रिफलारास्नाविडंगान्यथ चित्रकम् ॥ ३६ ॥
काश्मर्यः पंचमूलानि पूतिकस्य त्वगेव च ॥
कलिंग इति सर्वाणि सूक्ष्मपिष्टानि कारयेत् ॥ ३७ ॥
अक्षमात्रं पिबेत्प्रातः शालिभिः पयसा हितैः ॥
प्रमेहं मधुमेहं च मूत्रकृच्छ्रं भगंदरम् ॥ ३८ ॥
आलस्यं चांत्रवृद्धिं च कुष्ठरोगं विशेषतः ॥
क्षयं चैव निहंत्येतन्नाम्ना सिंहामृतं घृतम् ॥ ३९ ॥

कटेली और गिलोयको सौ सौ पल लेकर कूटकर ६४ सेर पानीमें पकावे जब १६ सेर बाकी रहे तो उतारकर छान लेवे फिर इस काथमें त्रिफला त्रिकुटा, रायसन, वायविडंग, चिता, कुम्भेर, पंचमूल, पूतिकरंज की छाल, इन्द्रजौ, इन सबका कल्क बनाकर एक सेर घृत सिद्ध करे फिर प्रातःकाल इस घृतमेंसे एक तोला घृत खाकर दूध पीवे और दूध चावल खाय तो प्रमेह, मधुमेह, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, आलस्य, अंत्रवृद्धि, कुष्ठ, क्षय यह सब रोग नष्ट हों ॥ ३५--३९ ॥

धान्वन्तर घृत ।

दशमूलं करंजौ द्वौ देवदारुहरीतकी ॥
वर्षाभूवारुणो दन्ती चित्रकं सपुनर्नवम् ॥ ४० ॥
सुधानिंबकदंबाश्च बिल्वभल्लातकानि च ॥
शठी पुष्करमूलं च पिप्पलीमूलमेव च ॥ ४१ ॥
पृथग्दशपलान्भागानेतांस्तोयार्म्मणे पचेत् ॥
यवकोलकुलित्थानां प्रस्थं प्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४२ ॥
तेन पादावशेषेण घृतपस्थं पचेद्भिषक् ॥
निचुलं त्रिफला भांर्गी रोहिषं गजपिप्पली ॥ ४३ ॥
शृंगवेरं विडंगानि वचा काम्पिल्लकं तथा ॥
गर्भेणानेन तत्सिद्धं पाययेत्तु यथाबलम् ॥ ४४ ॥
एतद्धान्वंतरं नाम विख्यातं सर्पिरुत्तमम् ॥
कुष्ठप्रमेहगुल्मांश्च श्वयथुं वातशोणितम् ॥ ४५ ॥
प्लीहोदराणि चार्शांसि विद्रधिः पिडिकाश्च याः ॥
अपस्मारं तथोन्मादं सर्पिरेतन्नियच्छति ॥ ४६ ॥
पृथक्तोयार्म्मणे तत्र पचेद्द्रव्याच्छतं शतम् ॥
शतत्रयाधिके तोयमुत्सर्गक्रमतो भवेत् ॥ ४७ ॥

दशमूलकी सब औषधियें १०० पल, दोनों कारंज १०० पल, देवदारु, हरड. पुनेरा वरना, दंती, चीता, पुनर्नवा थूहर, निम्ब, कदम्ब, बिलगिरु, भिलावे. कचूर, पोकरमूल, पीपलामूल, प्रत्येक चालीस २ तोला लेवे । जौ, वेर. कुलथी. प्रत्येक एक २ सेर लेवे फिर इनको अलग २ तोलह २ सेर जलमें पकावे चौथा हिस्सा बाकी रहे तो उतारकर छान

लेवे फिर इस क्वाथमें जलवेत, त्रिफला, भाडंगी, रोहिषतृण, गजपीपल, अदरख, वायविडंग, वच, कमीला, प्रत्येक एक २ तोला लेकर कल्क बनावे उत्तम गोघृत १ सेर लेकर इन औषधियोंका क्वाथ और कल्क मिलाकर सिद्ध करे । इस घीको धान्वन्तरघृत कहते हैं । इसके सेवनसे कोढ, प्रमेह, गुल्म, सूजन, वातरक्त, प्लीहा, उदररोग, बवासीर, विद्रधि, प्रमेहपिडिका, अपस्मार, उन्माद, यह सबरोग नष्ट होते हैं इस घृतमें ऊपर कही सौ २ पल औषधि अलग २ सोलह २ सेर जलमें पकाने चाहिये ॥ ४०–४७ ॥

चन्द्रप्रभा ।

चंद्रप्रभावचामुस्ताभूनिंबसुरदारवः ॥
हरिद्रातिविषा दार्वी पिप्पली मूलचित्रकम् ॥ ४८ ॥
धान्यकं त्रिफला चव्यं विडंगं गजपिप्पली ॥
सुवर्णमाक्षिकं व्योषं द्वौ क्षारौ लवणत्रयम् ॥ ४९ ॥
एतानि टंकमानानि संगृह्णीयात्पृथक्पृथक् ॥
द्विकर्षं हतलोहं स्याच्चतुष्कर्षा सिता भवेत् ॥ ५० ॥
शिलाजत्वष्टकर्षं स्यादष्टकर्षाश्च गुग्गुलोः ॥
विधिना योजितैरेतैः कर्तव्या गुटिका शुभा ॥ ५१ ॥
चंद्रप्रभादि विख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी ॥
निहंति विंशतिमेहान्कृच्छ्रमष्टविधं तथा ॥ ५२ ॥
चतस्रश्चाश्मरीस्तद्वन्मूत्राघातांस्त्रयोदश ॥
अण्डवृद्धिं पाण्डुरोगं कामलां च हलीमकम् ॥ ५३ ॥
श्वासं कासं तथा कुष्ठमग्निमांद्यमरोचकम् ॥
वातपित्तकफव्याधिवल्या वृष्या रसायनी ॥ ५४ ॥

कचूर, वच, नागरमोथा, चिरायता, देवदारु, हलदी, अतीस, दारुहलदी, पीपलामूल, चित्रक, धनियां, त्रिफला, चव्य, वायविडंग, गजपीपल, सोनामक्खीकी भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जीखार, जवाखार, संचरनमक, सेंधानिमक, विडनमक, प्रत्येक चार चार मासे, लोहभस्म २ तोला, मिसरी ४ तोला, उत्तम शिलाजीत ८ तोला, शुद्ध गुग्गुल ९ तोला, इन सबको मिलाकर लोहेके इमामदस्तेसे खूब कूटे और एक जीव बना देवे फिर दो २ मासेकी गोली बनावे। यह चन्द्रप्रभा गुटिका सर्वरोगनाशिनी है। इसके सेवनसे वीस प्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, मूत्राघात, अण्डवृद्धि, पांडुरोग, कामला. हलीमक, श्वास, खांसी, कुष्ठ, मन्दाग्नि, अरोचक, यह सब रोग नष्ट हों। वात, पित्त, कफके सब रोग नष्ट होते हैं और बलकारक वृष्य और रसायन है॥ ४८–५४॥

गन्धकयोग।

गंधकं गुडसंयुक्तं कर्षं भुक्त्वा पयः पिबेत्॥
विंशतिस्तेन नश्यंति प्रमेहपिटिका अपि॥ ५५॥

शुद्ध आमलासार गन्धक एक तोला लेकर गुड़में मिलायकर खावे ऊपर दूध पीवे तो वीस प्रकारका प्रमेह और प्रमेह पिडिका नष्ट होतीहैं५५

नाग भस्म योग।

शुद्धस्य च मृतस्याहे रजोवल्लमितं लिहेत्॥
सुनिशामलकं क्षौद्रं सर्वमेहप्रशांतये॥ ५६॥

शुद्ध किये शीशेकी भस्म ३ रत्ती लेकर हलदी और आमलेके चूर्णके साथ सहतमें मिलाकर नित्य चाटे तो सब प्रकारके प्रमेह नष्ट होतेहैं५६॥

अभ्रक योग।

निश्चंद्रमभ्रकं भस्म सवरा रजनीरजः॥
मधुना लीढमचिरात्प्रमेहान्विनिवर्तयेत्॥ ५७॥

निश्चन्द्र अभ्रक भस्ममें त्रिफला और हलदीका चूर्ण मिलाकर शहतमें चाटे तो सब प्रमेह शीघ्र नष्ट होते हैं ॥ ५७ ॥

शिलाजीत प्रयोग ।

शिलाजतुरसं पीत्वा प्रातः क्षीरसितायुतम् ॥
मुच्यते सर्वमेहेभ्यस्त्रिसप्तदिवसैर्नरः ॥ ५८ ॥

शिलाजीतको मिसरी मिले दूधसे नित्य प्रातःकाल सेवन करे तो २१ रोजमें सब प्रमेह दूर हों ॥ ५८ ॥

वंगेश्वर रस ।

रसस्य भस्मना तुल्यं वंगभस्म प्रकल्पयेत् ॥
अस्य गुंजाद्वयं हंति मेहान्क्षौद्रसमन्वितम् ॥
पक्वोदुंबरचूर्णं च मधुना चानुपानकम् ॥ ५९ ॥

पारेकी भस्म (अथवा चन्द्रोदय या रस सिंदूर) और वंगभस्म, दोनोंको मिलाकर सहतके साथ दो रत्ती प्रमाण चाटे और ऊपरसे गूलरके फलोका चूर्ण शहतमें मिलाकर खावे तो सब प्रकारके प्रमेह दूर होतेहैं५९

महावंगेश्वररस ।

वंगं कांतं च गगनं हेमपुष्पसमं समम् ॥ ६० ॥
कुमारीरसतो भाव्यं सप्तवारं भिषग्वरैः ॥
एष वंगेश्वरो नाम प्रमेहान्विंशतिं जयेत् ॥
मूत्रकृच्छ्रं सोमरोगं पांडुरोगं महाश्मरीम् ॥ ६१ ॥

वंगभस्म, कांतभस्म, नागभस्म, धतूरेके फूल, इनको समभाग लेकर घीकुमारके रसमें खरल करके एक रति २ प्रमाण गोलियां बनाकर सहतके साथ खावे तो यह वंगेश्वर रस २० प्रकारके प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, सोम, पांडुरोग, पथरी, इन सबको दूर करता है ॥ ६०-६१ ॥

मेहकुलांतकरस।

मृतं वंगं मृतं चाभ्रं शुद्धपारदगंधकम् ॥ ६२ ॥
भूनिंबपिप्पलीमूलं त्रिकटुत्रिफलात्रिवृत् ॥
रसांजनविडंगाब्दबिल्वगोक्षुरदाडिमम् ॥ ६३ ॥
प्रत्येकं तोलकं ग्राह्यं शुद्धमश्मजतोः पलम् ॥
गोपालकर्कटीमूलस्वरसैर्वटिकां कुरु ॥ ६४ ॥
प्रमेहान्विंशतिं हंति मूत्रकृच्छ्रं हलीमकम् ॥
अश्मरीं कामलां पांडुं मूत्राघातमरोचकम् ॥ ६५ ॥
अनुपानं प्रयोक्तव्यं छागीदुग्धं पयोथवा ॥
धात्रीफलस्य निर्यासं क्वाथं कौलत्थजं पिबेत् ॥ ६६ ॥

वंगभस्म, अभ्रकभस्म, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, चिरायता, पीपलामूल, वायविडंग, त्रिकुटा, त्रिफला, निसोथ, रसौत, मोथा, बिलगिरु, गोखरू, अनारदाना, प्रत्येक दो २ तोला लेवे, शुद्धशिलाजीत ४ तोला लेवे प्रथम पारेगंधककी कजली करके फिर सबका चूर्ण उसमें मिलाके गोपालककर्कटी (कचरी) की जडके स्वरसमें खरलकर दो २ रत्तिकी गोली बनावे और बकरीके दूध, अथवा, जल, या आमलेके रससे खाय अथवा कुलथीके काढेसे खाय तो यह प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हलीमक, पथरी, कामला, पांडु, मूत्राघात, अरोचक, इन सबको दूर करता है ॥ ६२–६६ ॥

पंचाननवटी।

चित्रकं गंधपाषाणं त्र्यूषणं पारदं विषम् ॥
त्रिफला मुस्तकं चैषां श्लक्ष्णचूर्णीकृतं शुभम् ॥ ६७ ॥
गुंजानुमानकां तां तु प्रातरेकां च भक्षयेत् ॥
अष्टादशविधं कुष्ठं वातगुल्मं स शूलकम् ॥ ६८ ॥

वातरोगं कफं सर्वं प्रमेहाश्मरिकृच्छ्रजम् ॥
प्लीहानं राजरोगं च वह्निसादमरोचकम् ॥ ६९ ॥
त्वरितं हंति चाभ्यासाज्ज्वरघ्नी संप्रकीर्तिता ॥
पंचाननवटी ह्येषा रोगाणां क्षयकारिणी ॥ ७० ॥

चित्रककी छाल, सोंठ, मिरच, पीपल, शुद्ध गंधक, शुद्धपारा, सिंगियाविष, त्रिफला, नागरमोथा, इन सबको बराबर लेवे । पहले पारे गंधककी कजली करके फिर सब दवाइयोंका चूर्ण भी कजलीमेंही मिला देवे पानीके संयोगसे रगड़कर एक २ रत्तिकी गोली बनावे इसगोलीके सेवनसे कुष्ठ, वातगुल्म,शूल, वायुके रोग,कफरोग, सब किस्मके प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, प्लीहा, राजरोग, मंदाग्नि, अरुचि, ज्वर, यह सब दूर होते हैं यह पंचाननवटी सबरोगोंको नष्ट करनेवाली है ॥ ६७-७० ॥

त्रिफलापाक ।

प्रस्थार्द्धं त्रिफलाचूर्णं शुद्धतोये विभावयेत् ॥
चतुःपले घृते भर्ज्यं मंदमंदेन वह्निना ॥ ७१ ॥
त्रिकुटा गोक्षुरु एला चित्रकं पुष्करं तथा ॥
शाणद्वयप्रमाणेन मुस्तकं त्वक्पत्रजम् ॥ ७२ ॥
निस्तुषं धान्यकं दद्यात्पलार्द्धं च प्रमाणतः ॥
काश्मीरमश्मजं शुद्धं पण्मासञ्च प्रमाणतः ॥ ७३ ॥
प्रस्थैकस्य सितायास्तु पाकं कृत्वा विधानतः ॥
शीते मधु प्रदातव्यं कुडवैकमितन्तथा ॥ ७४ ॥
कर्षद्वयप्रमाणेन भोक्तव्यं च द्विसंध्ययोः ॥
नेत्ररोगाशिरोरोगान्सर्वान्मेहांश्च नाशयेत् ॥ ७५ ॥

आधसेर त्रिफलेका चूर्ण लेकर १ पाव शुद्धजलमें भिगोकर २० तोला घृतमें मंद २ आंचसे भूनकर एकसेर मिसरीकी चासनीमें मिलावे फिर इस चासनीमें सोंठ, मिरच, पीपल, गोखरू, इलायची, मोथा, तज, पत्रज, पोहकरमूल, चित्रक, प्रत्येक आठ २ मासे लेकर चूर्ण करके उसी चासनीमें डाल देवे और दो तोला निस्तुष धनियां कूटकर डाले। शुद्ध शिलाजीत, केशर, यह छे२ मासे मिलाकर चासनीको नीचे उतारकर शीतल करे फिर इसमें एक पाव शुद्ध शहद मिलाकर चिकने वर्तनमे रख देवे। इसमेंसे नित्य प्रातःकाल और सायंकाल दो २ तोला खाय तो आखोंके रोग. शिरके रोग, सब प्रकारके प्रमेह नष्ट हों ॥ ७१-७५ ॥

इति मेहविधानं च सनिदानं चिकित्सितम् ॥
ज्ञातव्यमल्पाक्षरैस्तत् बह्वर्थशास्त्रसम्मतैः ॥ ७६ ॥

इसप्रकार नपुंसकतामें प्रमेहभी कारण होनेसे प्रमेहका निदान चिकित्सा का विधान कहचुके हैं सो हे तात ! इन बहुत अर्थ और शास्त्रोंके सम्मत थोड़े अक्षरोंसे तुम अच्छीतरेसे समझ लो ॥ ७६ ॥

श्रीवै० पचानन प० रामप्रसादोपाध्यायविनिर्मितनपुंसकामृतार्णवे नपुंसकत्वे कारणत्वात्प्रमेहवर्णनो नाम सप्तमस्तरंगः ॥

अथ-अष्टमस्तरङ्गः।

नपुंसकत्वे कारणत्वेनोपदंशफिरंगवर्णनम्।

शिष्य उवाच

उपदंशफिरंगाभ्यां शिश्नश्चापि विशीर्यते ॥
शिश्नेन हि विना नाथ कुतः पुंस्त्वस्य संभवः ॥ १ ॥
वीर्यशिश्नविकाराभ्यां ध्वजभंगः प्रवर्तते ॥
अतस्तद्दोषशांत्यर्थं यथावद्वक्तुमर्हसि ॥ २ ॥

शिष्य कहने लगे हे गुरो ! उपदंश और फिरंगसे भी तो लिंगेंद्रिय गल जाती है और गिरभी जाती है बस जब लिंगेंद्रिय विकाररहित निरोग न हो तो पुरुषार्थपना कहां होसक्ती है और वीर्यमें तथा लिंगेंद्रियमें विकार होनेसे ध्वजभंग नपुंसकता झट आ प्रवृत्त होती है । इसलिये उनकी शांति के लियेभी ठीक २ निदानचिकित्साका वर्णन कीजिये ॥ १ ॥ २ ॥

गुरुरुवाच ।

उपदंशे फिरंगे च किंचिद्भेदो हि वर्तते ॥
तदहं संप्रवक्ष्यामि सनिदानं चिकित्सितम् ॥ ३ ॥

गुरु कहने लगे हे तात ! उपदंश और फिरंगमें किंचिन्मात्र भेद है । सो वह निदान चिकित्सायुक्त कथन करता हूं ॥ ३ ॥

प्रायोपदंशमेहैश्च पीडिता मानवा भृशम् ॥
ध्वजभंगत्वमापन्ना निर्जीवा इव संस्थिताः ॥ ४ ॥

क्योंकि प्रायः उपदंश, फिरंग, प्रमेहसे पीडित होकर मनुष्य ध्वजभंगताको प्राप्त होकर मानो जीवनरहित होरहे हैं ॥ ४ ॥

उपदंशनिदान ।

हस्ताभिघातान्नखदंतपातादधावनादत्युपसेवनाद्वा ॥
दुष्टस्त्रिया योनिविकारसेवनात्पंचोपदंशाः प्रभवंति शिश्ने५

हस्तमैथुन आदिसे हाथकी चोट लगनेसे, नख और दांतके लगनेसे लिंगको न धोनेसे, अत्यन्त स्त्रीसे गमन करनेसे, दुष्ट विकृत आदि योनिवाली अथवा गर्मी आदि रोगयुक्त योनिमें मैथुन करनेसे पांच प्रकारका उपदंश लिंगेंद्रियमें होता है ॥ ५ ॥

वातोपदंशके लक्षण ।

सतोदभेदस्फुरणैः सकृष्णैः स्फोटैर्व्यवस्येन्मरुतोपदंशम् ६

लिंगेन्द्रियके ऊपर काले रंगके फोडे हों उनमें सूई चुभनेकीसी और तोडनेकीसी पीडा हो और स्फुरण हो येह वातोपदंशके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

पित्तोपदंशके लक्षण।

पीतैर्बहुक्लेदयुतैः सदाहैः पित्तेन रक्तैः पिशितावभासैः॥

पित्तके उपदंशमें पीले रंगके फोड़े होतेहैं उनमेसे पानी स्रवता है दाह होवे और रुधिरकी दुष्टतासे मांसके समान लाल रंगके घावहों॥

कफोपदंश०।

सकंडुरैः शोथयुतैर्महद्भिः शुक्लैर्घनैः स्रावयुतैः कफेन॥७॥

कफके उपदंशमें सफेद और मोटे, खाजयुक्त, गाढी राधवाले घाव होतेहैं॥ ७ ॥

सन्निपातोपदंश।

नानाविधस्रावरुजोपपन्नमसाध्यमाहुस्त्रिमलोपदंशम्॥८॥

अनेक किस्मके स्राव पीडायुक्त तीनों दोषोंके लक्षणोंवाला उपदंश असाध्य होता है॥ ८ ॥

असाध्य उपदंश।

संजातमात्रे न करोति मूढः क्रियां नरो यो विषये प्रसक्तः।
कालेन शोथक्रिमिदाहपाकैर्विशीर्णशिश्नो म्रियते स तेन९

उपदंशके पैदा होतेही जो मूर्ख इसका यत्न नहीं करते और स्त्रीसंग आदि विषयोंमें लगे रहतेहैं उनका लिंग थोडेही समयमें सूजन और कीडे, दाहवाला होकर गलकर गिरजाता है॥ ९॥

उपदंशकी चिकित्सा।

उपदंशेषु सर्वेषु स्निग्धस्विन्नस्य देहिनः॥
मेढ्रमध्ये शिरां विध्येत्पातयेद्वा जलौकसः॥ १०॥
सद्यो निर्हंति दोषस्य रुक्छोथावुपशाम्यति॥
पाको निवार्यो यत्नेन शिश्नक्षयकरश्च यत्॥ ११॥

सब किस्मके उपदंशोमें स्नेहन, स्वेदन, कराकर लिंगकी नसमेंसे रक्त निकलवावे । अथवा जोंक लगवाकर रक्त मोक्षण करावे ताके रुधिरके निकलनेसे दोष शांत होकर पीडा और सूजनभी शांत होजाती है और उपदंशमे विशेष करके इंद्रियके घावोंको शीघ्र सुखा देना चाहिये क्यों कि वह बढ़कर लिंगको नष्ट करडालते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

उपदंशपर लेप ।

वटप्ररोहार्जुनजंबुलोध्रपथ्याहरिद्रारचितप्रलेपः ॥
व्यथां तथा शोथमपाकरोति सर्वोपदंशेषु यतो हितोयम् १२

वड़के अंकुर, कोहवृक्षकी छाल, जामुनकी छाल, हरड, हलदी, लोध, इन सबको जलके संयोगसे रगड़कर किंचिद्गर्म करके लेपकरे तो सब किस्मके उपदंशोंसे हुई लिंगकी पीड़ा और सूजन दूर होती है ॥ १२ ॥

त्रिफलायाः कषायेण भृंगराजरसेन च ॥
उपदंशेषु पक्केषु व्रणप्रक्षालनं हितम् ॥ १३ ॥

त्रिफलेके क्वाथ अथवा भांगरेके रससे उपदंशके घावोको धोना घावोंको आराम करता है ॥ १३ ॥

लेप ।

पूगीफलं हरिद्रां च श्लक्ष्णं पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ॥
लिंगशोथव्यथाकंडूनाशनं नास्त्यतः परम् ॥ १४ ॥

सुपारी और हलदीको बारीक पीसकर लेप करना उपदंशकी सूजन, पीडा, खाज इनको दूर करता है ॥ १४ ॥

भूनिंबादिघृत ।

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलकरंजधात्रीखदिराशनानाम् ॥
कषायकल्कैः शृतमाज्यमाशु सर्वोपदंशापहरं प्रदिष्टम् ॥ १५

चिरायता, निंब, त्रिफला, पटोलपत्र, करंजके फल, आमले, खैरसार, विजयसार, प्रत्येक एक २ पाव लेकर १६ सेर जलमें पकावे जब ४ सेर

रहे उतारकर छान लेवे और फिर उपरोक्त सब दवाइयोंका चार २ तोला चूर्ण दूसरीदफा फिर लेकर इस क्वाथमें रगड़कर १ सेर गोघृतमें मिला कर घृत सिद्ध करे। इस घृतके खाने और लगानेसे सब प्रकारके उपदंश दूर होते हैं ॥ १५ ॥

करंजादिघृत।

करंजनिंबार्जुनशालजंबूवटादिभिः कल्ककषायसिद्धम् ॥
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं सदाहपाकं स्रुतिरागयुक्तम् ॥ १६ ॥

करंजके पत्र और फल, नीमके पत्र, कोहकी छाल, शालकी छाल, जामुन, वट, पीपल, गूलर, पाखर, पिलखन, वेतस, इन सबकी छाल लेकर उपरोक्त रीतिसे घृत सिद्ध करे। इस घृतके खाने और लगानेसे दाह, पाक, स्राव, लाली युक्त उपदंश दूर होता है ॥ १६ ॥

उपदंशका भेद फिरंग।

उपदंशस्य भेदोयं फिरंग इति कथ्यते ॥
दुष्टयोनिप्रभावाच्च संसर्गोष्णप्रशीततः ॥ १७ ॥
उष्णदेशोद्भवा ये च शीतदेशभवा श्च ये ॥
विकृतानां प्रसंगाच्च फिरंगमुपपद्यते ॥ १८ ॥

हेतात! उपदंशकाही भेद फिरंग रोगहै। यह रोग दुष्ट योनि अथवा रोगयुक्त योनिके संसर्गसे अथवा गरम देशके पुरुष शीतल देशके रहने वाली स्त्रियोंसे मैथुन करें। या शीतदेशवासी मनुष्य उष्णदेशवासी स्त्रियोंसे मैथुन करे तो यह फिरंग होताहै और विकृत अर्थात् उलटे स्व-भाववाले देश निवासियोंके संसर्गसे यह फिरंग रोग उत्पन्न होताहै। अथवा फिरंगियोंके देशमें होनेवाले उपदंशको भी फिरंग कहतेहैं उनके संसर्गसे हुवा उपदंश इसदेशमें भी फिरंगनामसे कहा जाताहै यथार्थमें यह उपदंशकाही भेद है ॥ १७-१८ ॥

फिरंगका रूप ।

फिरंगस्त्रिविधो ज्ञेयो बाह्य आभ्यंतरस्तथा ॥
बहिरन्तर्भवश्चापि तेषां लिंगानि च ब्रुवे ॥ १९ ॥
तत्र बाह्यफिरंगः स्याद्विस्फोटसदृशोऽल्परुक् ॥
स्फुटितो व्रणवद्वेद्यः सुखसाध्योपि स स्मृतः ॥२०॥
संधिष्वाभ्यंतरः स स्यादामवात इव व्यथाम् ॥
शोथं च जनयेदेष कष्टसाध्यो बुधैः स्मृतः ॥ २१ ॥

फिरंग रोग तीनप्रकारका है १ वाहर, दूसरा भीतर, तीसरा वाहर और भीतर, इसप्रकार ३ किस्मका है उन तीनोंके चिह्न अब कथन करते हैं वाहरके फिरंगमें जो फोडे होतेहैं उनमें थोड़ी पीड़ा होतीहै और फोडेकी समान फूटताहै इसका यत्नभी फोडेके घावकी समान सुखसाध्य है और अन्दरके होनेवाला फिरंग सन्धियोमें होता है और उसमें संधियोमे अत्यंत पीड़ा तोद आदि होतेहैं अथवा जिसमें वाहर और भीतरके दोनों लक्षण मिलते हों और शोथ भी पैदा होगया हो यह कष्टसाध्य है ॥ १९-२१ ॥

फिरंगके उपद्रव ।

कार्श्यं बलक्षयो नासाभंगो वह्नेश्च मंदता ॥
अस्थिशोषोस्थिवक्रत्वं फिरंगोपद्रवा अमी ॥ २२ ॥

शरीरका कृश होना, वलका नाश, नाक बैठ जाना, अग्निमंद होना, हड्डियोंका सूखना, या टेढा होजाना, ये फिरंग रोगके भेदहैं ॥ २२ ॥

साध्याऽसाध्यत्वञ्च ।

वहिर्भवो भवेत्साध्यो नवीनो निरुपद्रवः ॥
आभ्यंतरस्तु कष्टेन साध्यः स्यादयमामयः ॥ २३ ॥

बहिरंतर्भवो जीर्णे क्षीणस्योपद्रवैर्युतः ॥
व्याप्तो व्याधिरसाध्योऽयमित्याहुर्मुनयः पुरा ॥ २४ ॥

जो फिरंग नवीन बाहर प्रगट हुवा हो और उपद्रवरहित हो वह साध्यहै । और जो भीतर प्रगट हुवा हो और पुराचीन हो वह कष्टसाध्य है और जो बाहर और भीतर प्रगट हो पुराचीन हो और मनुष्य क्षीण हो और उपद्रवयुक्त हो तो असाध्य समझना ॥२३-२४॥

फिरंगकी चिकित्सा ।

फिरंगे सार्पिषः पानं तीक्ष्णं वापि विरेचनम् ॥
रक्तस्य मोक्षणं चैव हितं च पथ्यभोजनम् ॥ २५ ॥

फिरंग रोगमें फिरंगनाशक घृतोंका पीना, और जमालगोटे आदिका तीक्ष्ण विरेचन कराना, तथा रक्तमोक्षणकराना और पथ्य भोजनका सेवन करना तथा पथ्यसे रहना यह सब हितकारक है ॥ २५ ॥

रसकर्पूरसेवन ।

केवलं रसकर्पूरमूर्द्ध्वपातनकारितम् ॥
रक्तिकार्द्धप्रमाणेन पक्वगोधूमवेष्टितम् ॥ २६ ॥
अथवा रक्तिकामानं पक्वचूर्णेन वेष्टितम् ॥
विधिना भक्षयेद्रोगी लवंगचूर्णसंयुतम् ॥ २७ ॥
अलवणं भक्षयेच्चान्नं अथवा घृतसंयुतम् ॥
स्नातको ब्रह्मचारी च तिष्ठेद्विधियुतो बुधः ॥ २८ ॥
पूर्वं विरेचनं कुर्यात्तत्पश्चाद्भक्षयेद्वटीम् ॥
उपदंशफिरंगघ्नीं उत्तमेयं प्रकीर्तिता ॥ २९ ॥

रसकपूरको लेकर डमरूयंत्रद्वारा उडा लेवे फिर इस उडेहुवे रसकपूरको एकरत्ति अथवा आधी रत्ती प्रमाण लेकर कनककी रोटीके अंदरके गूदेमें

डालकर युक्तिसे गोली बनावे ताके गोलीसे बाहर किंचिन्मात्रभी रसकपूर न रहै फिर इस गोलीको लौगोंके बारीक चूर्णमें लपेटकर फिरंगरोगवाला इसगोलीको साबतही निगल जावे मुखमें न लगने देवे, ऊपरसे केवल एक घूंट सील गर्मपानीको पीवे और विना नमक व मीठेके केवल सूखी रोटी खाय अथवा केवल घीसेही खावे और स्नान न करे ब्रह्मचारी रहे इस प्रकार ७ रोज अथवा १४ रोज खाना चाहिये । परतु पहले तीक्ष्ण विरेचनद्वारा शुद्धशरीर होकर खावे तो उपदंश और फिरंग अवश्य नष्ट हो यह अनुभव कियाहुवा परमोत्तम योगहै ॥ २६–२९ ॥

मर्हम ।

तुत्थं सिक्थं च कांपिल्लं सिंदूरं मृतमश्मकम् ॥
पूगीफलं च खर्जूरं भर्जितं शाणमात्रकम् ॥ ३० ॥
कर्पूरं च वेदगुंजा सर्वं संमेलयेद्बुधः ॥
एकोत्तरशतं धौते नवनीते विमेलयेत् ॥ ३१ ॥
उपदंशफिरंगघ्नं लेपनं परमोत्तमम् ॥
अनुभूतश्च योगोयं योगेषु प्रवरो मतः ॥ ३२ ॥

नीलाथोथा, मोम, कमीला, सिदूर, मुर्दाशंख, सुपारीका कोयला, छुवारेका कोयला, प्रत्येक चार २ मासे, रसकपूर ४ रत्ति, सबको बारीक करके १०१ बार धुले मक्खनमे मिलाकर उपदंश, और फिरंगके जखमांपर लगावे तो वह जखम, जल्दी अच्छे होजातेहैं यह परमोपयोगी उत्तम अनुभव किया परम उत्तम मर्हम है ॥ ३०--३२ ॥

चोपचीनीयोग ।

चोपचीनीभवं चूर्णं शाणमानं समाक्षिकम् ॥
फिरंगव्याधिनाशाय भक्षयेल्लवणं त्यजेत् ॥ ३३ ॥

चोपचीनीके ४ मासे चूर्णको शहदमे मिलाके चाटे और केवल घृतरोटी खावे और नमक आदिसे परहेज रक्खे तो फिरंगरोग दूर हो ॥ ३३ ॥

उशवाऽवलेह ।

चतुःपलां ध्रुवजटां नवकर्षं किरातकम् ॥
दशकर्षा त्रिवृद्ग्राह्या षट्कर्षा स्वर्णपत्रिका ॥ ३४ ॥
हरीतकीत्रयं चैव वित्रिकर्षं पृथक् पृथक् ॥
शतपत्री निराधारा शतपुष्पा तथैव च ॥ ३५ ॥
नीलोत्पलं पर्पटं च सार्द्धकर्षैलवालुकम् ॥
कर्षकर्षप्रमाणेन धान्यकं रक्तचंदनम् ॥ ३६ ॥
चोपचीनीपलं चैकं योजयेन्मतिमान्नरः ॥
सर्वं सकुटचविधिना श्लक्ष्णं चूर्णं च कारयेत् ॥ ३७ ॥
वातामकोद्भवे तैले मर्दयेच्च चतुःपले ॥
त्रिगुणे माक्षिके शुद्धे विधिना मेलयेद्भिषक् ॥ ३८ ॥
कर्षमानं भक्षयित्वा कोष्णतोयं ततः पिबेत् ॥
वसंते भक्षयेन्नित्यं प्रातःकाले यथाबलम् ॥ ३९ ॥
घृतं मुद्गं तथा शालीन्भक्षयेन्मतिमान्नरः ॥
अम्लं तैलं दधि दुग्धं गुडं चापि परित्यजेत् ॥ ४० ॥
नानायोगेषु योगोयमुत्तमः परिकीर्तितः ॥
मेहं कुष्टं फिरंगं हि उपदंशं च नाशयेत् ॥ ४१ ॥
सर्वान्रक्तभवांश्चैव रोगान्नाशयति ध्रुवम् ॥
कृपया ह्येकदा मह्यं मातुलेन प्रकाशितम ॥ ४२ ॥

उशवा २० तोला, चिरायता ९ तोला, उत्तम निशोथ १० तोला, सनाय ६ तोला, बडी हर्डका वक्कल ३ तोला, काबलीहरडका वक्कल ३

तोला, जंगीहर्ड ३ तोला, गुलाबके फूल १॥ तोला, आकाशवेल (अफतिमुन) १॥ तोला, सौंफ १॥ तोला, नीलोफर १॥ तोला, पापडा १॥ तोला, एलुवा १॥ तोला, चोपचीनी ५ तोला, धनिया १ तोला, लालचंदन १ तोला, इन सबको कपडछान करके, वीसतोला बादाम रोगनमें मसलकर सबसे तीनगुने शुद्ध शहदमें मिलाकर चिकनेबर्तनमें भरकर रख देवे इसमेंसे एक तोला, अथवा जितना वैद्य उचित समझे उतना खिलाकर ऊपरसे थोडासा गरम जल पिलावे और मूंग, चावल, घी, आदि पथ्य भोजन करावे तैल, खटाई, दही, दूध, उदडकी दाल लाल मिर्चसे परहेज रक्खे और इसको वसंत ऋतुमें बराबर दोमहीने खिलावे तो प्रमेह, कुष्ठ, फिरंग, उपदंश, और रक्तके विकार, इन सबको नष्ट कर्ताहै। यह परमोत्तम उशबावलेह, एक समय स्नेहवश कृपा करके हमारे मामा केशवानंदजीने कथन कियाथा ॥ ३४-४२ ॥

जंबु आदि तैल ।

जंबुवेतसपत्राणि धात्रीपत्रं तथैव च ॥
नक्तमालस्य पत्राणि तद्वत्पद्मोत्पलानि च ॥ ४३ ॥
बला चातिबलाम्रास्थि मधुकं च प्रियंगवः ॥
लाक्षा कालीयकं लोध्रं चंदनं त्रिवृताह्वया ॥ ४४ ॥
एतान्येकीकृतान्येव वत्समूत्रेण पेषयेत् ॥
अक्षमात्रयुतैर्द्रव्यैस्तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४५ ॥
सर्वव्रणहरं तैलमेतत्सिद्धं प्रयोजितम् ॥
उपदंशहरं श्रेष्ठं फिरंगनाशकन्तथा ॥ ४६ ॥

जासुनका छिलका, वेतका छिलका, आमलेके पत्र, करंजुवेके पत्र, नीलोफर, कमल, बला, अतिवला, आमकी गुठली, मुलैठी, फूलप्रियंगु, लाख, कालीयक, लोध, लालचंदन, निशोथ, प्रत्येक एक २ तोला लेकर

बछड़ेके मूत्रमे रगड़कर कल्क वनावे इस कल्कद्वारा एकसेर तैलको सिद्ध करे, इस तेलके लगानेसे सब प्रकारके घाव, उपदंशके घाव, फिरंगके घाव नष्ट होतेहैं ॥ ४३–४६ ॥

कोशातकी तैल ।

तिक्तकोशातकीलम्बाबीजनागरसाधितम् ॥
तैलं हंत्याचिराद्धोरं व्रणं दुष्टमनेकधा ॥ ४७ ॥

कड़ुवी तोरीके बीज, कडवी तोंबीके बीज, सोंठ, इन तीनोंका कल्क करके तैलको सिद्ध करे इसके लगानेसे अनेक प्रकारके घोर दुष्ट घाव नष्ट होते हैं ॥ ४७ ॥

उपदंशघ्न रस ।

पारदः कर्षमात्रः स्यात्तावन्मात्रं तु गंधकम् ॥
तावन्मात्रस्तु खदिरस्तेषां कुर्यात्तु कज्जलीम् ॥ ४८ ॥
रजनीकेशरं त्रुटचौ जीरयुग्मं यवानिका ॥
चंदनद्वितयं कृष्णा वांसी मांसी च पत्रकम् ॥ ४९ ॥
अर्द्धकर्षमितं सर्वं चूर्णयित्वा च निक्षिपेत् ॥
तत्सर्व मधुसर्पिभ्यां द्विपलाभ्यां पृथक्पृथक् ॥ ५० ॥
मर्दयेदथ तत्खादेदर्द्ध कर्षमितं नरः ॥
व्रणः फिरंगरोगोत्थस्तस्यावश्यं विनश्यति ॥ ५१ ॥
अन्योऽपि चिरजातोऽपि प्रशाम्यति महाव्रणः ॥
एतद्भक्षयतः शोथो मुखस्यांतर्न जायते ॥ ५२ ॥
वर्जयेदत्र लवणमेकविंशतिवासरान् ॥
घृतयुक्तामथो शुष्कां भक्षयेत्करपट्टिकाम् ॥ ५३ ॥

तोला, जंगीहर्ड ३ तोला, गुलाबके फूल १॥ तोला, आकाशवेल (अफतिमुन) १॥ तोला, सौंफ १॥ तोला, नीलोफर १॥ तोला, पापडा १॥ तोला, एलुवा १॥ तोला, चोपचीनी ५ तोला, धनिया १ तोला, लालचंदन १ तोला, इन सबको कपडछान करके, वीसतोला बादाम रोगनमें मसलकर सबसे तीनगुने शुद्ध शहदमें मिलाकर चिकनेवर्तनमें भरकर रख देवे इसमेंसे एक तोला, अथवा जितना वैद्य उचित समझे उतना खिलाकर ऊपरसे थोडासा गरम जल पिलावे और मुंग, चावल, घी, आदि पथ्य भोजन करावे तैल, खटाई, दही, दूध, उदडकी दाल लाल मिर्चसे परहेज रक्खे और इसको वसंत ऋतुमें बराबर दोमहीने खिलावे तो प्रमेह, कुष्ठ, फिरंग, उपदंश, और रक्तके विकार, इन सबको नष्ट कर्ताहै । यह परमोत्तम उशबावलेह, एक समय स्नेहवश कृपा करके हमारे मामा केशवानंदजीने कथन कियाथा ॥ ३४–४२ ॥

जंबु आदि तैल ।

जंबुवेतसपत्राणि धात्रीपत्रं तथैव च ॥
नक्तमालस्य पत्राणि तद्वत्पद्मोत्पलानि च ॥ ४३ ॥
बला चातिबलाम्रास्थि मधुकं च प्रियंगवः ॥
लाक्षा कालीयकं लोध्रं चंदनं त्रिवृताह्वया ॥ ४४ ॥
एतान्येकीकृतान्येव वत्समूत्रेण पेषयेत् ॥
अक्षमात्रयुतैर्द्रव्यैस्तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४५ ॥
सर्वव्रणहरं तैलमेतत्सिद्धं प्रयोजितम् ॥
उपदंशहरं श्रेष्ठं फिरंगनाशकन्तथा ॥ ४६ ॥

जामुनका छिलका, वेतका छिलका, आमलेके पत्र, करंजुवेके पत्र, नीलोफर, कमल, बला, अतिवला, आमकी गुठली, मुलैठी, फूलप्रियंगु, लाख, कालीयक, लोध, लालचंदन. निशोथ, प्रत्येक एक २ तोला लेकर

बछड़ेके मूत्रमे रगड़कर कल्क बनावे इस कल्कद्वारा एकसेर तैलको सिद्ध करे, इस तेलके लगानेसे सब प्रकारके घाव, उपदंशके घाव, फिरंगके घाव नष्ट होतेहैं ॥ ४३-४६ ॥

कोशातकी तैल ।

तिक्तकोशातकीलम्बाबीजनागरसाधितम् ॥
तैलं हंत्याचिराद्धोरं व्रणं दुष्टमनेकधा ॥ ४७ ॥

कडुवी तोरीके बीज, कडवी तोंबीके बीज, सोंठ, इन तीनोंका कल्क करके तैलको सिद्ध करे इसके लगानेसे अनेक प्रकारके घोर दुष्ट घाव नष्ट होते हैं ॥ ४७ ॥

उपदंशघ्न रस ।

पारदः कर्षमात्रः स्यात्तावन्मात्रं तु गंधकम् ॥
तावन्मात्रस्तु खदिरस्तेषां कुर्यात्तु कज्जलीम् ॥ ४८ ॥
रजनीकेशरं त्रुटचौ जीरयुग्मं यवानिका ॥
चंदनद्वितयं कृष्णा वांसी मांसी च पत्रकम् ॥ ४९ ॥
अर्द्धकर्षमितं सर्व चूर्णयित्वा च निक्षिपेत् ॥
तत्सर्व मधुसर्पिभ्यां द्विपलाभ्यां पृथक्पृथक् ॥ ५० ॥
मर्दयेदथ तत्खादेदर्द्ध कर्षमितं नरः ॥
व्रणः फिरंगरोगोत्थस्तस्यावश्यं विनश्यति ॥ ५१ ॥
अन्योऽपि चिरजातोऽपि प्रशाम्यति महाव्रणः ॥
एतद्भक्षयतः शोथो मुखस्यांतर्न जायते ॥ ५२ ॥
वर्जयेदत्र लवणमेकविंशतिवासरान् ॥
घृतयुक्तामथो शुष्कां भक्षयेत्करपट्टिकाम् ॥ ५३ ॥

शुद्ध पारा १ तोला, गंधक, १ तोला, कत्था १ तोला, इन तीनोंको खरलमे डालकर तीनदिन खूब रगड़े जब कजली होजाय फिर इसमें हलदी, केशर, इलायची, जीरा, काला जीरा, अजवायन, चन्दन, लालचंदन, पीपल, वंशलोचन, जटामांसी, पत्रज, यह छै २ मासे मिलावे और वारीक पीसकर एक जीव करदेवे फिर इसमें शहद ८ तोला डालकर खूब घोटे फिर ५ तोला घृत मिलाकर खरल करे। फिर छै २ मासेकी गोली वनावे और १ गोली नित्य २१ रोजतक खाय नमक न खावे केवल सूखी रोटी अथवा घी रोटी खावे इसके खानेसे मुह नहीं आता और फिरंग, घाव, सब प्रकारके नये पुराने जखम नष्ट होतेहैं ॥ ४८-५३ ॥

प्रसंगात्कथिता तात उपदंशहरी क्रिया ॥
व्रणवत्कुष्ठवच्चात्र कर्तव्या विविधाः क्रियाः ॥ ५४ ॥
स्वेदनं वमनं चाथ तीक्ष्णश्चैव विरेचनम् ॥
ततश्च औषधीनां वै प्रयोगमुपयोजयेत ॥ ५५ ॥

हे तात ! प्रसंगवश इस तरंगमें उपदंश और फिरंग नाशक थोडीसी क्रिया कथन करदी है। प्रायः फिरंगमें कुष्ठ और व्रणकी समान अनेक क्रियाओंसे शरीरके दोषको शमन करना चाहिये और पहले स्वेदन स्नेहन कराकर वमन करादेना चाहिये। फिर तीक्ष्ण औषधि (जमालगोटा आदि) से विरेचन कराकर फिर दोषघ्न रोगनाशक औषधियोंसे रोगकी शान्ति करे ॥ ५४-५५ ॥

विधिनानेन प्रथमं प्रमेहादीन्विनाशयेत् ॥
ततः शुद्धे शरीरे च कुर्याद्वाजिकरं विधिम् ॥ ५६ ॥

पहले इस प्रकार पूर्वोक्त विधिसे प्रमेह उपदंश आदि उपद्रवोंको शमन करे जब शुद्ध शरीर होजाय तो वाजीकरण पदार्थोंसे विधिपूर्वक शरीर और वीर्यकी शक्तिको वलवान् करनेका उपाय करे ॥ ५६ ॥

इति श्रीवैद्य पचानन पं० रामप्रसादोपाध्यायकृतनपुंसकामृतार्णव उपदंशरोगवर्णनो नामाष्टमस्तरंगः ॥

अथ नवमस्तरंगः ।

अथोत्तमवाजीकरणरसायनयोगवर्णनम् ।

गुरुरुवाच ।

यद्यत्तात त्वया पृष्टं तत्तत्सर्वं हि वर्णितम् ॥
उत्तमानधुना योगान्वाजीकररसायनान् ॥ १ ॥
तव बुद्धिप्रभावेण विनयावनतेरथ ॥
प्रसन्नोहमतस्तात वक्ष्ये तदपि श्रूयताम् ॥ २ ॥

हे तात ! तुमने हमसे जोजो कुछ पूछा वह हमने सब कुछ सुनादियाँहै । परंतु तुम्हारी बुद्धिके प्रभावसे और नीतियुक्त नम्रतासे मैं बहुत प्रसन्न हुवा हूं इसलिये अब उत्तम वाजीकरण और रसायन योगोंका थोड़ा और कथन करता हूं सो तुम सुनो ॥ १-२ ॥

दशमूलारिष्ट ।

पण्यौ बृहत्यौ गोकंटबिल्वाग्निमंथनोरलूः ॥
पाटला काश्मरी चेति दशमूलमिहोच्यते ॥ ३ ॥
दशमूलानि कुर्वीत भागैः पंचपलैः पृथक् ॥
पंचविंशपलं कुर्याच्चित्रकं पौष्करं तथा ॥ ४ ॥
कुर्याद्विंशत्पलं लोध्रं गुडूची तत्समा भवेत् ॥
पलैष्षोडशभिर्धात्री रविसंख्यैर्दुरालभाः ॥ ५ ॥
खदिरो बीजसारश्च पथ्या चेति पृथक् पलैः ॥
अष्टाभिर्गुणितैः कुष्ठं मांजिष्टा देवदारु च ॥ ६ ॥

विडंगं मधुकं भार्ङ्गी कपित्थोक्षः पुनर्नवा ॥
चव्यमांसी प्रियंगुश्च सारिवा कृष्णजीरकम् ॥ ७ ॥
त्रिवृता रेणुका रास्ना पिप्पली क्रमुकः सटी ॥
हरिद्रा शतपुष्पा च पद्मकं नागकेशरम् ॥ ८ ॥
मुस्तामिंद्रयवा शृंगी जीवकर्षभकौ तथा ॥
मेदाश्चान्या महामेदा काकोल्या ऋद्धिवृद्धि च ॥ ९ ॥
कुर्यात्पृथक् द्विपलिकान्पचेदष्टगुणे जले ॥
चतुर्थांशशृतं नीत्वा मृद्भांडे संनिधापयेत् ॥ १० ॥
ततष्षष्टिपलां द्राक्षां पचेन्नीरे चतुर्गुणे ॥
त्रिपादशेषं शीतं च पूर्वक्काथे शृतं क्षिपेत् ॥ ११ ॥
द्वात्रिंशत्पलकं क्षौद्रं गुडं दद्याच्चतुःशतम् ॥
त्रिंशत्पलानि धातक्याः कंकोलं जलचंदनम् ॥ १२ ॥
जातीफलं लवंगं च त्वगेलापत्रकेशरम् ॥
पिप्पली चेति संपूर्णभागैर्द्विपलिकैः पृथक् ॥ १३ ॥
शाणमात्रां च कस्तूरीं सर्वमेकत्र निक्षिपेत् ॥
भूमौ निखनयेद्भांडं ततो जाते रसे पिबेत् ॥ १४ ॥
कतकस्य फलं क्षिप्त्वा रसं निर्मलतां नयेत् ॥
ग्रहणीमरुचिं शूलं श्वासकासभगंदरान् ॥ १५ ॥
वातव्याधिं क्षयं छर्दिं पाण्डुरोगं सकामलम् ॥
कुष्टान्यर्शांसि मेहांश्च मंदाग्निमौदराणि च ॥ १६ ॥

शर्करामश्मरीं चैव मूत्रकृच्छ्रं क्षयं नयेत् ॥
कृशानां पुष्टिजननो वंध्यानां पुत्रदः परः ॥
अरिष्टो दशमूलाख्यस्तेजःशुक्रबलप्रदः ॥ १७ ॥

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटीकटेली, वडीकटेली, गोखरू, विल्व, अरणी, अरलू, पाटला, कुम्हार, इनको दशमूलकहतेहैं । दशमूलकी प्रत्येक औषध पांच २ पल (अर्थात् सवमिलाकर दशमूल ५० पल) और चित्रक २५ पल, पुहकरमूल२५ पल, लोध २० पल, गिलोय२० पल, आमले १२ पल, धमासा १२ पल खैरसार ८ पल, विजयसार ८ पल, हरड ८ पल, कूठ, मंजीठ, देवदारु, वायविडंग, मुलैठी, भारंगी, कैथ, वहेडा, पुनर्नवा, चव्य, जटामांसी, प्रियंगु, सारिवा, कालाजीरा, निशोथ, रेणुका, रास्ना, पीपल, सुपारी, कचूर, हलदी, सौंफ, पद्माख, नागकेशर, मोथा; इंद्रजौ, काकडासिगी, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धी, वृद्धी, प्रत्येक दो २ पल लेकर सवसे आठगुणे जलमें पकावे चतुर्थांशवाकी रहने पर उतार लेवे । मुनक्का ६० पल, लेकर चारगुणे जलमें पकावे तीसरा हिस्सावाकी रहनेपर उतारले, इन दोनोंक्काथोंको एकत्र करके मिट्टीके पात्रमें भरकर उसमें सहद ३२ पल, गुड़ १०४ पल, धायके फूल ३० पल, कंकोल, नेत्रवाला, लालचंदन, जायफल, लौंग, दालचीनी इलायची, तेजपात, नागकेशर. पीपल, प्रत्येक दो २ पल कस्तूरी चार मासे लेवे, सवका चूर्ण कर उसी पात्रम डालकर पात्रका मुख वंद करदेवे और उसको पृथ्वीमें (खातयुक्त गरम पृथ्वीमे) गाड देवे एकमहीने वाद निकालकर इसमें निर्मली फलका चूर्ण डालकर रसमात्र शुद्ध करके नितार लेवे (अथवा अर्क खींच लेवे) इसषो भोजनके समय उचित मात्रासे सेवन करे. इसके सेवन करनेसे संग्रहणी, अरुचि, शूल श्वास. खांसी, भगंदर, वातव्याधि, क्षय, वमन, पाडुरोग, कामला, कोढ, ववासीर. प्रमेह मंदाग्नी, उदररोग, शर्करा,

पथरी, मूत्रकृच्छ्र, धातुक्षय, ये सब दूर होवें, कृश मनुष्योंको पुष्ट करे, वंध्या पीवे तो संतानवाली होवे, यह दशमूलारिष्ट तेज, वीर्य और बलको देताहै ॥ ३-१७ ॥

मृतसंजीवनीसुरा ।

नवं गुडं च संगृह्य शतमेकपलं तथा ॥
वर्बुरीत्वचं च संगृह्य बदरीत्वचमेव च ॥ १८ ॥
प्रस्थंप्रस्थं प्रदातव्यं पूगं देयं यथोचितम् ॥
दत्त्वा लोध्रं च कुडवमार्द्रकं च पलद्वयम् ॥ १९ ॥
तोयमष्टगुणं दत्त्वा गुडं संघोलयेत्सुधीः ॥
प्रथमे चार्द्रकं दद्याद्द्वितीये बर्बुरीत्वचम् ॥ २० ॥
तृतीये बदरीं दत्त्वा गोलयित्वा भिषग्वरः ॥
मुखे शरावकं दत्त्वा यत्नात्कृत्वा च बंधनम् ॥ २१ ॥
मुखं संबंधनं कृत्वा स्थापयेद्दिनविंशतिम् ॥
मृण्मये मोचिकायंत्रे मयूराख्येपि यंत्रके ॥ २२ ॥
यथाविधि प्रकारेण मंदमंदेन वह्निना ॥
चुल्हीमध्ये विधातव्यं मृत्तिकादृढभाजने ॥ २३ ॥
तदौषधं च तन्मध्ये समुद्धृत्य विनिक्षिपेत् ॥
नले च युगलं दत्त्वा कुंभौ च गजकुंभवत् ॥ २४ ॥
कुंभमध्ये निधातव्यं पूगं च तैलवालुकम् ॥
देवदारु लवंगं च पद्मकोशीरचंदनम् ॥ २५ ॥
शतपुष्पा यवानीका मरिचं जीरकद्वयम् ॥
शठी मांसी त्वगेला च जातीफलसमुस्तकम् ॥ २६ ॥

ग्रंथिपर्णी तथा शुंठी मेथी मेषी च चंदनम् ॥
एषां चार्द्धपलान्भागान्कुट्टयित्वा विनिक्षिपेत् ॥ २७ ॥
यथाविधिप्रकारेण चालनं दापयेत्सुधीः ॥
बुद्धिमान्सोंजनं कृत्वा उद्धरेद्विधिवत्सुराम् ॥ २८ ॥
एतन्मद्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुवयःक्रमम् ॥
आरोग्यजननं देहदार्ढ्यकृद्धलवर्द्धनम् ॥ २९ ॥
मेध्याग्निस्मृतिकृद्वीर्यशुक्रकृद्वातनाशनम् ॥
बलपुष्टिकरं चैव कामदं दीपनं परम् ॥ ३० ॥
दश स्त्री रमयेन्नित्यमानंद उपजायते ॥
रणे तेजोमयः सद्यो यथा भीमःपराक्रमीः ॥ ३१ ॥

नवीन गुड़ ४०० तोले, कीकरकी छाल वेरीकी छाल, सुपारी, प्रत्येक एक २ सेर, लोध १ पाव, अदरख ८ तोला, इनसे आठगुणा जल लेकर उसमें गुड़ घोल देवे फिर यथाक्रम पहले अदरख, वेरकी छाल आदि डालकर उत्तमरीतिसे मिला देवे। फिर सुपारी और लोधके चूर्णका प्रक्षेप करके उस पात्रका मुख बंद करके २० रोजतक रक्खा रहने देवे फिर इसको मिट्टीके वारुणीयंत्र अथवा मयूर यंत्रमे डालकर मंद २ अग्निसे गरम करे। फिर इसमे सुपारी एलवालुक, देवदारु, लौंग पद्माख, खस, लालचंदन सौंफ, अजवायन मिरच, दोनों जीरे कचूर, जटामांसी, दालचीनी, इलायची, जायफल, नागरमोथा, गठौना, सोंठ, मेथी, मेढासिंगी चंदन प्रत्येक दो २ तोला कूटकर डाल देवे और लकडीसे खूब मिला देवे। फिर मुखबंदकर नाल लगाकर विधिपूर्वक अर्क खींच लेवे। फिर अवस्था आदिका विचार करके वैद्य योग्यमात्रासे सेवन करावे इसके सेवनसे मनुष्य आरोग्य रहे देह दृढहो, बल, मेधा, अग्नि. स्मृति,

वीर्य, पुष्ट हो, कामाग्नि दीपन हो, दश स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्ति हो, रणमें लडनेकी शक्ति बढे । यह मृतसंजीवनी सुराहै क्षत्रियोंके सेवन-योग्य है ॥ १८-३१ ॥

भल्लातक ।

अनुभूतं शुभं योगं प्राप्तमाप्तसकाशतः ॥
तदहं संप्रवक्ष्यामि शृणु तात विधानतः ॥ ३२ ॥
पक्वान्भल्लातकांश्चैव मृदुवातेन पातितान् ॥
आनीय विधिना कुट्य तद्दूरीकृतमूर्द्धजान् ॥ ३३ ॥
घृतेन पाणिं संलिप्य सगुडं मृदु पेषयेत् ॥
माषमात्रप्रमाणेन वटी कार्या प्रयत्नतः ॥ ३४ ॥
शुद्धं घृतं समानीय मुखे संलिप्य पाययेत् ॥
वटिकां भक्षयित्वाथ घृतानुपानमाचरेत् ॥ ३५ ॥
सायं प्रातश्च संभुज्य लवणादीन्परित्यजेत् ॥
नीरोगो बलवान्धीमान्मासैकेन भविष्यति ॥ ३६ ॥
घृतेन भक्षयेदन्नं वातातपं परित्यजेत् ॥
उपदंशप्रमेहार्शःफिरंगाश्चैव दारुणाः ॥ ३७ ॥
वातव्याधिस्तथा चैवं नश्यंति नात्र संशयः ॥
विरेचनं पुरा कृत्वा पश्चादेनं प्रभक्षयेत् ॥ ३८ ॥

हे तात ! एक महात्माका कथन किया हुवा और आजमाया हुवा एक उत्तम योग सुनाता हूं तुम सावधान होकर सुनो । मन्द २ पवनसे उत्तम पककर गिरेहुये भिलावे लेकर उनके ऊपरकी टोपियें उतार डाले फिर हाथोंको घी लगाकर इनको खूब कूटे (घी इसलिये लगया जाता है कि जिस

स्थानपर भिलावेके रसका छींटा पड़जाय वहींपर सूजन पैदा होजाती है इसलिये हाथोको घी लगा लेवे और शरीरपर भिलावेका छींटा लगनेसे बचावे) और बराबरका पुराना गुड मिलाकर भिलावे और गुडको एक जीव कर देवे फिर इसकी एक २ मासेकी गोली बनावे फिर रोगीको पहले वमनविरेचन कराकर इन गोलियोका सेवन करावे । गोली खानेसे पहले उत्तम साफ घीका एक घूंट लेकर मुखमें चारो तर्फ फेरकर निगल लेवे फिर १ गोली मुखके अन्दर डालकर निगल लेवे ऊपरसे फिर घीका घूंट लेवे यदि गोली वडी हो तो छोटी २ बनाकर निगल जावे और मुखमें जादे न लगने देवे इस प्रकार एक महीना दोनो वक्त सेवन करनेसे उपदंश, प्रमेह, ववासीर, दारुणफिरंग, यह सव दूर होतेहैं इसमे संशय नही ३२-३८

महाकल्कनामक रस ।

महाकल्कं प्रवक्ष्यामि श्रूयतांशिष्यसत्तम ॥
धान्याभ्रकं विनिक्षिप्य मुसलीरसमर्दितम् ॥ ३९ ॥
स्थाल्यां क्षिप्त्वा निरुध्याथ पिधान्या मध्यरंध्रया
स्थाल्यधो ज्वालयेद्वह्निं यामपर्यंतमुद्धृतम् ॥ ४० ॥
ततः क्षिपेत्पिधान्यां हि व्योम्नस्त्वष्टगुणं पयः ॥
जीर्णे पयसि पिष्ट्वा तत्तालमूलीरसैः पुनः ॥ ४१ ॥
इत्थं हि साधयेद्व्योम त्रिवारमातियत्नतः ॥
अजादुग्धपुटैः पश्चाद्वारिणा विंशतिः खले ॥ ४२ ॥
कंपिल्लेन रसेनापि विष्णुक्रांतारसेन च ॥
कदलीकंदतोयेन तालमूलीरसेन च ॥ ४३ ॥
शतवारं पुटं देयं भवेद्व्योमरसायनम् ॥
तद्व्योमभस्मितं ताप्य भस्मताम्रस्य भस्म च ॥ ४४ ॥

शुल्बभस्म च तत्सर्वं समांशं परिकल्पयेत् ॥
भावयेत्सप्तधा निंबरसैर्लोध्ररसेन च ॥ ४५ ॥
त्रिफलायाः कदल्याश्च केतक्यामार्कवस्य च ॥
कोरकस्यापि सारेण तावद्वाराणि यत्नतः ॥ ४६ ॥
इति निष्पन्नकल्केऽस्मिंस्तत्समां त्रिफलां क्षिपेत् ॥
भस्मसूतं सिता व्योषं चित्रकं च पृथक् पृथक् ॥ ४७ ॥
मधुना गुटिकाः कार्याः शाणेन प्रमिताः खलु ॥
महाकल्क इतिख्यातो ह्यश्विभ्यां परिकीर्तितः ॥ ४८ ॥
विधिना वर्षपर्यन्तं भक्षयेन्मतिमान्नरः ॥
बलवृद्धिकरः शश्वत्सर्वरोगनिवारकः ॥ ४९ ॥
मेहानर्शांस्तथा पांडुकासश्वासहलीमकान् ॥
उपदंशं फिरंगं च कुष्ठं वापि निहन्त्यसौ ॥ ५० ॥

हे शिष्य ! अव मैं तुमको महाकल्कनामक उत्तम रसायन सुनाताहूं सो सुनो । उत्तम काली धान्याभ्रकको मूसर्लीके रसमें खरल करके एक हाण्डीमें भरदेवे और उस हांडीके ऊपर बीचमें छेदवाला शराव (ढकना) ढक देवे और किनारोंसे बन्द करदेवे फिर इस हांडीके नीचे तीक्ष्ण अग्नि जलावे । और उस ऊपरवाले छिद्रद्वारा थोडा २ करके अभ्रकसे आठगुना दूध डाले जब सब दूध जलजावे । फिर इस अभ्रकको निकालके मूसर्लीके रसमें फिर खरल करे और उसीप्रकार हांडीमें रखके आठगुना दूध जलावे ऐसेही तीनवार अग्निपर रखनाजाय और उतारकर मूसर्लीके रसमें खरल करता जाय फिर २० पुट बकरीके दूधकी देवे और कमीलाके रसकी, तथा कोयल, और केलेके कंदके रसकी, तथा मुसर्लीके रसकी सब मिलाकर १०० पुट देवे पुटप्रति पुट अग्नि देता जाय तो वह उत्तम

अभ्रक भस्म तैयार हुई । इसमें सोनामक्खीकी भस्म, तांम्रभस्म कांत-लोहभस्म, मिलाकर नीम, लोध, केलाकंद, त्रिफला, केतकी, भांगरा, सेमलके फूल, इनके रसकी एक २ भावना देकर सुखाकर पीस लेवे। फिर इसमें बराबरका त्रिफलेका चूर्ण, तथा, रससिंदूर, त्रिकुटा चित्रक, यह मिलाकर सहतसे चार २ मासेकी गोलियां बनावे इनमेंसे एक २ गोली एकवर्षपर्यंत नित्य खाय और पथ्यसे रहे । अथवा जिसतरे वैद्य उचित समझे खिलावे इस महाकल्कके सेवनसे सर्वरोगमात्र नष्ट होकर बलकी वृद्धि हो सब किस्मके प्रमेह, बवासीर, पांडु, खांसी, श्वासरोग, हलीमक, उपदंश, फिरंग, कुष्ठ, यह सब रोग नष्ट होते हैं ॥ ३९-५० ॥

दिवालमुश्क ।

नवमाषकचोलं च माषकं दलरौप्यजम् ॥
प्रवालं मौक्तिकं चैव भेदखर्परमुत्तमम् ॥ ५१ ॥
मणिं याकूतनाभं च मृगनाभिन्तथांबरम् ॥
उत्तमस्वर्णपत्राणि सार्द्धमाषप्रमाणतः ॥ ५२ ॥
काश्मीरकं लघु एला द्विमाषं च पृथक्पृथक् ॥
आमपट्टस्य चूर्णं तु टंकमात्रप्रमाणतः ॥ ५३ ॥
चंदनं शतपत्री च गोजिह्वा पत्रपुष्पकम् ॥
जातिपत्री तथा चैव शाणमात्रप्रमाणतः ॥ ५४ ॥
निस्तुषं धान्यकं चैव तुगाक्षीरी तथैव च ॥
कर्षार्धकप्रमाणेन योजयेन्मतिमान्नरः ॥ ५५ ॥
वैक्रांतमाफुकं चैव खर्परं च पृथक्समम् ॥
द्विरक्तिकोत्तरं चैव टंकद्वयप्रमाणकम् ॥ ५६ ॥

त्रिटंकं निस्तुषं शुद्धं बीजं कुलफकसंभवम् ॥
मृदुदाडिमसारं च सारं मुष्टिवदरजम् ॥ ५७ ॥
सारामृतफलाभेदं सपादयुग्ममाषकम् ॥
अर्धकुडवप्रमाणेन गंधशतपत्रीजलम् ॥ ५८ ॥
द्विभागा च सिता शुद्धा मागैकं माक्षिकं स्मृतम् ॥
संमेल्य विधिना सर्वमवलेहं च कारयेत् ॥ ५९ ॥
कस्तूरिकावलेहोयं भक्षणीयः सदा नरैः ॥
वातरोगादिशमनं बलकांतिविवर्द्धनम् ॥ ६० ॥
यथापि उत्तमा योगा ह्यस्मात्पूर्वं प्रकाशितः ॥
लोके प्रथाधुना चास्य अत अत्र उदाहृतम् ॥ ६१ ॥

दालचीनी ९ मासे, चांदीके वर्क १ मासा, अनवींधे मोती, जहरमोहराखताई, मूंगेकीजड, उत्तम याकूत, कहरवा, अंवर, कस्तूरी, सोनेके वरक, प्रत्येक डेढ २ मासा, केशर, छोटी इलायची, प्रत्येक २ मासा आवरेशमका चूर्ण ३ मासा, चंदनसफेद पिसाहुवा, गुलावके फूल, गाजुवां, गाजुवांके फूल, जवत्री प्रत्येक ४ मासे, धनियेके चावल, वंशलोचन प्रत्येक छे २ मासे, अफीम, संगय सव, प्रत्येक छेमासे २ रति, कुलफेके वीज छिले हुवे ९ मासे, सेव, अनार, ब्रीही, इन तीनोंका रुव्व सवादो २ मासे, गुलावका अर्क आधपाव वेदमुश्क आधपाव, शहद १ भाग, मिसरी २ भाग, सवको विधिपूर्वक मिलाकर अवलेह अर्थात् माजून वनावे । इसको दिवालमुश्क कहतेहं यह उचित रीतिसे सेवन करनेसे वायुके रोगोंको दूर करता है और वल तथा कांतिको वढाता है यद्यपि इससे वहुत उत्तम योग हम पहले कथन करचुकेहं परन्तु यह व्यवहारमें प्रसिद्ध है इस लिये यहांभी लिखदिया५.१-६१

गुरुरुवाच।

नवभिश्च तरंगैश्च क्लीबानां हितकाम्यया॥
सर्वं हि कथितं युक्त्या त्वया पृष्टो यथातथम्॥ ६२
ईश्वरं च गुरुं चैव आयुर्वेदरतांस्तथा॥
प्रणम्य यत्करोषि त्वं सर्वं तच्च भविष्यति॥ ६३॥

गुरु कहने लगे हे तात! जो कुछ तुमने पूछा अथवा अपनी इच्छासे मैंने युक्तिपूर्वक नौ तरंगोंमे नपुंसकोंके कल्याणके लिये समझा दिया है सो ईश्वरको और गुरुको तथा आयुर्वेदके जाननेवाले आचार्योंको प्रणाम करके जो वैद्यकसंबंधी क्रिया करेगे वह तुमारी सब शीघ्र सफल होगी ६३

एवं गुरुमुखाच्छ्रुत्वा नपुंसकामृतार्णवम्॥
प्रेम्णा साश्रुनेत्रोयं पादयोः पतति स्म तम्॥ ६४॥

इस प्रकार गुरुके मुखसे नपुंसकोंके लिये अमृतका समुद्ररूप ९ तरंगोमें यह ग्रंथ सुनकर शिष्यके नेत्रोंमें प्रेमका जल भर आया और उसी-समय श्रीगुरुमहाराजके चणरयुगलमें गिरपडा॥ ६४॥

पंचषड्नवचंद्रेऽब्दे शुक्ले भाद्रपदे शुभे॥
कुजे चैव त्रयोदश्यां ग्रंथपूर्तिः कृता मया॥ ६५।

श्रीविक्रमाब्दसे सं० १९६५ भाद्रपदशुक्लत्रयोदशी भौमवारको यह ग्रंथ बनाकर मैने पूर्ण किया॥ ६५॥

सोयं सद्भिः समाधेयः पश्यद्भिर्लोकसंस्थितिम्॥
मुखराणां त्रुटिदग्धैर्वाक्यैर्हानिर्न मे क्वचित्॥ ६६॥

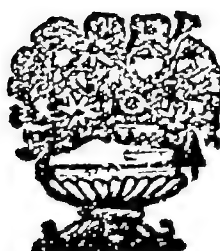
सो यदि इसमे कुछ त्रुटि रह गई हो तो श्रेष्ठ पुरुषोको उचित है वह संसारकी अवस्था देखकर और मेरी बुद्धिपर क्षमा करके समाधान करेंगे॥

और यदि निंदक लोग अपने छलयुक्त दूषणसे दग्ध हुवे वाक्योंसे मेरी निन्दाभी करें तो उनसे हानिही क्या है क्यो कि वे विचारे तो संसारमें सत्पुरुषोंमें दूषण लगानेके लिये ही पैदा हुवे हैं ॥ ६६॥

दोहा-यथाबुद्धि कल्पित करि, शिष्यगुरूसंवाद ॥
पुंस्त्वकरण क्लैब्यहरण, विरच्यो रामप्रसाद ॥ १ ॥
आयुर्वेद अध्ययन करि, सत् शास्तनको मंथ॥
भेट जगतहितकर यह, कल्प कियो सद्ग्रंथ ॥ २ ॥

श्रीटकसालनिवासिवैद्यपचाननपंडितरामप्रसादोपाध्यायकृतो
नपुसकामृतार्णवः समाप्तः ॥





पुस्तकमिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई

वैद्यकग्रंथाः ।

नाम.	की० रु०
सुश्रुतसंहिता--सान्वयसटिप्पण सपरिशिष्ट भाषाटीका समेत - सूत्रस्थान, निदानशारीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्प-स्थान, उत्तरतंत्र, संपूर्ण पंडित राजवैद्य मुरलीधरजीकृत भाषाटीका सहित जिसमें संपूर्णरोगोंका निदान लक्षण और औषधोंके प्रचार वा प्रत्येक रोगपर क्वाथ, चूर्ण, रस, घी, और आदिसे अच्छीप्रकारसे चिकित्सा वर्णित है इस ग्रंथकी योग्यता संपूर्ण भारतवर्षमे प्रसिद्धहै	१२)
,, तथा उपरोक्त अलकारों समेत सूत्रस्थान प्रथमभाग	३)
,, ,, ,, निदान शारीरस्थान द्वितीयभाग	२॥)
,, ,, ,, चिकित्सा व कल्पस्थान तृतीयभाग	३॥)
,, ,, ,, उत्तरतंत्र चतुर्थभाग	३॥)
,, ,, ,, केवलशारीरस्थान ...	१)
चरकसंहिता-- पं मिहिरचंद्रकृत भाषाटीका समेत सूत्र निदान शारीर चिकित्सक, कल्प और सिद्धिस्थानादिमे उपरोक्त विषयानुसार वर्णितहै	८)
हारीतसंहिता--मूल पंडित रविदत्तकृत भाषाटीका सहित और राजवैद्य पं. मुरलीधर संशोधित इसके छः स्थानोंमे संपूर्ण पथ्यधान्यादिवर्ग और औषधीके गुणदोष और रोगोंकी उत्पत्ति संप्राप्तिलक्षण निदान चिकित्सादिका वर्णनहै ...	३)
भावप्रकाश--मूल और लालाशालिग्रामकृत भाषाटीका तीनखंडोंमे भावमिश्र संगृहीत, कर्पूरादिवर्ग गुडूच्यादिवर्ग पुष्पवर्ग वटादिवर्ग आम्रादि फलवर्ग शाकवर्ग मांसवर्ग	

नाम.	की० रु०
जातिभेदसे पशु पक्षियोंके मांसके गुण, कृतान्नवर्ग, वारिवर्ग. दुग्धवर्ग, नवनीतवर्ग, घृतवर्ग. मूत्रवर्ग, तैलवर्ग, सन्धानवर्ग, मधुवर्ग, इक्षुवर्ग, अनेकार्थ, नामवर्ग, धातुनाम, शोधन, मारणविधि, पुटप्रकार, रत्नोंकी शोधनमार णविधि. विष और उपविषोंकी शोधनविधि संपूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति संप्राप्ति निदान चिकित्सा इत्यादि वर्णित है	७)
अष्टांगहृदय--(वाग्भट) वाग्भटविरचित--पं०रविदत्तकृत भाषा टीकासहित और पंडितज्वालाप्रसाद मिश्र संशोधित जिसमे सूत्रस्थान, शारीरस्थान, निदानस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, उत्तरस्थान, इत्यादिमें संपूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति निदान लक्षण और क्वाथ चूर्ण रस घी तैल आदिसे अच्छीप्रकार चिकित्सा वर्णित है	८)
अष्टांगहृदयवाग्भट--मूल मोटा अक्षर	२॥)
शार्ङ्गधरसंहिता--मूल और पं०दत्तरामचौवेकृत भाषाटीकासमेत चरक वाग्भट सुश्रुतादिसे संगृहीत-इस ग्रंथमें रोगोंकी उत्पति लक्षण प्रतीकार सबप्रकारकी धातुओंका मारणशोधन आदि प्रयोग बहुत अजमाये हुए लिखेहैं और रसादिके सेवनकी विधि भी संयुक्त है ग्लेज	२॥)
,, तथा रफ	२)
वैद्यरहस्य--मूल और पंडित दत्तराम चौवे कृत भाषाटीका समेत संपूर्ण रोगोकी चिकित्सा भलेप्रकार वर्णितहै ...	२)
बृहन्निघण्टुरत्नाकर--मूल पंडित दत्तराम चौवेकृत संकलित और भाषाटीकासहित जिसमें शारीराध्याय यंत्राध्याय शस्त्रविचारणाध्याय योग्य सूत्राध्याय अष्टविधशस्त्रकर्माध्याय तथा दूसराभाग क्षारपाक विधि अग्निकर्म दोषधातुमलवृद्धि	

नाम.	की० रु०
दोषवर्णन ऋतुचर्या दिनचर्या रात्रिचर्या नाडीदर्पणादि वर्णन, प्रथम भाग	३)
,, ,, तथा द्वितीयभाग	३॥)
,, तथा तृतीयभाग(विविधरोगोंकी चिकित्सा संग्रह) ..	३॥)
,, ,, तथा चौथाभाग (चिकित्साखंड) ...	२॥)
,, ,, तथा पंचमभाग (रोगोंका कर्मविपाक) . .	९॥)
,, ,, तथा षष्ठभाग (रोगाणां चिकित्साभागः) .	४॥)
,, ,, तथा सप्तम अष्टमभाग लाला शालग्रामसंकलित अर्थात् "शालग्रामनिघंटुभूषण" अनेकदेशदेशांतरीय संस्कृत हिन्दी बंगला, मराठी, गौर्जरी, द्राविडी तैलंगी, औत्कली, इंग्लिश, लैटिन्, फारसी, अरबी भाषाओंमें सर्व औषधोंके नाम और गुणोंका वर्णन औषधियोंके चित्रोंसमेत .	८)
,, ,, तथा उपरोक्त अलंकार समेत आठों भाग संपूर्ण	३०)
बृहन्निघंटुरत्नाकरांतर्गत-चिकित्साखंड भाषाटीकासहित पंडित दत्तरामप्रणीत संपूर्ण रोगोंकी औषधीका अपूर्व संग्रह ..	४)
चर्य्याचंद्रोदय-भाषाटीका व्यंजन बनानेकी क्रिया है	१॥)
योगतरंगिणी-श्रीमत त्रिमल्लभट्ट विरचित और दत्तरामचौबेकृत भाषाटीका सहित यह बडा उपकारी ग्रंथहै अच्छे २ प्रयोगदरशायेहैं	२)
योगचिन्तामणि-भाषाटीकासहित दत्तरामचौबे कृत इसमें पाक तैल चूर्ण गुटिका घृत इत्यादि अनुभव सिद्ध प्रयोग लिखेगयेहैं ग्लेज	१।=)
,, ,, तथा रफकागज	१।)
बालतंत्र-कल्याण वैद्यरचित नंदकुमारकृत भाषाटीका इसमें षोडशवंध्या साधारण वंध्या औषध पुरुष वीर्यवृद्धि गर्भाधान रुद्रस्नान मास गृहीत बालरक्षा वर्षगृहीतबालरक्षा	

नाम.	की० रु०
दिनमास वर्षगृहीत बालरक्षा साधारण बालग्रहरक्षा ज्वरहरणोपाय साधारणरोग चिकित्सा नानारोगोंके अनुभवी प्रयोग इत्यादि वर्णित हैं	१)
वंगसेन–लालाशालिग्रामकृत भाषाटीका सहित–वैद्यकमें इस ग्रंथसे बढकर दूसरा ग्रंथ नही है. इस एकही ग्रंथसे वैद्यराज हो सकता है।	८)
रसरत्नसमुच्चय–गुर्जरभाषाटीकासमेत इसमें पारद, धातु, उपधातुओंके शोधनविधि, नानाप्रकारके रस, भस्म, औषधोंके सिद्धयोग इत्यादि वर्णितहैं. यह रसभस्म आदिकी सिद्धिका अद्वितीय ग्रन्थ है	४)
रसरत्नसमुच्चय–मूलमात्र	२)
आयुर्वेदसुषेणसंहिता--भाषाटीका इसमें सामान्य औषधीवर्ग धान्यवर्ग पयवर्ग इत्यादिकके गुणदोष वर्णित हैं	।।।=)
वैद्यक परिभाषाप्रदीप–भाषाटीकासहित (वैद्योपयोगी औषधियोंकी योजनामें तौल माप और बदला अर्थात् प्रतिनिधि तथा वर्ग चूर्ण आदिकोंकी योजनाका वर्णन)	।।।)
वैद्यरत्न--पं. ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकासमेत सर्वरोगोंकी चिकित्सा उत्तम प्रकारसे वर्णन की गई है	।।।=)
वैद्यवल्लभ–हस्तीरुचिकृतभाषाटीकासमेत अनुभवीउत्तमचिकित्सा	।=)
द्रव्यगुणशतक–भाषाटीकासमेत औषधिद्रव्योंका गुणदोष वर्णन	।=)
द्रव्यगुण -बडा- पं. ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भाषाटीकासहित	।।।=)
वीरसिंहावलोकन--ज्योतिःशास्त्रादिकर्मविपाक चिकित्सावर्णन	१।।।)
लोलिम्बराजकृत--वैद्यजीवन संस्कृत और भाषाटीकासहित शृंगाररसप्राधान्यरोगोंकी चिकित्सा अत्यन्तउपयोगी वैद्यकका ग्रंथ है .	१)
कामकुतूहल--भाषाटीकासमेत शरीरकी क्षीणतादिमें अपूर्व दवाईका संग्रह	।)

नाम.	की० रु०
कुमारतत्र–भापाटीकासमेत "रावणकृत" वालकोंकी अपूर्व दवाई वर्णनहै	॥)
कामरत्न–योगेश्वर नित्यनाथ प्रणीत और पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्रकृत भापाटीकासहित इस ग्रंथमें रोगोंकी औपधि तथा वाजीकरण औपधि अनुभूत है और वशीकरणादि प्रयोगभी हैं	१॥)
चालवोध पाकावली–पाकरस वर्णन है	≡)
कूटमुद्गर–भापाटीका ≡) तथा सटीक	≡)
वोपदेवशतक–भापाटीका इसमें वैद्यक काथादिकका वर्णनहै ...	।≈)
अर्कप्रकाश–भापाटीका "रावणकृत" इसमे नानाप्रकारके यंत्रोंसे औपधियोंका अर्क खींचना और गुण वर्णन किया गयाहै	१)
ज्ञानभैपज्यमंजरी–भापाटीकासमेत इसमें प्रत्येकरोगोंपर एक २ औपधि वेदान्तमतानुसार वर्णन कियाहै	≡)
महामारीविवेचन–भापाटीका जिसमें हैजादि रोगोंका उपद्रव किसप्रकारसे होताहै वह शास्त्रानुसार वर्णित है	।)
योगशतकम्–भापाटीका सहित सौ श्लोकोंमे औपधिका काथादि वर्णन रोगोंपर किया है	।)
चिकित्साधातुसार–भापामें धातुफूंकनेका उत्तमोत्तम प्रयोगहै	।)
माधवनिदान–मूल और पं. दत्तरामचौवेकृत भापाटीकासहित इसमें संपूर्ण रोगोंका कारण उत्पत्ति लक्षण संप्राप्ति इत्यादि वर्णनहै कागज ग्लेज	२)
,, ,, ,, तथा रफ	१॥)
हंसराजनिदान–भापाटीकासहित इसमें रोगोंकी पहिचान नाडीपरीक्षा साध्यअसाध्यका ज्ञान इत्यादि अनेक विपय वर्णित हैं	१)

नाम.	की० रु०
अंजननिदान-भाषाटीका सुगमतासे रोगोंका निदान लिखाहै	।≡
नाडीदर्पण-भाषाटीकासमेत नाडीदेखनेके प्रकार वर्णित हैं ...	।=)
अनुपानदर्पण-भा टी. इसमें रसधातु बनानेकी क्रिया और अनुपानदेना और रोगोंपर औषधोंमे क्या २ अनुपान देना यह सब वर्णित हैं	।।।)
नाडीविज्ञान-भाषाटीकासमेत	=)
कालज्ञान-भाषाटीका यह ग्रंथ संपूर्ण अभ्यास करनेसे भूत भविष्य वर्तमानका ज्ञान होताहै	≡)
पाकप्रदीप-वाजीकरण भाषाटीका नामहीसे गुण जानलो	।≡)
शालिग्रामौषधशब्दसागर-अर्थात् आयुर्वेदीय औषधिकोश ...	२)
पथ्यापथ्य--भाषाटीका सहित पं० केशवप्रसादमिश्र संगृहीत जिसमें संपूर्ण रोगोंपर पथ्यापथ्य करना और अपथ्यादिकका निषेध इत्यादि वर्णितहै भिषग् गणोंको अवश्य लेना उचित है	।।।)
रसरत्नाकर--सिद्धनाथ प्रणीत--समस्त रसग्रंथोंमें शिरोभूषण--लाला शालिग्रामकृत भाषाटीका सहित--इस ग्रंथमें पारा गंधक हरताल तांबा रूपा हीरा वैक्रांत सफेद अभ्रक मनशील खपरिया नीलाथोथा शिलाजीतादि रसोंकी शोधनविधि तथा उनके गुण और प्रत्येक रोगोंकी चिकित्साका वर्णनहै ग्रंथ बहुतही उत्तम वैद्योपयोगीहै ...	५)
रसमंजरी--भाषाटीकासहित सर्वप्रकारके रस बनाने और धातु फूंकनेकी क्रिया	।।।=)
शुभसंतति योगप्रकाश-भा टी. समेत-नामहीसे जानलो	१)
तिब्बअकबर--हकीम अकबर अलीखां लिखित देवीप्रसादकृत हिन्दीभाषामें अनुवादित छब्बीस अध्यायमें शिरसे पैरतक स्त्री पुरुष लड़के आदिका संपूर्ण रोगोंका उत्पत्तिनिदान	